HM-09

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

Practical

प्रायोगिक

HM-09

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

संरक्षक
प्रो. अशोक शर्मा
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अध्यक्ष
प्रो. एल.आर. गुर्जर
निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक एवं सदस्य

संयोजक
प्रो.(डॉ.) एच.बी.नन्दवाना
निदेशक,सतत शिक्षा
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

समन्वयक
डॉ. क्षमता चौधरी
सहायक आचार्य, अंग्रेजी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

प्रो. नीलिमा वर्मा
आचार्य,
महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भोपाल(म. प्र.)

प्रो.शशि जैन
आचार्य,
एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर,

प्रो. सुमन सिंह
आचार्य,
एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर

श्रीमती अंजली सक्सेना
व्याख्याता ,
माँ भारती पी.जी.कॉलेज,कोटा

पाठ्य लेखन
समन्वयक
डॉ. क्षमता चौधरी
सहायक आचार्य, अंग्रेजी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सम्पादक (भाषा)
डॉ. मीता शर्मा
सहायक आचार्य, हिन्दी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम लेखन

1 **प्रो. नीलिमा वर्मा**
आचार्य, महारानी लक्ष्मीबाई
स्नातकोत्तरमहाविद्यालय,आचार्य,
भोपाल(म. प्र.)

2 **डॉ. बिंदु चतुर्वेदी**
व्याख्याता,
जे.डी.बी. कॉलेज, कोटा

3 **सुश्री मीनाक्षी यादव**
व्याख्याता,
एस.के. टी.टी. कॉलेज, कोटा

4 **सुश्री रेनू शर्मा**
व्याख्याता,
शिव ज्योति कॉलेज, कोटा

5 **श्रीमती लता हुड्डा**
शोद्यार्थी, (जे.आर.एफ)
गृह विज्ञान
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर

6 **श्रीमती अंजली सक्सेना**
व्याख्याता ,
माँ भारती पी.जी.कॉलेज,कोटा

7 **सुश्री वीनू यादव**
व्याख्याता (अतिथि संकाय)
डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. अशोक शर्मा
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. एल.आर. गुर्जर
निदेशक)अकादमिक(
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,
कोटा

प्रो. करण सिंह
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. सुबोध कुमार
अतिरिक्त निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,
कोटा

उत्पादन 2016

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि.वि., कोटा, की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व.म.खु.वि.वि., कोटा के लिए कुलसचिव, व.म.खु.वि.वि., कोटा (राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	कक्ष निर्माण योजना	1
2	संचार सामग्री	15
3	सजावट	29
4	धातु की सफाई एंव पालिश	37
5	रंगोली व अल्पना	52
6	पुष्प सज्जा	60
7	नाटकीय रूपांतर	74
8	दीवार सज्जा	83
9	समय व शक्ति की बचत	96
10	फालतू सामान का उपयोग	108

इकाई-1

कक्ष निर्माण योजना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 कक्ष निर्माण की योजना के पद

1.3 अभ्यास प्रश्न

1.4 संदर्भ ग्रन्थ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र गृह निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र गृह निर्माण की योजना में महत्वपूर्ण वस्तु की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

1.1 प्रस्तावना

व्यक्ति को विभिन्न घरेलू क्रियाओं को सम्पन्न करने एवं पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एक *आवास* (House) की आवश्यकता होती है। मकान विश्राम एवं सुरक्षा के लिए आवश्यक है। परन्तु मकान कैसे बनवाना चाहिए इसके लिए एक निश्चित योजना तैयार करना जरूरी है। बिना अच्छी तरह सोचे-समझे व योजना बनाये यदि मकान बनवाने का काम प्रारम्भ कर दिया जाये तो अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। मकान में बहुत सारे दोष एवं अवगुण रह जाते है। अत: एक आदर्श मकान का निर्माण नहीं हो पाता हैं। मकान परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है और न ही पारिवारिक रूचियों व अपेक्षाओं के अनुकूल होता है। वैसे मकान में रहने से परिवार को पूर्ण मानसिक संतुष्टि एवं तृप्ति नहीं मिलती है जो उनके "शारीरिक एवं मानसिक विकास में बाधक सिद्ध होती है।

भवन निर्माण के भी अपने कुछ सिद्धान्त होते है जिनकी पालना कर सुन्दर, सुदृढ़, मजबूत, कलात्मक एवं सभी साधनों से परिपूरित भवन का निर्माण किया जा सकता है। परन्तु ये सिद्धान्त विज्ञान के नियमों की भाँति कठोर नहीं होते। हाँ, इन्हे मस्तिष्क में रखकर गृह प्रबन्धक एक अच्छा एवं उत्तम भवन का निर्माण कर सकता है।

आर.एस. देषपाण्डे के "शब्दों में- *''भवन आयोजना के सन्दर्भ में ऐसे कोई भी नियम नहीं बनाये जा सकते जो सर्वत्र लागू हों''* इसका प्रमुख कारण है भिन्न-भिन्न प्रदेश एवं वहाँ की भौगोलिक परिस्थियाँ।

"No very hard and fast rules can be laid down for general application."

-R.S. Despandey

गृह योजना बनाते समय परिवार की आय एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। परिवार अपनी आर्थिक स्थिति के अनुकूल ही भवन निर्माण करवाये तो बेहतर है क्योंकि उसे अन्य पारिवारिक क्रियाओं एवं रीति-रिवाजों को सम्पन्न करने में (जैसे- बच्चों की शिक्षा, "शादी-विवाह, मुंडन) अधिक आर्थिक परेषानी नहीं होगी। *मितव्ययिता* (Economy) को भी ध्यान में रखकर भी सुन्दर, मजबूत एवं कलात्मक भवन का निर्माण किया जा सकता है। मजबूत एवं ठोस मकान अधिक दिनों तक सुाक्षित रहता है। यद्यपि स्वयं के मकान निर्माण करने में ये काफी मँहगे पड़ते है परन्तु किराये के मकान की अपेक्षा काफी सस्ते पड़ते है। क्योंकि मकान एवं जमीन एक अचल सम्पति होती है और एक बार बन जाने के बाद पीढ़ियों तक चलती है । इसलिए भवन बनवाते समय मजबूती पर ध्यान देना जरूरी है।

मकान बनवाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत सम्पर्क, विज्ञापन, पत्र-पत्रिकायें, टेलीविजन, अनुभवी व्यक्ति से सम्पर्क आदि भी सहायक होते है। मकान का नक्षा किसी कुशल व योग्य आर्किटेक्ट से बनवाना चाहिए। वास्तुविदों की सलाह लेनी चाहिए। वास्तुविद को नक्षा दिखा देना चाहिए ताकि आवश्यकता एवं

परिस्थितिनुकूल उसमें आवश्यक परिवर्तन किया जा सकें। वास्तुविद के अनुसार भवन निर्माण से मानसिक तुष्टि तो मिलती ही है साथ ही उसमें रहने वाले लोगों का उत्तम "शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। कैसा मकान अधिक "शुभ फल देने वाला होता है। इसकी जानकारी वो भवन निर्माता को दे देते है। "शयनकक्ष, बैठककक्ष, "शौचालय, रसोईघर, लॉबी, मुख्यद्वार, बरामदा, खिड़कियाँ, दरवाजे, सीढ़ियाँ, पानी की टंकी, अध्ययन कक्ष आदि किस दिशा में बनाया जाना अधिक फलदायीं होगा इसकी जानकारी वास्तुविद से प्राप्त कर लेनी चाहिए तथा उसी के मुताबिक भवन निर्माण किये जाने का यथासम्भव प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा मकान अधिक फलदायी होता है। परिवार के सदस्य सुखी एवं सम्पन्न रहते है तथा विकास के उत्तरोत्तर सीढ़ियों को चढ़ पाने में सफल होते है। परन्तु यह भी सम्भव नही है कि छोटे से (30 x 60 yard के) प्लॉट में भवन निर्माण वास्तुविद के अनुसार बनाया जाएँ। कहीं-न-कहीं भवन निर्माता को समझौता करना ही पड़ता है।

एक आदर्श मकान की योजना बनाते समय निम्नांकित सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए- *(1) लागत,/आर्थिक व्यय (Cost/Economic Expenditure), (2) अभिव्यंजकता (Expressiveness), (3) कार्यात्मकता (Functionalism), (4) सुन्दरता (Beauty), (5) एकान्तता/गोपनीयता (Privacy), (6) परिवर्तनशीलता (Flexibility), (7) वृहदता (Roominess), (8) कमरों का समूहीकरण (Grouping of Rooms), (9) फर्नीचर व्यवस्था (Furniture Arrangement), (10) आने-जाने का रास्ता (Traffic Lanes)*

(1) लागत/आर्थिक व्यय (Cost/Economic Expenditure) - भवन निर्माण में धन का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना धन के भवन निर्माण की कल्पना तक नही की जा सकती। मकान बनवाने में कितना खर्च आयेगा इसकी जानकारी भवन निर्माता को होनी चाहिए । अपनी आर्थिक स्थिति पर विचार करके सामथ्र्य के अनुकूल ही भवन निर्माण पर धन व्यय करना चाहिए। बिना सोचे-समझे यदि मकान बनवाने में अधिक खर्च कर दिया जाता है तब परिवार आर्थिक तंगी से हो जाता है। बालकों की शिक्षा-

दीक्षा, “शादी-विवाह, सामाजिक रीति-रिवाजों आदि कार्यों को सम्पन्न करने में आर्थिक तंगी झेलनी पड़ती है। साथ ही गृह योजना को भी कल्पना एवं नक्षानुसार मूर्त रूप प्रदान नही किया जा सकता है।

मकान बनाने वाले अनुभवी व्यक्तियों के अनुसार मकान निर्माण पर किसी व्यक्ति के जीवन भर की आय के चौथाई भाग से अधिक व्यय नही करना चाहिए तथा भवन निर्माण करते समय कुल लागत का 20-30% धनराशी उसके पास पगद होनी चाहिए। बड़े “शहरों में मध्यम प्रकार के मकान बनाने का व्यय 400-450 रुपये प्रति वर्ग फीट आता है। यदि कोई व्यक्ति 500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का निर्माण करवाना चाहता है तो उसे 2 लाख से 3 लाख 80 हजार रुपये तक का व्यय आता है। अत: गृह योजना बनाते समय इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त को मस्तिष्क में अवष्य ही रखना चाहिए।

(2) अभिव्यंजकता (Expressiveness) - प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग व्यक्तित्व होता है। उसके अपने काम करने एवं सोचने के ढंग होते है। इसलिए मकान की डिजाइन बनाने से पहले परिवार की आवश्यकताओं, विचारों, रुचियों एवं इच्छाओं को जान लेना जरूरी है। उनके साथ मिल-बैठकर, विचार-विमर्ष करके भवन निर्माण की निश्चित योजना एवं रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। तत्पष्चात् उसके आधार पर मकान की योजना बनायी जानी चाहिए। इस प्रकार मकान की योजना ऐसी हो जिसमें एक आदर्श मकान की समस्त विशेषताएँ, यथा-उचित संवातन, रोशनी/बिजली व्यवस्था, दिशा विन्यास, वृहदता, मितव्ययिता, सुन्दरता, समूहीकरण (Grouping) आदि का समावेश हो सके। उसमें रहने वाले लोगों को अपनी कला प्रदर्शन करने का मौका मिले।

(3) कार्यात्मकता (Functionalism) - मकान का मुख्य काम है-परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना। पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मकान में विभिन्न क्रियाएँ की जाती है, वस्त्र पहनना, भोजन बनाना, भोजन परोसना, भोजन खाना, स्नान करना, वस्त्र धोना, विश्राम करना, अध्ययन करना, कलाओं को निखारना आदि। अत: भवन निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि पारिवारिक आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों की पूर्ति सहजता एवं

सरलता से हो सके। गोपनीयता/एकान्तता प्रभावित नही हो ताकि परिवार के सदस्य निबार्ध रूप से बेरोक-टोक अपना-अपना काम कर सकें।

परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के अनुरूप गृह निर्माण करना चाहिए। व्यवसाय, परिवार के सदस्यों की संख्या, परिवार के प्रकार आदि कारक भवन निर्माण को प्रभावित करते है। प्रत्येक परिवार को रहने के लिए एक जैसे मकान की जरूरत नही पड़ती है। उदाहरणार्थ- एक डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, बढ़ई, शिक्षक, धोबी, किसान, मजदूर आदि की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती है क्योंकि उनके कार्य भिन्न-भिन्न होते है। एक डॉक्टर को रोगी देखने एवं शिक्षक को पढ़ाने के लिए एक पृथ्क कमरें की जरूरत होती है। एक किसान के लिए एक बड़े कमरे की जरूरत होती है जिसमें कम-से-कम आलमारियाँ हों ताकि वह कृषि सम्बन्धी कार्य एवं अनाजों का भण्डारण उचित प्रकार से कर पाये। इसी तरह लुहार, सुनार, दुकानदार आदि को भी अपनी आवश्यकतानुरूप मकान की जरूरत पड़ती है।

परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुरूप मकान की योजना तैयार करनी चाहिए। बड़ा एवं संयुक्त परिवार के लिए बड़े मकान की जरूरत होती है। छोटे बच्चों को खेलने के लिए बड़ा कमरा एवं खुला स्थान होना चाहिए। आयु एवं आवश्यकताओं में परिवर्तन आ जाने से गृह योजना में भी परिवर्तन करने की गुंजाइश होनी चाहिए क्योंकि समय परिवर्तनशील है तथा समय परिवर्तन के साथ व्यक्ति के रहन-सहन का स्तर एवं आवश्यकताएँ बदलती रहती है।

(4) सुन्दरता (Beauty) - मकान न केवल सुरक्षा एवं पारिवारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनवाया जाना महत्वपूर्ण है बल्कि इसके निर्माण में सुन्दरता, आकर्षण, नैसकर्गकता एवं कलात्मकता का भी यथोचित स्थान देना आवश्यक है। मकान सुन्दर एवं कलात्मक बने इसका ध्यान रखना जरूरी है। परन्तु यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि सुन्दरता की चाह में मकान की उपयोगिता कम हो जाए। मकान की डिजाइन इस तरह की होनी चाहिए जिसकी साफ-सफाई सरलता एवं आसानी से की जा सके।

(5) एकान्तता/गोपनीयता (Privacy) - यद्यपि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहना अधिक पसन्द करता है। परन्तु दिन भर काम करने के बाद कुछ समय वह एकान्त में व्यतीत करना चाहता है ताकि वह अपनी थकान को मिटा सके, विश्राम कर सके एवं चुस्ती-फुर्ती प्राप्त करके लक्ष्यों की प्राप्ती हेतु भावी योजना तैयार कर सके। एकान्तता से "शान्ति, मानसिक तृप्ति एवं आन्तरिक "शक्ति मिलती है। चिन्तन करने, अध्ययन करने, सोचने, पूजा-पाठ करने आदि के लिए एकान्तता आवश्यक है।

अत: गृह निर्माण में एकान्तता की व्यवस्था करना बेहद जरूरी है ताकि परिवार के सभी सदस्यों को आवश्यक एकान्तता प्राप्त हो सके।

एकान्तता दो प्रकार की होती है-

1.बाह्य एकान्तता (External Privacy) - बाह्य एकान्तता से आशय है- " वह आवास जो

हमें बाह्य जगत से अलग रखें तथा जब चाहें तब बाह्य जगत से घुल-मिल भी सकें।" पार्क, बगीचा, पास की चौड़ी सड़क, गली आदि हमारी एकान्तता को भंग करते है। अत: घर के चारों और दीवार या बाड़ बनाकर बाह्य जगत से एकान्तता प्राप्त की जा सकती है। ऐसा करने से "शोरगुल कम हो जाता है तथा कोई भी अनाधिकृत व्यक्ति मकान में आसानी से प्रवेश नहीं कर पाता है। बाहरी दरवाजे, खिड़कियाँ आदि भी बाह्य जगत से एकान्तता दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

2. आन्तरिक एकान्तता (Internal Privacy) - आन्तरिक एकान्तता से तात्पर्य है- विभिन्न

कमरों को परस्पर तथा प्रवेश द्वार से अलग करना। कमरों की व्यवस्था में समूहीकरण होना अत्यावष्यक है। इसके लिए अधिक सावधानीपूर्वक आयोजन किया जाना चाहिए। आन्तरिक एकान्तता निम्न प्रकार से प्राप्त की जा सकती है-

(i) एक लॉबी या गलियारे का प्रावधान करके (By Making Lobby or Vrandah) - मकान में एक लॉबी या गलियारा बना देने से प्रत्येक

कक्ष में आने जाने के लिए स्वतंत्र मार्ग मिल जाता है। अत: प्रत्येक पक्ष की एकान्तता बनी रहती है और एक कमरें से दूसरे कमरे में जाने के लिए कमरे के अन्दर से न जाकर गैलेरी या बरामदे में से आ जा सकते है।

(ii) उचित समूहीकरण (Proper Grouping) - कमरों के समूहीकरण से तात्पर्य है- *"विभिन्न कमरों का पारस्परिक सम्बन्ध।"* कमरों को उचित ढंग से परस्पर सम्बन्धित करने से एकान्तता प्राप्त होती है। कमरों का समूहीकरण इस प्रकार से किया जाना चाहिए एवं कि प्रत्येक भाग आपस में परस्पर इस प्रकार से जुड़े रहे कि कार्य करने में सुगमता एवं आसानी हो परन्तु जब चाहें तब एकान्तता भी उपलब्ध हो। कमरों को परस्पर सम्बन्धित करते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसा न हो कि समूहीकरण के कारण एकान्तता ही नष्ट हो जाए । उदाहराणार्थ- रसोईघर के लिए बैठक से जाना पड़े तो यह गलत एवं असुविधाजनक है। इससे एकान्तता भंग होती है। इसी तरह "शयनकक्ष हेतु अध्ययन कक्ष से होकर गुजरना पड़े तो यह भी गलत है। "शयनकक्ष एवं अध्ययन कक्ष में एकान्तता अनिवार्य है।

आज के बदलते फैशन में, रसोईघर मकान के अग्र भाग एवं बैठक कक्ष के बगल में बनायी जाने लगी है क्योंकि गृहिणी का अधिकांश समय रसोई कार्यों में व्यतीत होता है। अत: उसे रसोईघर से ही आन्तुकों के बारे में जानकारी मिल जाती है।

(iii) दरवाजे की सही स्थिति (Proper Positions of Doors) - मकान में दरवाजे की सही स्थिति रखने से एकान्तता बनी रहती है। यदि दरवाजा एक छोटे कमरे की दीवार के मध्य में स्थित है तो उसे खोलने पर बाहर से ही कमरे का सारा दृश्य दिखाई दे जाता है। परिणामत: एकान्तता भंग हो जाती है। परन्तु यदि वह लम्बी दीवार के एक छोर पर स्थित है तो कमरें का केवल कुछ भाग ही दिख पाता है। अत: यह स्थिति अधिक सुविधाजनक है क्योंकि इससे एकान्तता भंग नहीं होती है और व्यक्ति कमरें में "शांतिपूर्वक काम कर सकता है।

एकान्तता की दृष्टि से एक पल्ले का दरवाजा ज्यादा उपयोगी है। परन्तु उसके खुलने में अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। इसलिए एक पल्ला

(पाट) का दरवाजा बड़ी दीवार के साथ वाले कोने में लगाना उपयोगी रहता है। दो पल्ले के दरवाजे एकान्तता की दृष्टि से कम उपयोगी है। आजकल एक पल्ले के दरवाजे का उपयोग अधिक होने लगा है। दरवाजे भीतर की और खुलने चाहिए। ऐसा करने से एकान्तता बनी रहती है।

(iv) खिड़कियों की सही स्थिति (Proper Position of Windows) - एकान्तता को बनायें रखने में खिड़कियों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। कमरों में मध्य की दीवार पर खिड़कियाँ नहीं होनी चाहिए। इससे एकान्तता नष्ट होती है। स्नानगृह में खिड़कियों की स्थिति सामान्य से ऊँची होनी चाहिए।

(v) लकड़ी के हल्के पार्टीशन या पर्दा लगाकर (By Making Partition of Wood or by Using Curtains) - वे कमरें जो काफी बड़े है उनमें लकड़ी का पार्टीशन या पर्दा लगाकर भी कुछ सीमा तक एकान्तता प्राप्त की जा सकती है।

(6) परिवर्तनशीलता (Flexibility) - प्रत्येक परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सदैव एक-सी नहीं रहती। इनमें परिवर्तन आता रहता है। परिवर्तन प्रकृति का "शाश्वत सत्य है जिसे हम सभी को स्वीकारना पड़ता है। कल तक जो एक छोटा-सा बालक था, माँ की गोदी से चिपक कर सोता था, पिता की अँगुली थामकर चलता था । समय के साथ वहीं बालक युवा बन जाता है और अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने लगता है। परिवार बढ़ने लगता है। अत: परिवार के क्रियाकलापों में वृद्धि होने लगती हैं। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न कक्षों में परिवर्तनशीलता एवं नमनीयता अपनायी जाए ताकि उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सके। इसके लिए "शयनकक्ष में अध्ययन कक्ष का समावेश, बैठक कक्ष में किशोरों के लिए "शयनकक्ष का समावेश, अतिथि कक्ष की आवश्यकता है। जन्मदिन, पार्टी, "शादी-विवाह अथवा अन्य उत्सवों में भी यह परिवर्तनशीलता लाभदायक होती है।

(7) वृहदता (Roominess) - वृहदता का अर्थ है- "*मकान में उपलब्ध स्थान का सर्वाधिक उपयोग*" (Maximum Utility of Available Place in the House)

साने के "शब्दों में- "*कमरे में कम-से-कम स्थान का अधिकतम उपयोग करने से जो प्रभाव उत्पन्न होता है उसे वृहदता कहते है।*"

"Roominess refers to the effect produced by deriving the maximum benefits from the minimum dimensions of a room,"

वृहदता का उद्धेश्य होता है- "*जगह की अधिकाधिक बचत कर उसका उपयोग करना।*" साथ ही यह आभास भी प्रदान करना कि जगह कम नहीं है। कमरें छोटे नही हैं। घर में स्थान का खुलापन होने से कमरा साफ-सुथरा एवं बड़ा दिखता है। इसके अन्तर्गत मकान में उपलब्ध प्रत्येक कमरे या गैलेरी का अधिकाधिक उपयोग होता है। एक कुशल वास्तुविद् इसे निम्न तरीकों से सम्भव बनाने में सक्षम हो जाता है -

1. दीवारों में आलमारियाँ, वार्डरोब, कपबोर्ड, टांड आदि देकर
2. कमरे आयाताकार बनाकर। एक आयाताकार कमरे से उसी क्षेत्रफल का एक चौकोर कमरा छोटा प्रतीत होता है। अत: कमरा आयाताकार रखना चाहिए। साथ ही कमरे की चौड़ाई एवं लम्बाई का अनुपात 1:1.2 या 1.5 होनी चाहिए। उदाहरणार्थ- यदि कमरे की चौड़ाई 10 फीट है तो उसकी लम्बाई 12 फीट या 15 फीट होनी चाहिए। परन्तु इससे अधिक लम्बाई का कमरा बेढंगा एवं भद्दा दिखेगा।
3. यदि दीवारें, फर्ष एवं छत संलग्न है तो भी वृहदता का आभास होता है। दीवार से यदि कटाव है अर्थात् दीवार यदि सीधी जाकर दूसरी दीवार से नही मिलता तो *निरन्तता* **(Continuity)** भंग हो जाती है और यह छोटी दिखने लगती है।

1. छोटे कमरों की छत की ऊँचाई बहुत अधिक नही होनी चाहिए। उदाहरणार्थ- बाथरूम की छत को कम ऊँचाई का बनाकर इसके ऊपर दुछती बनायी जा सकती है ताकि अधिकतम सामान उसमें रखा जा सके।
2. दरवाजे, खिड़कियाँ एवं रोषनदान की सही स्थिति होनी चाहिए। इससे कमरे में पर्याप्त रोशनी एवं हवा पहुँचती है तथा कमरा बड़ा दिखाई देता है।

3. सीढ़ी के नीचे वाले भाग में स्नानघर या आलमारी बनाकर जगह का उपयोग किया जा सकता है।
4. कमरों की दीवारों पर हल्के ठंडे रंगों का प्रयोग करने से कमरा बड़ा दिखता है।
5. बरामदे, गैलेरी या लॉबी में दर्पण का प्रयोग करने से कमरा बड़ा दिखता है। इससे कमरे के आकार में वृहदता का आभास होता है।

(8) कमरों का समूहीकरण (Grouping of Rooms) - समूहीकरण से तात्पर्य है- "*विभिन्न कमरों का पारसपरिक सम्बन्ध।*" यदि गृह निर्माण योजना में समूहीकरण पर सूझबूझ के साथ विचार नही किया जाता है तो आवास असुविधाजनक हो जाता है। परिवार के सदस्यों को एक कमरें से दूसरे कमरें में जाना पड़ता है। अत: कमरों में आपस में पारस्परिक सम्बन्ध होना जरूरी है।

घर में मुख्यत: तीन समूह-क्षेत्र होते है व इन्हे एक दूसरे से सम्बन्धित करना एक उत्तम आवास का मुख्य उद्धेश्य होता है। ये तीनों समूह क्षेत्र निम्नानुसार है-

1. **अतिथि क्षेत्र (Public Zone)** - बैठक, भोजन कक्ष, बाहरी बरामदा, बगीचा । यदि बरामदा बैठक की अपेक्षा "शयनकक्ष में खुलता है तो वह असुविधाजनक होगा। अत: बरामदा एवं बैठक कक्ष को समूहीकृत करना चाहिए।
2. **कार्य क्षेत्र (Work Zone)** - रसोई घर, भण्डार गृह, चौक, बरामदा ये सभी कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आते है।
3. **एकान्त क्षेत्र (Private Zone)** - अध्ययन कक्ष, "शयनकक्ष, स्नान गृह आदि ।

उपरोक्त तीनों क्षेत्र पारस्परिक सम्बन्धित होने चाहिए साथ ही पृथ्क भी। आदर्श व्यवस्था वह होती है जिसमें रसाईघर, बैठक, "शयनकक्ष, स्नानगृह तथा "शौचालय तक पहुँचने के लिए स्वतंत्र मार्ग हो तथा इन स्थानों पर जाने के लिए किसी दूसरे कमरे से होकर गुजरना नही पड़े। साथ ही वे एक दूसरे से नजदीक भी हो, ताकि आने जाने में सुविधा रहे।

रसोईघर बैठक से दूर होना चाहिए। परन्तु भोजन क़क्ष एवं भण्डार कक्ष से पास होना चाहिए ताकि भोज्य पदार्थो एवं भोजन सम्बन्धित बर्तनों को लाने ले जाने में अधिक असुविधा नही हो। इसी तरह रसोईघर मुख्य द्वार से बहुत अधिक दूर नही होना चाहिए क्योंकि गृहिणी का अधिकांश समय रसोईघर में ही व्यतीत होता है। अत: उसे बार-बार आगन्तुकों के लिए द्वार खोलने के लिए जाना पड़ता है।

आजकल "शयनकक्ष के साथ ही स्नानाघर एवं "शौचालय जुड़े होते है। यदि ये "शयनकक्ष से दूर होते है तो असुविधा होती है। परन्तु मकान में एक स्नानघर एवं "शौचालय ऐसा हो जिस तक स्वतंत्र रूप् से अर्थात् बिना किसी कमरे से गुजरे पहुँचा जा सके।

(9) फर्नीचर व्यवस्था (Furniture Arrangement) - मकान का नक्षा बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि फर्नीचर किस कमरे में कहाँ पर रखी जायेगी। उसी के मुताबिक दरवाजे एवं खिड़कियों की स्थिति निर्धारित की जानी चाहिए। यदि आलमारी स्नानगृह एवं दरवाजे अलग-अलग दीवारों पर व्यवस्थित हो तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए पलंग का अनावष्यक ही एक चक्कर लगाना पड़ जाता है। अत: आने-जाने की दूरी बढ़ जाती है।

फर्नीचर का चयन काफी सोच-समझकर किया जाना चाहिए। यदि कमरे छोटे है तथा स्थानाभाव हो तो फोल्डिंग फर्नीचर का उपयोग करना श्रेष्ट है।

(10) आने-जाने का रास्ता (Traffic Lanes) - भवन निर्माण की योजना बनाते समय इस सिद्धान्त को मस्तिष्क में रखना आवश्यक है। कमरों में स्वतंत्र रूप से आने-जाने का रास्ता नही होने से एकान्तता भंग होती है। गैलेरी, हॉल या छोटा कमरा बना देने से एक कमरे से दूसरे कमरे में आसानी से आया जा सकता है। आने-जाने के रास्ते छोटे होने चाहिए जिससे कि अधिक चक्कर नहीं लगाना पड़े। रास्ते घुमावदार भी नही होने चाहिए।

(11) भवन का बाह्य रूप (Prospect) - भवन के बाह्य रूप से तात्पर्य है- "*मकान बाहर से देखने में कैसा लग रहा है।*" अर्थात् मकान की बाहरी

बनावट किस तरह की है। बाहर से मकान की डिजाइन, खिड़की, दरवाजों की डिजाइन एवं स्थिति इस प्रकार की होनी चाहिए कि देखने वाले का मन प्रसन्नता से खिल उठे। इस दृष्टिकोण से मकान सुन्दर, आकर्शक, कलात्मक एवं अलौकिक सौन्दर्य प्रदान करने वाला होना चाहिए। इसमें दर्षक को अपनी और खींचने की अदभुत क्षमता एवं विलक्षण गुण होना चाहिए।

आर- एस- देषपाडे के "शब्दों में- "*Prospect has reference to the impression that the house is likely to make on a person viewing it from the outside."*

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर एक आदर्श भवन का निर्माण किया जा सकता है। गृह निर्माण करते समय आयोजन जितना अच्छा रहता है आवास हमें उतनी ही अधिक सुख, संतोष, तृप्ति, प्रसन्नता एवं सुविधाएँ प्रदान करता है।

निर्माण योजना को प्रभावित करने वाले कारक

गृह निर्माण योजना को प्रभावित करने वाले निम्न कारक प्रमुख है-

(1) *परिवार की आर्थिक स्थिति* (Economic Condition of Family)

(2) *व्यवसाय* (Occupation)

(3) *परिवार के सदस्यों की संख्या* (Number of Family Members)

(4) *परिवार का प्रकार* (Types of Family)

(5) *परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या* (Number of Earning Members in Family)

(6) *कार्यस्थल से दूरी* (Distance from Work Place)

(7) *पारिवारिक आवश्यकता* (Family Necessity)

(8) *पारिवारिक जीवनचक्र* (Family Life Cycle

(1) पारिवार की आर्थिक स्थिति (Economic Condition of Family) - गृह निर्माण को प्रभावित करने वाले कारको में से सबसे

महत्वपूर्ण एवं पृथ्क कारक है- परिवार की आर्थिक स्थिति। अच्छी आर्थिक स्थिति में ही भवन निर्माण का काम किया जा सकता है। भवन निर्माण में काफी धन व्यय होता है। यद्यपि आजकल भवन निर्माण हेतु बैंक, जीवन बीमा निगम एवं अन्य कम्पनियाँ भी सस्ते ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवा रही है। फिर भी भवन निर्माण क्रिया कठिन है क्योंकि उन्हें चुकाने की क्षमता भवन निर्माता को होनी चाहिए। यदि भवन जमीन खरीदकर बनाना है तो जमीन स्वयं के (जमा पूँजी) पैसे से खरीदना ही चाहिए। साथ ही भवन निर्माण में व्यय की जाने वाली कुल राशि का 25-30% भवन निर्माता के पास नगद होनी चाहिए। अनुभवी व्यक्ति के अनुसार- "*भवन निर्माण में जीवन भर की कुल कमाई का 25% धन से अधिक व्यय नहीं करना चाहिए।*" इससे अधिक धन व्यय करने पर परिवार को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। सामान्यत: एक व्यक्ति गृह निर्माण के लिए 40-50 माह के तुल्य अपनी कुल आय को व्यय करता है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति की 10,000/- रुपये मासिक आय है तो वह व्यक्ति भवन निर्माण में 4 लाख से 5 लाख तक रुपये खर्च कर सकता है। परन्तु यदि "शहर के बीचों बीच भवन है तथा किराया प्राप्त होने की प्रबल सम्भावना है तो वह निर्माण में 120-125 माह तक के तुल्य राशि गृह निर्माण पर खर्च कर सकता है।

(2) व्यवसाय (Occupation) - भवन निर्माण को प्रभावित करने वाले कारकों में से दूसरा महत्वपूर्ण कारक है- भवन निर्माता का व्यवसाय। प्रत्येक परिवार का व्यवसाय, रहन-सहन का स्तर, खान-पान के तरीके, रीति-रिवाज, आवश्यकताएँ, रूचियाँ आदि एक जैसी नही होती। इनमें काफी भिन्नताएँ पायी जाती है। अत: उनकी आवश्यकताएँ भी भिन्न होती है। उदाहरणार्थ- एक डॉक्टर, वकील, शिक्षक, व्यापारी, किसान, सुनार तथा बढ़ई इन सभी के व्यवसाय में काफी अन्दर होता है। डॉक्टर, वकील, शिक्षक, बढ़ई, सुनार आदि को अपने व्यवसाय को चलाने के लिए अलग कमरे की जरूरत होती है। डॉक्टर को रोगी देखने एवं शिक्षक को बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग कमरे की जरूरत होती है। डॉक्टर को रोगी देखने एवं शिक्षक को बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग कमरे की जरूरत होती है। इसी तरह व्यापारी को अपने व्यापार से सम्बन्धित चीजों के संग्रहण हेतु

गोदाम की जरूरत पड़ती है। अत: वह भवन के (Underground) वाले भाग में गोदाम बनवा सकता है। इसी तरह किसान को अलग प्रकार के आवास की आवश्यकता होती है जिसमें वह अनाजों, दालों आदि का भण्डारण सुविधापूर्वक कर सके। अत: गृह योजना व्यावसायिक प्रवृतियों से प्रभावित होते है। आजकल अलग-अलग व्यवसाय के लोग अलग कॉलोनी बनाकर उसमें रहना अधिक पसन्द करते है ताकि अच्छे सामाजिक सम्बन्ध हो सके। यदि व्यवसाय इस तरह का है जहाँ देर से आना-जाना होता है तब भवन निर्माण हेतु ऐसी जगह का चयन किया जाना चाहिए जो देर रात्रि तक भी आवागमन की दृष्टि से सुरक्षित हो।

(3) परिवार के सदस्यों की संख्या (Number of Family Members) - भवन निर्माण करते समय परिवार के सदस्यों की संख्या भी अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है जिसे किसी भी कीमत पर नकारा नहीं जा सकता है। परिवार की संख्या को ध्यान में रखते हुए भवन निर्माण कार्य किया जाना चाहिए। परिवार के प्रत्येक सदस्यों की इच्छाओं एवं रूचियों के अनुरूप् उन्हें रहने के लिए अलग कमरे की वयवस्था करनी चाहिए । पढ़ने वाले बालकों के लिए भी पृथ्क कमरा होना चाहिए। साथ ही यह ध्यान रखना चाहिए कि अध्ययन कक्ष की एकान्तता भंग नही होने पाये। परिवार में जितने भी विवाहित दम्पति है उन सभी के लिए अलग-अलग कमरा होना चाहिए। छोटे बच्चों को खेलने के लिए खुली जगह होनी चाहिए ताकि खेलते समय उसे चोट नही लगे।

(4) परिवार का प्रकार (Types of Family) - भवन निर्माण करते समय परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकाकी) को भी ध्यान में रखना अनिवार्य है। यदि संयुक्त परिवार है तो भवन निर्माण इस तरह से की जानी चाहिए कि सभी सदस्यों को आवश्यकतानुसार एकान्तता एवं गोपनीयता प्राप्त हो सके तथा भविश्य में जब वे अलग होवें तथा स्वंतत्र रूप से जीवनयापन करना चाहे, तब उन्हे मकान का पूरा सेट जिसमें रसोईघर, स्नानगृह, “शौचालय, “शयनकक्ष आदि हों, उपलब्ध हो। यदि परिवार एकांकी है तब अधिक सोचने की जरूरत नही है।

(5) परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या (Number of Earning Members in Family) - भवन निर्माण में काफी खर्च आता है। यदि परिवार में एक ही व्यक्ति कमाने वाला है तथा उसकी आमदनी थोड़ी है तब भवन निर्माण काम अत्यन्त ही दुसाध्य एवं कष्टकर है। परन्तु यदि परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या अधिक है तो एक आदर्श भवन का निर्माण किया जा सकता है क्योंकि परिवार के सभी सदस्य भवन निर्माण में आर्थिक सहयोग देते है। ऋण लेकर भवन निर्माण करने पर भी ऋण की किष्त को आसानी से चुकाया जा सकता है। अत: गृह प्रबन्धक एवं परिवार को बहुत अधिक आर्थिक तंगी नही झेलनी पड़ती है तथा भवन निर्माण का काम सहज एवं आसान हो जाता है।

(6) कार्यस्थल से दूरी (Distance from Work Place) - गृह निर्माण को बनाते समय कार्यस्थल से इसकी दूरी पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। यदि मकान से कार्यस्थल काफी दूर है तब वहाँ तक आने-जाने में काफी समय, "शक्ति एवं धन व्यय होता है। यद्यपि बड़े-बड़े "शहरों में तो यह सम्भव नही है कि कार्यस्थल के पास ही मकान हो। बड़े "शहरों एवं महानगरों में 10-20 किलोमीटर की दूरी तय करना तो आम बात है। परन्तु छोटे "शहरों में यह सम्भव है कि भवन कार्यस्थल से काफी निकट 2-3 किलोमीटर के भीतर हो। इसके साथ ही विद्यालय, अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्र, रेल्वे स्टेशन, बस अड्डा, डाकघर, बाजार, मनोरंजन स्थल आदि का नजदीक होना भी जरूरी है।

(7) पारिवारिक आवश्यकताएँ (Family Necessity) - भवन निर्माण की योजना बनाते समय परिवार की वर्तमान एवं भविश्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना जरूरी है। मकान जिन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया जाता है वे सभी आवश्यकताएँ गृह योजना को प्रभावित करती है, जैसे- यदि परिवार का आकार बड़ा है तब बड़े आवास की जरूरत पड़ती है। परन्तु यदि परिवार का आकार छोटा है तब छोटे मकान की जस्रत पड़ती है जिसमें सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हों। अन्यथा मकान की देखरेख एवं साज-सज्जा में काफी परेषानी हो सकती है। यदि परिवार में केवल लड़कियाँ ही है अथवा

दम्पती सन्तानहीन है तो बड़े आवास की जरूरत नही होती। यदि बच्चे बड़े होकर नौकरी करने या व्यापार करने हेतु बाहर जाना चाहते है तो भी बड़े आवास की जरूरत नही पड़ती। परन्तु यदि बच्चे सहपरिवार माता-पिता के साथ ही रहना चाहते हों तो बड़े आवास की जरूरत पड़ती है। यदि घर में नर्सिंग होम, ट्यूषन क्लासेस, कम्प्यूटर सेन्टर, फैशन "शोरूम, बुटीक, ब्यूटी पार्लर आदि खोलना चाहते हो तो उसी के अनुरूप् भवन का निर्माण करना चाहिए।

(8) पारिवारिक जीवन चक्र (Family Life Cycle) - भवन निर्माण करते समय पारिवारिक जीवन चक्र (Family Life Cycle) को भी ध्यान में रखना आवश्यक है । प्रत्येक परिवार पारिवारिक जीवन चक्र की इन अवस्थाओं से होकर गुजरता है-

(1) आरम्भिक अवस्था (Beginning Stage), (2) विस्तार अवस्था (Expanding Stage), (3) संकुचित अवस्था (Contracting Stage)

प्रथम एवं तृतीय अवस्था में बड़े आवास की जरूरत नही पड़ती। परन्तु द्वितीय अवस्था में जब परिवार का आकार बड़ा होने लगता है, परिवार में दो-तीन बच्चे हो जाते है, वे बच्चे बड़े होकर स्कूल, कॉलेजों में अध्ययन करने लगते है। उनके मित्र घर आने लगते है, विवाह हेतु रिश्तेदार आने लगते है, कुटुम्ब बढ़ता है तब बड़े आवास की जरूरत पड़ती है।

गृह निर्माण योजना के सिद्धान्त एवं कारक : मात्र एक नजर में (Principles and Factors of House Planning : At a Glance)

सिद्धान्त (Principle)	**कारक (Factor)**
लागत/आर्थिक व्यय -	परिवार की आर्थिक स्थिति -
अभिव्यंजकता -	व्यवसाय -
कार्यात्मकता -	परिवार के सदस्यों की संख्या -
सुन्दरता -	परिवार का प्रकार -
एकान्तता/गोपनीयता -	परिवार में कमाने वाले-

परिवर्तनशीलता - वृहदता - कमरों का समूहीकरण - फर्नीचर व्यवस्था - आने-जाने का रास्ता - भवन का बाह्य रूप -	सदस्यों की संख्या - कार्यस्थल से दूरी - पारिवारिक आवश्यकता - पारिवारिक जीवन-चक्र -

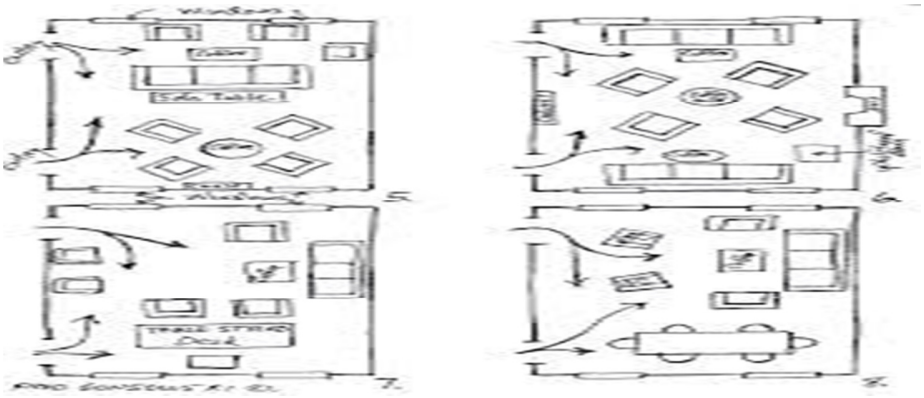

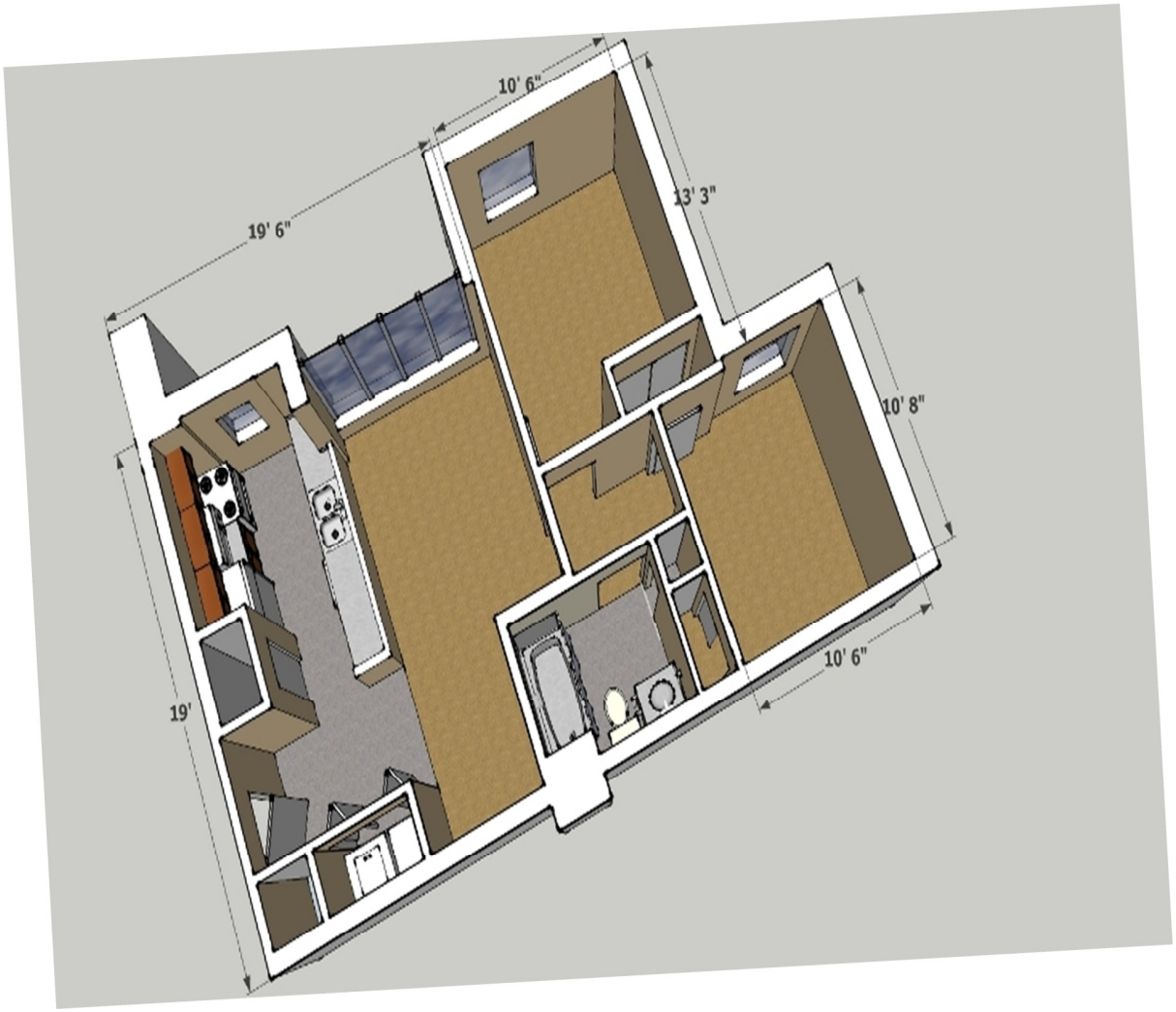
10' 6"
19' 6"
13' 3"
10' 8"
10' 6"
19'

1.3 अभ्यास प्रश्न

1. मकान की योजना बनाते समय किन किन सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए

2. निर्माण योजना को प्रभावित करने वाले कारक बताइए?

1.4 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा

2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 2

संचार सामग्री

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 पोस्टर
2.3 लीफ लेट
2.4 चार्ट
2.5 फैनल ग्राफ
2.6 फ्लेश कार्ड
2.7 फोल्डर
2.8 अभ्यास प्रश्न
2.9 संदर्भ ग्रन्थ

2. 0उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- पोस्टर की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- चार्ट की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

- फ्लेश कार्ड की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- लीफ लेट की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- फोल्डर की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

2. 1प्रस्तावना

1. **श्रव्य सामग्री -** श्रव्य सामग्री एक प्रकार की प्रशिक्षण संबंधी योजना है जिसके द्वारा कोई संदेश केवल सुना जाता है।
2. **दृश्य सामग्री -** दृश्य सामग्री एक प्रकार की संचार प्रक्रिया को सम्पन्न करने वाली सामग्री है जिसके द्वारा कोई भी संदेश देखा जाता है लेकिन सुना नहीं जा सकता।
3. **श्रृव्य दृश्य सामग्री -** श्रृव्य-दृश्य सामग्री एक प्रकार की प्रशिक्षण संबंधी योजना है। जिसके द्वारा किसी भी संदेश को सुना एवं देखा जा सकता है।

दृश्य सामग्री - दृश्य सामग्री वह शिक्षण साधन है जो केवल दिखाई देता है, सुनाई नहीं देता है। इसमें व्यक्ति की देखने की ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ -

1- चित्र
2- पोस्टर
3- श्यामपट्ट
4- फ्लैश कार्ड
5- चार्ट, नक्शा
6- होडिंग
7- फ्लैनेल ग्राफ
8- सूचनापट्ट
9- कठपुतली

श्रव्य सामग्री - श्रव्य सामग्री वह शिक्षण है जो केवल सुनाई देती है, दिखाई नहीं देता है।

उदाहरणार्थ -

1- रेडियो
2- टेलीफोन
3- टेपरिकार्डर आदि

दृश्य श्रृव्य सामग्री - दृश्य श्रृव्य सामग्री वे शिक्षण साधन है। जो दिखाई भी देते हैं तथा सुनाई भी देते है। इसमें नेत्र व कान दोनों ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग होने से इससे प्राप्त ज्ञान व संदेश स्थायी होता है।

उदाहरणार्थ -

1- फिल्म
2- टेलीविजन
3- ड्रामा
4- फिल्म स्लाइड

धामा के शब्दों में - ये उपकरण बोले गए शब्दों को अधिक स्पष्ट करने में सहायता देते हैं क्योंकि इनके माध्यम से विचारों को ज्ञानेन्द्रियों में से एक से अधिक की सहायता से प्रस्तुत किया जाता है।

डॉ. सिंह के अनुसार - शिक्षण सहायक उपकरण ऐसा कोई भी उपकरण है जो शिक्षक को शिक्षार्थी तक तथ्य कौशल अभिवृत्ति ज्ञान समझ तथा परख सम्प्रेषित करने में सहायता देता है।

दृश्य श्रव्य साधनों के लाभ

1- प्रसार शिक्षा के प्रसार प्रसार में
2- प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम के क्रियान्वयन में
3- विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रव्य दृश्य साधनों का प्रयोग करना अत्यधिक लाभदायक होता है।
4- दृश्य श्रव्य साधनों से व्यक्ति जल्दी और ज्यादा सीखते हैं, तथा सीखा हुआ अधिक समय तक याद रहता है।
5- दृश्य श्रव्य साधन कम समय एवं श्रम अधिक शिक्षा देते हैं।
6- सीखने वाले के मस्तिष्क में बात अमिट रूप से अंकित हो जाती है।
7- शिक्षण में अधिक वास्तविकता आती है।
8- दृश्य श्रव्य साधन के प्रयोग से प्रसार शिक्षण सरल हो जाता है।

9- अशिक्षितों को शिक्षित करने का प्रभावशाली साधन है।

10- श्रव्य दृश्य साधनों के प्रयोग से देखा और विश्वास करो के सिद्धान्त पर शिक्षा दी जा सकती है।

11- शिक्षण सहायक उपकरण अधिक से अधिक लोगों का ध्यान आकर्षित करते है।

12- शिक्षण में अधिक वास्तविकता आती है।

13- पाठन विधि को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

14- शिक्षण प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दुओं पर फोकस किया जाता है।

15- सीखने व सिखाने वाले दोनों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

16- भाषायी चिन्तन पर विजय पाने में मदद करते है।

17- सोचने के लिए उद्दीपक का काम करते हैं अर्थात् विचारोत्तेजक होते है।

18- मनोवृत्ति में परिवर्तन लाते हैं।

19- विचारों को अधिक स्पष्ट किया जाता है।

20- इनके सहारे करके सीखने का सिद्धान्त पूरा होता है।

21- विभिन्न साधनों के द्वारा ग्रहण की जाने वाली सूचनाएं आसानी से समझी जाती है और ज्यादा समय तक स्थिर रहती है।

22- विभिन्न साधनों के द्वारा ग्रहण की जाने वाली सूचनाएं आसानी से समझी जाती है और ज्यादा समय तक स्थिर रहती हैं ।

दृश्य श्रव्य सामग्रियों का प्रसार कार्य में महत्व

1- दृश्य श्रव्य सामग्री लोगों का ध्यान खीचनें में मदद करती है।

2- विचारों को स्पष्ट करने में मात्र शब्द ही सफल नहीं होते, इनकी मदद से लोग आसानी से समझ लेते है।

3- ये सीखने की प्रक्रिया को रूचिकर बनाती है।

4- ये ज्ञान को धारण करने और उसे अधिक स्थायित्व देने में मदद करती है।

5- इनके द्वारा संदेश व सूचना को बेहतर ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है। अत: ये विचारों की तारतम्यता को बनाये रखने में मदद करती है।

6- ये सीखने में प्रवीणता लाती है।
7- ये विविध प्रकार की सीख प्रदान करती है।
8- ये ऐसा अनुभव प्रदान करती है जो अन्य तरीके स नहीं मिल सकता ।
9- ये संदेश को अधिकाअधिक लोगों तक पहुंचाने में मदद करती है।
10- ये संचारवाहक के प्रयासों की गुणवत्ता को बहुगुणिता करती है।

प्रसार शिक्षण विधियों का चयन

- ग्रामीणों का मानसिक एवं शैक्षणिक स्तर
- सही विधि का चयन
- आर्थिक स्थिति
- ग्रहणकर्ताओं की संख्या
- यातायात की सुविधा
- शिक्षण साधनों की उपलब्धता
- अभिरूचि
- स्थानीय समस्याओं का समाधान
- आयु
- शिक्षण विधि का सम्मिलित प्रयोग

2.2 पोस्टर

चित्र के द्वारा किसी संदेश का दर्शकों तक पहुंचने का पोस्टर कहते है। पोस्टर के माध्यम से दर्शक शीघ्रता से संदेश समझ जाते हैं। यह विशेष की जानकारी हेतु प्रेरित करने का एक सरल आकर्षक एवं रोचक माध्यम है। इसे अनपढ व्यक्ति भी आसानी से समझ सकते है। यह बड़े रंगीन एवं आकर्षक होते है। इनमें शब्दों का प्रयोग ना के बराबर होता है यह काफी बड़े समूह का ध्यान आकर्षित करने के लिए होता है। इममें मुख्यत: चित्र शब्द, रंग एवं जगह होते है।

1- **चित्र -** चित्र के तरह बना होना चाहिए कि वह संदेश को एक झलक में समझा सकें। बिना मतलब के चित्र अथवा संदेश नहीं होने चाहिए जो कि दर्शकों उलझायें।

2- शब्द/नारा - चार या पांच शब्दों का नारा होना चाहिए। नारे का बड़ा लिखना चाहिए। क्योंकि यह पढने में आसान होता है।

3- **रंग -** आकर्षक रंगों का प्रयोग करना चाहिए। नारे को एक रंग में लिखना चाहिए। आकर्षक बिन्दु को एक एवं चमकीले रंगों में होना चाहिए। रंगों का प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए कि एक दूसरे को उभारने में सहायक हो।

4- **जगह -** सभी चित्र एवं शब्दों के लिए उचित एवं सही स्थान होना चाहिए। पोस्टर कम समय में अधिक लोगों तक पहुंचने वाला ऐसा साधन है जिससे सूचनाएं शीघ्र प्राप्त होती हैं तथा जागरूकता बढती है। सामान्यत: इसका आकार 50x50 cm का होता है। यह अच्छे पोस्टर के लिए आकर्षक एवं उद्देश्य को प्रकट करने वाला होना चाहिए। पोस्टर व्यक्तियों में जागरूकता प्रकट करने वाला होना चाहिए। इसका प्रयोग अभियान अथवा प्रदर्शनी में अधिक होता है । शब्दों में स्थानीय भाषा का प्रयोग होना चाहिए। किसी कार्यक्रम के प्रसार प्रचार में भी पोस्टर का उपयोग होता है। इससे कार्यक्रम के बारे में उत्सुकता एवं अभिरूचि पैदा होती है। पोस्टर में कम एवं सरल शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

पोस्टर की उपयोगिता प्रसार शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह एक दृश्य साधन है जिसका उपयोग लोगों में जागरूकता लाने में करते है। जहां पर काफी संख्या संख्या में लोगों का आवागमन होता है वहां पर पोस्टर लगाए जाते है। पोस्टर के माध्यम से कम समय में लाभकारी संदेश लोगों का आवागमन होता है वहां पर पोस्टर लगाए जाते है। पोस्टर के माध्यम से कम समय में लाभकारी संदेश लोगों तक पहुंचाए जाते है। जैसे टीकाकरण, परिवार कल्याण आदि। पोस्टर को मुख्यत: दो भागों में विभक्त किया जाता है। प्रथम भाग संदेश और दूसरा चित्र होता है। पोस्टर पर लोग एक दृष्टि डालकर निकल जाते हैं अत: संदेश किसके लिए है, सर्वाधिक स्पष्ट होना चाहिए। अच्छे पोस्टर को 30 x 28 cm or 28 x

44 cm का होना चाहिए। इसमें लिखे अक्षरों का आकार 3 इंच के होने चाहिए।

पोस्टर के प्रकार

विज्ञापन पोस्टर - विज्ञापन पोस्टर सभी स्थानों पर पाया जाता है किसी कम्पनी के नए उत्पाद अथवा पुराने उत्पादों में परिवर्तन को दर्शाया जाता है। इसमें दर्शक आकर्षित होते है।

शिक्षाप्रद पोस्टर - अपने नाम के अनुसार ही ये पोस्टर किसी भी व्यक्ति को सूचना भेजने या शिक्षा पहुंचाने का उत्तम साधन है। ये सामाजिक जागरूकता पहुंचाने का अच्छा तरीका है।

विषयवार पोस्टर - किसी भी एक विषय पर कुछ बताना विषयवार पोस्टर कहलाता है, जैसे किसी प्रदर्शनी में संगीतकार का चित्र या प्रतिकृति।

सकारात्मक पोस्टर - किसी भी प्रेरणादायक सूचना को विस्तारित करना सकारात्मक पोस्टर कहलाता है।

प्रचार पोस्टर - किसी का भी प्रचार करने हेतु इस प्रकार के पोस्टर का उपयोग किया जाता है। किसी पार्टी का प्रचार, कापरेटर प्रचार के लिए यह बहुत उपयोगी माना जाता है। इसे राजनीतिक पोस्टर भी कहा जाता है।

पोस्टर को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान रखना जरूरी है -

1- उद्देश्य ठीक से लिखा हुआ हो।
2- कम से कम शब्दों का प्रयोग हो, क्योंकि लोग ज्यादा देर तक इनको नहीं पढते हैं।
3- आसानी से समझने योग्य हो।
4- केवल एक विचार का ही समावेश हो।
5- पोस्टर उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए, जैसे - परिवार, कल्याण, टीकाकरण आदि।
6- हमेशा सार्वजनिक और सुरक्षित जगह पर लगाना चाहिए।

7- आकार बडा और साफ हो।
8- आकर्षक रंगों का उपयोग हो।
9- इसमें व्यंग्य चित्रों का भी प्रयोग करना चाहिए।
10- जिस समस्या हेतु बना है उसे ठीक से प्रदर्शित किया गया हो।

पोस्टर के लाभ

1- यह समस्या के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करते है।
2- पोस्टर हमेशा लगे रहते हैं अपना स्मरण दिलाते रहते है।
3- एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में आसानी होती है।
4- पोस्टर का उपयोग जिस समूह चर्चा के लिये होता है वह बहुत ही प्रभावशाली होता है।
5- पोस्टर के द्वारा किसी विधि के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जानकारी दी जाती है और इस लाग जब किसी जानकारी को देखते हैं ताक काफी समय तक याद रखते हैं।

पोस्टर की हानियां

1- बनाना कठिन होता है।
2- कभी कभी दर्शकों में भ्रम उत्पन्न करते हैं, क्योंकि या तो इसमें बहुत अधिक या बहुत थोडी जाकनारी होती है।
3- नष्ट हो जाने का भय रहता है।
4- एक ही संदेश दिया जा सकता है।
5- अशिक्षित लोगों के लिए बहुत प्रभावी नहीं है।
6- पोस्टर बनाने के लिए कलात्मक कौशल होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति में कौशल की कमी है तो वह क्यों स्वयं नहीं बना सकता और इस प्रकार पोस्टर बनाना थोडा कठिन कार्य तो अवश्य है।
7- पोस्टर में केवल एक विषय को अंकित किया जाता है इसलिए हर बार पोस्टर बनाना भी थोडा मुश्किल काम है।
8- पोस्टर कागज में बनाया है इसलिए उसके फटने व नष्ट होने का डर हमेशा बना रहता है।

अभ्यास कार्य

किसी विषय का चुनाव करके पोस्टर का निर्माण कीजिए

विषय -

पोस्टर -

2.3 लीफ लेट

किसी भी विषय के बारे में संक्षिप्त जानकारी देना लीफ लेट के द्वारा होता है। किसी भी कार्यक्रम की नई सूचना, पद्धतियों की जानकारी आदि के बारे में बताया जाता है। सूचना मुद्रित की जाती है अथवा साइकलों स्टाइल द्वारा जानकारी दी जाती है। पर्चा में एक ही विषय के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। इसमें एक ही पन्ने में जानकारी देनी होती है।

बनाने का तरीका - एक ही विषय वस्तु के बारे में जानकारी दी जाती है। कम एवं सरल शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो चित्र का उपयोग करना चाहिए। दी गई जानकारी अपने आप में सम्पूर्णा होनी चाहिए। संदेश स्पष्ट होना चाहिए । जहां तक हो स्थानीय भाषा का उपयोग करना चाहिए। एक विचार को रोचक बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। आवश्यकता के अनुसार विषय वस्तु लेना चाहिए। कम अथवा जरूरत से ज्यादा जानकारी दोनों ही पढने वाले को उलझा सकती है। विषय वस्तु की जानकारी अपने आप में सम्पूर्ण होनी चाहिए। कम एवं सरल वाक्यों में जानकारी वितरित करनी चाहिए। इनकी सबसे बडी विशेषता यह होती है कि इसे इस्तेमाल करना आसान होता है वं जरूरत पड़ने पर इसे बार बार निकाल कर पढा जा सकता है। सर्वप्रथम विषय का परिचय देना चाहिए। तत्पश्चात् विषय के बारे में आगे बढना चाहिए । शब्दों का आकार उचित होना चाहिए ताकि पढने में आसानी हो। ज्यादा रंगों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इसे बनाने से पूर्व विषय वस्तु की सम्पूर्ण जानकारी कर लेनी चाहिए। यदि बिन्दुओं में जानकारी दी जा सके तो वह बेहतर तकनीक है। खास जानकारी के नीचे लाइन खींच देनी चाहिए ताकि पढ़ने वाले का ध्यान आकर्षित हो सके। लिखाई एवं चित्र स्पष्ट होने चाहिए। उचित शीर्षक का चुनाव करना चाहिए ताकि देखते ही

पढने की इच्छा जागृत हो सके। उचित शीर्षक का चुनाव करना चाहिए ताकि देखने ही पढने की इच्छा जागृत हो सके। प्रत्येक पठन सामग्री क्रमबद्ध तरीके से आगे बढनी चाहिए ताकि विषय आसानी से समझा जा सके। चित्र, पठन सामग्री, अक्षरों आदि में एकरूपता एवं समानता रखनी चाहिए। उचित रंगों का प्रयोग करना चाहिए । ज्यादा रंगों के प्रयोग से आंखों को अच्छा नहीं लगता एवं पढने की इच्छा खत्म हो जाती है। स्थानीय एवं सरल भाषा का ही उपयोग होना चाहिए। अक्षरों एवं चित्रों के आकार में पूर्ण सामंजस्य होना चाहिए।

लीफ लेट लाभ

1- कम समय में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करना।
2- समस्या से संबंधित सभी बिन्दुओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती है।
3- एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में आसान
4- प्रसार का प्रभावशाली माध्यम है।

लीफ लेट हानियां

1- अशिक्षित लोगों के लिए उपयोगी नहीं है।
2- भाषा की स्पष्टता की समस्या।

अभ्यास कार्य

किसी विषय का चुनाव करके लीफ लेट का निर्माण कीजिए।

विषय

पाठ्य सामग्री

2.4 चार्ट

यह विचारों की श्रृंखला है। अपने शब्दों, विचारों, संदेश को कम शब्दों में समझाने का माध्यम चार्ट कहलाता है। इसमें शब्दों का इस्तेमाल चित्रों की तुलना में ज्यादा किया जाता है। किसी भी एक विषय वस्तु को विस्तृत रूप में समझाया जाता है। किसी भी क्रिया अथवा वस्तु को जिसे कक्षा में

नहीं लाया जा सकता एवं समझाना जरूरी होना है तो इस प्रक्रिया से समझाया जाता है। उचित एवं सही शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा विचारों को समझाया जा सकें।

चार्ट बनाने का तरीका

इसमें शब्दों का उचित आकार एवं रंगों का प्रयोग होना चाहिए। शब्दों का चुनाव इस प्रकार होना चाहिए कि दर्शकों को विषय वस्तु को समझने में दिक्कत ना आए। ज्यादा से ज्यादा विषय को कम से कम शब्दों में लिखना चाहिए। शब्दों को उभारने हेतु रंगों का प्रयोग होना चाहिए। चार्ट का पृष्ठ रंग हल्का होना चाहिए ताकि शब्दों को उभारने में आसानी हो। चार्ट में किसी भी तरह की डिजाइन नहीं देनी चाहिए । क्योंकि डिजाइन देते ही ध्यान चार्ट से ज्यादा डिजाइन पर जाता है। चित्र यदि आवश्यक हो तो एक अथवा दो चिपकाने चाहिए। इसे इस प्रकार लगाना चाहिए कि दर्शकों को पढने में किसी भी तरह की दिक्कत ना हो। किसी भी आंकड़ों को समझाने का यह अच्छा तरीका है क्योंकि आंकड़ों को यदि पढने लगेंगे तो समझना मुश्किल होगा जबकि चार्ट के माध्यम से ज्यादा अच्छी तरह से समझा जा सकता है। किसी भी चार्ट का मुख्य बिन्दु उसमें उपयोग में आने वाला प्रसंग है।

चार्ट के प्रकार

1- **पिक्टोरियल चार्ट -** इस प्रकार के चार्ट में चित्रों के माध्यम से विषय को समझाया जाता है। चित्र रंगीन होना चाहिए।
2- **संगठनात्मक व्यवस्थापन चार्ट -** विभिन्न विभागों की संरचना एवं ढांचे को दर्शाने हेतु दिखाये गए चार्ट को संगठनात्मक व्यवस्थापन चार्ट कहते है।
3- **फ्लो चार्ट -** किसी पदार्थ को किस प्रकार बनाया जाता है उनको क्रमबद्ध तरीके से दर्शाना हो तो उसे फ्लो चार्ट कहते हैं। किसी भी गहरी प्रक्रिया को समझाने के लिए इसका उपयोग करते है।
4- **ट्री चार्ट -** जब किसी विषय वस्तु को पेड के तने एवं शाखा के द्वारा समझाया जाता है तब उसे ट्री चार्ट कहते हैं।

5- **अममंस्य चार्ट -** पूरी विषय वस्तु लिखकर अथवा चित्र के द्वारा समझाइ् जाती है। हर पद को कागज के द्वारा ढक कर रखा जाता है। जिस समय हम विषय वस्तु को समझाते हैं तब कागज को हटाते जाते हैं आगे क्या होने वाला है इसकी उत्सुकता दर्शकों में हमेशा बनी रहती है।

6- **डाटा चार्ट -** किसी भी आंकडों को पूर्ण रूप से समझाने के लिए डाटा चार्ट का प्रयोग किया जाता है।

7- **हिस्टोग्राम चार्ट -** सारणीबद्ध आवृत्ति को आयताकार के रूप में दर्शाना हिस्टोग्राम कहलाता है। इसमें आंकड़ों का आकार उचित अंतराल में नाप रखा जाता है।

8- **बार चार्ट -** इसे समानान्तर एवं उध्र्व दोनों तरीकों से बनाया जा सकता है। इसमें आयताकार लम्बाई आंकडों के हिसाब से होती है।

9- **पाई चार्ट -** इसमें आंकड़ों का प्रतिशात के हिसाब से दर्शाया जाता है। पाई को आंकडों के हिसाब से बांटा जाता है। प्रत्येक प्रतिशत को अलग से रंग से दर्शाया जाता है।

10- **लाइन चार्ट -** इसमें आंकडों को लाइन के द्वारा दर्शाया जाता है इसमें किसी भी दो या अधिक आंकडों का आंकलन करना हो तो यह चार्ट उचित माध्यम है।

कुछ अन्य चार्ट है टाइम लाइन, चार्ट बबल चार्ट, पोलर ट्री मेप चार्ट आदि।

ध्यान देने योग्य बातें

1- चित्र स्पष्ट और बडा हो।

2- चित्र सही हो और साफ लिखे हो।

3- चित्र में रंग भी भरे हुए हो।

प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें

1- शिक्षक का प्रसार कार्यकर्ता को फ्लिप चार्ट का प्रयोग करते समय यह देखना चाहिए कि जितने भी दर्शक है उन सभी को आसानीपूर्वक दिखाई दे।

2- फ्लिप चार्ट को प्रयोग करते समय उचित स्थान का चुनाव करना चाहिए।
3- प्रसारकर्ता या प्रसार शिक्षक को शिक्षण कार्य के दौरान अपने विषय का भली भांति परिचय दे देना चाहिए।
4- परिचय देने के बाद विषय सामग्री पर आगे बढना चाहिए।

चार्ट के लाभ

1- ये चार्ट सांख्यिकीय आंकडो को दर्शकों के मध्य रखकर बहुत ही अच्छे ढंग से समझाने के लिए प्रभावकारी होते है।
2- किन्हीं दो बीजों, विचारों, परिस्थितियों या प्रगति का तुलनात्मक विवरण देने में आसानी होती है।
3- चार्ट के माध्यम से किस भी क्षेत्र की प्रगति का विवरण जल्दी और कम समय में समझा जा सकता है। तुलना करने में आसानी रहती है।
4- किसी क्षेत्र का सही ज्ञान प्रदान करता है।
5- किसी प्रगति को जल्दी समझा जा सकता है।
6- स्थिति या समस्या के विश्लेषण में मदद मिलती है।
7- किसी उपलब्धि के प्रमाण होते है।
8- कार्यक्रम की प्रगति के विषय में जनता को सूचित किया जाता है।
9- प्रसार जल्दी होता है।

चार्ट की हानियां

1- बनाने में कठिनाई होती है।
2- जरा सी असावधानी से स्थिति बदल सकती है।
3- वैसे तो चार्ट के बनाने व प्रदर्शन करने में फायदे ही फायदे है ॅि◌फर भी अनुसंधान किये तथ्यो/आंकडों से स्पष्ट होता है कि चार्ट का फायदा केवल पढे लिखे लोग ले पाते है।

अभ्यास कार्य

किसी विषय का चुनाव करके चार्ट का निर्माण कीजिए

विषय

2.5 फैनल ग्राफ

यह एक प्रकार का लकडी/प्लाई का समतल बोर्ड होता है। इस पर फलालेन का अथवा खद्दर का कपडा चिपका होता है। यह बोर्ड एक तरह से पृष्ठ भूमि का काम करता है। इसका प्रयोग किसी संदेश को कहानी के प्रस्तुतीकरण के रूप में किया जाता है। कहानी में कोई उद्देश्य शिक्षा का होना आवश्यक होता है। यह एक तरह का पिक्चर ड्रामा होता है। इसमें ड्राइंग को काट कर पिक्चर तैयार किया जाता है। इसमें लगाए गए पिक्च अभिनेताा के पिक्चर के बराबर होते है। अत: उन्हें काफी अच्छी तरह बनाना चाहिए। पिक्च में भडकीले रंगों का प्रयोग करना चाहिए। फैनल ग्राफ से समय की बचत होती है। संदेश को कहानी के रूप में प्रस्तुत करने के कारण यह दर्शकों के दिल दिमाग में समा जाती है। संदेश के लिए स्थानीय शब्दों का प्रयोग आवश्यक होता है। इसमें पिक्चर के साथ साथ प्रसार कार्यकर्ता का रोल प्रमुख होता है।

फैनल ग्राफ तैयार करने की विधि -

1- सर्वप्रथम इसमें कोई विषय का चुनाव किया जाता है जो सामान्य है।
2- जिस विषय पर जानकारी देनी हो उस पर कहानी लिखना चाहिए। तत्पश्चात उस पर उसके पात्रों को तैयार किया जाता है।
3- इसके पश्चात कहानी को टुकड़ों में बांटे तथा प्रत्येक बिन्दु के लिए अलग अलग पिक्चर तैयार कर ले। ड्राइंग को बडे आकार में काट लें। कार्ड के पीछे सेन्ड पेपर काटकर चिपका दें।
4- शब्दों का चुनाव सरल आसानी से समझ सकने योग्य तथा स्थानीय होना चाहिए। प्रचलित मुहावरें लोकोक्तियों का भ्ाी प्रयोग किया जा सकता है। पर्दे का प्रयोग भी किया जा सकता है।
5- फैनल बोर्ड का आकार 30 इंच से 40 इंच का न्यूनतम आकार का होना चाहिए। फलालेन का कपडा गहरे रंग का होना चाहिए ताकि उस पर लगे चित्र को अच्छी तरह देखा जा सके। इसमें फेलालेन का कपडा इसलिए इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि फलालेन के उपर रेती कागज का टुकडा आसानी से चिपका लिया जाता है।

इस्तेमाल का तरीका

इसमें जिस कथा अथवा संदेश को प्रस्तुत करना हो उसे कहानी के रूपम े ंसरल भाषा में तैयार कर लेना चाहिए। कथा/कहानी रोचक एवं छोटी होनी चाहिए सुनने वाले ध्यान से सुने। पटकथा के दृश्यों को पहले फलालेन के बोर्ड पर चिपका दे तत्पश्चात कहानी को कहे। जिन आकृतियों की आवश्यकता नहीं होती है उन्हें बोर्ड से हटा लेनी चाहिए। ज्यादा सामग्री से बोर्ड के दृश्यों को समझने में दिक्कत होती है।

फैनल ग्राफ से लाभ

1- शिक्षण कार्य को रूचिकर उत्तेजक एवं गतिशील बनाने मे ंसहायक होता है। श्रोताओं को विचार विमर्श का ज्यादा अवसर प्राप्त होता है।
2- समूह चर्चा में उपयुक्त
3- मनोरंजनदायक और रूचिकर
4- फोटो बडे और साफ हो।
5- फोटो एक क्रम में लगे हो जिसस एक कहानी बन सके।
6- अच्छे दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हो।

फैनल से हानि

1- इसे बनाना कठित होता है।
2- बोर्ड होने के कारण कहीं ले जाने में परेशानी होती है।
3- फोटो बडे और साफ होने अति आवश्यक है।
4- फोटो क क्रम में लगे हो जिससे एक कहानी बन जायें।
5- अच्छे दृष्टिकोणों को प्रस्तु करते हो।

2.6 फ्लेश कार्ड

यह क्रमबद्ध कार्ड की श्रृंखला है। जिसे दर्शको के सामने एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। किसी भी संदेश को कहानी के रूप में दर्शकों के सामने रखने से वह रोचक भी होती है एवं संदेश भी आसानी से पहुंचता है। हर कार्ड का आकार होता है। कार्ड विभिन्न आकार का भी हो सकता है। यदि समूह की संख्या बडी होती है तो फ्लेश कार्ड का आकार भी बडा

हो जाता है। यह समूह में शिक्ष ादेने की तकनीक है। यह सामान्यत: स्कूल में छोटे बच्चों एवं अनपढ समूह को शिक्षा देने की सरल एवं उत्तम तकनीक है। कार्ड में चित्र रेखाचित्र कार्टून आदि रोचक सामग्री की मदद से कहानी को बनाया जाता है। कार्ड दिखाने के साथ ही साथ कार्यकर्ता तरीके के साथ कहानी बोलता रहता है ताकि सुनने एवं देखने वाला ध्यान कहीं और ना जाए। कार्यकर्ता कार्ड को क्रमबद्ध तरीके से जमा कर रखता एवं एक के बाद एक कार्ड को दिखाता रहता है हर एक कार्ड में एक संदेश छुपा रहता है। जो कि मनोरंजक रखता है एवं एक के बाद एक कार्ड को दिखाता रहता है हर एक कार्ड मे ंएक संदेश छुपा रहता है तो कि मनोरंजक प्रेरणादायक एवंरूचि पूर्ण होता है। कार्ड की मदद से कहानी के रूप में संदेश पहुंचाना फ्लेश कार्ड कहलाता है।

इनमें आकर्षक रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए। एक विषय या कथा के लिए 10 से 12 फ्लेश कार्ड का प्रयोग किया जाना पर्याप्त होता है। प्रत्येक कार्ड पर चित्रित संदेश को शब्दों द्वारा समझाएं कार्ड को चाक्षुष माध्यम बनने दे। फ्लेश कार्ड में वर्णित कथा या कार्य प्रणाली सामान्य विषय पर आधारित होनी चाहिए, जिससे लोग उसे सहजता से समझ सकें। पात्रों के नाम स्थानीय हो तो लोगों पर अच्छा प्रभाव पडता है। फ्लेश कार्ड को टेबल पर रखें तथा कार्ड को लोगों के सामने ठीक से पकडे जिससे लोग भली भांति देख सकें। यदि लोग चंद्राकार घेरे में बैठे हो तो घूमकर प्रत्येक कार्ड को दिखाएं। कार्ड पर कोई महत्व देने योग्य वस्तु या चरित्र हो तो उसे उंगली द्वारा विशेष रूप से इंगित करें तथा चर्चा करें। बीच बीच में बच्चों तथा नवयुवकों से प्रश्न भी करना चाहिए। फ्लेश कार्ड द्वारा कोई भी बात प्रस्तुत करते समय प्रसारकर्ता को विशेष उत्साह दिखाना चाहिए। वार्ता समाप्ति के बाद फ्लेश कार्ड के प्रयोग संबंधित प्रश्न एवं संदेश देने चाहिए।

फ्लेश कार्ड बनाने का तरीका

उचित एवं रोचक विषय का चुनाव कर लेना चाहिए। विषय की सम्पूर्ण जानकारी एकति कर लेनी चाहिए। कहानी को शुरू से लेकर आखिरी तक रोचक लिखना चाहिए। कहानी क्रमबद्ध तरीके की होनी चाहिए। कार्ड का

एक के बाद एक रूचिकर तरीके से लगा होना चाहिए। यह किसी भी संदेश को पहुंचाने का एक प्रभावशाली तरीका है। अत: कहानी रोचक होनी चाहिए। आसान शब्द एवं ि◌चत्र का प्रयोग होना चाहिए उचित रंगों का इस्तेमाल करना चाहिए। कार्ड का आकार श्रोताओं की संख्या के अनुसार होना चाहिए। कार्ड प्रत्येक दर्शक को आसानी से दिखते रहना चाहिए। कहानी ज्यादा बडी अथवा छोटी नहीं होनी चाहिए। कहानी एवं कार्डों के बीच समानता होनी चाहिए। र्काड में सरल आसान एवं स्थानीय भाषा का उपयोग करना चाहिए। चित्रों का चयन कार्ड की सफलता में बडी भूमिका निभाता है। अत: प्रत्येक चित्र कहानी के अनुसार रोचकता एवं उत्सुकता जागृज करने वाला होना चाहिए।

फ्लेश कार्ड के उपयोग की विधि

1- शिक्षक या प्रसारकर्ता को कार्डों के प्रयोग करने से पहले उनके बारे में प्रस्तुतीकरण का पूर्वाभ्यास करना चाहिए।
2- सरल और आसान शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।
3- कार्डों को व्यवस्थित करके क्रमानुसार लगावे और छाती की उंचाई तक लगाएं। फोटो बडे और साफ हो।
4- क्रम में लगे हो जिससे एक कहानी बन जाए।
5- अच्छे दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हो।
6- कार्ड पर चित्र स्थानीय दशाओं से संबंद्ध रहे।
7- इन चित्र क्रमवार स्पष्ट और लिखावट सरल होनी चाहिए।
8- कार्ड का आकार इतना बडा 10 12इंच हो कि 15-20 व्यक्तिगण देख सकें।

फ्लेश कार्ड के लाभ

1- यह कहानी के रूप में कहे जाने के कारण काफी लम्बे समय तक याद रहती है।
2- अशिक्षित व्यक्ति भी इसका फायदा ले सकते है।
3- इसका उपयोग कई बार किया जा सकता है।
4- स्थानीय व्यक्तियों का भी इसमें साथ ले सकते है।
5- छोटे समूह के लिए बहुत उपयोगी होता है।

6- स्थानीय भाषा का प्रयोग भी करते है।
7- पद्धति आसानी से समझायी जा सकती है।
8- बात किसी को आसानी से समझाया जा सकती है।
9- दर्शक पर अमिट छाप छोडता है।
10- समूह चर्चा में प्रयोग होता है।
11- बातचीत को संक्षिप्त करने में मदद करता है।
12- बातचीत प्रस्तुत करने के दौरान समय की बचत होती है।
13- अच्छे दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हो।

फ्लेश कार्ड की हानि

1- बनाना कठिन होता है और महंगा पडता है।
2- छोटे जन समूह को ही सिखाया जा सकता है।
3- सभी विषयों को सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।
4- बोर्ड होने के कारण कही ले जाने में परेशानी।

2.7 फोल्डर

किसी विषय पर यदि जानकारी अधिक हो तब इस का प्रयोग किया जाता है। किसी कागज को दो अथवा तीन बार फोल्ड कर उसके आगे पीछे चित्रों एवं शब्दों की सहायता से जानकारी दी जाती है तो उसे फोल्डर कहा जाता है यह लीफलेट के समान ही होता है फर्क यह होता है कि लीफलेट में एक कागज पर सामग्री लिखी होती है जब कि फोल्डर में बडे कागज को फोल्ड करके आगे पीछे दोनों तरफ एक ही विषय की सामग्री का समावेश होता है। इसमें चित्र भी लगाया जा सकता है। चूंकि पाठ्य सामग्री आगे पीछे दोनों तरफ लिखी जा सकती है। अत: इसके द्वारा जानकारी ज्यादा दी जाती है। इसमें सूचनाएं मुद्रित की हुई होती है।

बनाते समय ध्यान रखने योग्य बाते -

हमेशा फोल्डर में एक ही विषय पर विस्तृत जानकारी दी जाती है। भाषा सरल एवं स्थानीय होनी चाहिए। प्रारंभ में विषय के बारे में जानकारी देनी चाहिए। विषय को सामान्य से विशिष्ट की तरफ जानकारी देनी चाहिए। कठिन शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। शब्दों में सर्वनामों

का प्रयोग ध्यान से करना चाहिए। अंकों को भी शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना चाहिए। प्रत्येक पृष्ठ को पूरे वाक्य से समाप्त करना चाहिए। यह कम लागत की भी बनाई जा सकती है।

प्रमुख पृष्ठ पर केवल शीर्षक एवं एक चित्र का होना चाहिए। मुख्य पृष्ठ इस प्रकार का होना चाहिए कि दर्शक देखते ही आकर्षित होकर पाठ्य सामग्री को पढना चाहेंगे। कागज को फोल्ड करते समय ध्यान रखना चाहिए कि पढने के लिए जब इसे खोला जाए तो पाठ्य सामग्री को पढने में किसी भी प्रकार की मुश्किल ना हो। पाठ्य सामग्री स्पष्ट संक्षिप्त एवं रूचिकर होनी चाहिए। सामग्री को सुनियोजित ढंग से लिखना चाहिए। आवश्यकता होने पर चित्र का भी उपयोग करना चाहिए ताकि पढने में रूचि जागृत हो सके उपशीर्षक की आवश्यकता हो तो वह भी देना चाहिए । वस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होनी चाहिए।

फोल्डर के लाभ

1- किसी उत्पन्न करते है।
2- किसी नई पद्धति को प्रदर्शित करते है।
3- कठिन विचारों को भी स्पष्ट करते है।
4- केवल शिक्षित जनता ही लाभ उठा सकती है।
5- अधिक जानकारी किसी भी विषय पर दी जा सकती है।
6- आकड़ों का प्रदर्शन भी कर सकते हैं।
7- सूचना ज्यादा लोगों में फैला सकते है।
8- ज्यादा मंहगी नहीं होती है।
9- कभी भी आवश्यकता पढने पर जानकारी को पढा जा सकता है।
10- संभालने में आसानी रहती है।
11- एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने से आसानी रहती है।

फोल्डर की हानियां

1- इसका उपयोग पढे लिखे व्यक्ति ही कर सकते है।
2- भाषा ज्ञान होना अति आवश्यक है।
3- बनाना कठिन होता है।

2.8 अभ्यास प्रश्न

1. फ्लेश कार्ड बनाइये
2. पोस्टर बनाइये
3. चार्ट बनाइये
4. फ्लेश कार्ड बनाइये
5. लीफ लेट बनाइये
6. फोल्डर बनाइये

2.9 संदर्भ ग्रन्थ

प्रसार शिक्षा प्रायोगिक डॉ दीपा स्वामी

1. प्रसार शिक्षा –डा. वंदना जैन , डा पूनम कुमारी
2. प्रसार शिक्षा-डा बी. डी. हरपलानी
3. प्रसार शिक्षा- डा वृंदा सिंह

इकाई 3

सजावट

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 जन्मदिन

3.3 जन्माष्टमी

3.4 दीपावली

3.5 क्रिसमस

3.6 अभ्यास प्रश्न

3.7 संदर्भ ग्रन्थ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र विभिन्न त्योहारों की सजावट की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

3.1 प्रस्तावना

घर हमारी परछाई है । जैसे हम, वैसा ही हमारा घर। त्योहारों का सिलसिला शुरू हो चुका है, साथ ही शुरू हो चुका है घर की साफ-सफाई और सजावट का दौर भी। त्योहारों के मौसम में अपने घर को आसानी से कैसे सजाएं,

त्योहारों के मौसम में घर की साफ-सफाई करना और पेंटिंग करवाना आम बात है। पर मुख्य सवाल तो यह है कि ज्यादा पैसा खर्च किए बिना घर को त्योहारी लुक कैसे दिया जाए ? त्योहार के मौसम में हम सब की कोशिश होती है कि हम अपने घर को पारंपरिक लुक दें। इस बात को ध्यान में रखते हुए घर की साफ-सफाई के दौरान ऐसा जो भी सामान आपको नजर आए, जिसका इस्तेमाल घर की सजावट में हो सकता है, जैसे सजावटी दीया या फिर कोई खूबसूरत वॉल पेपर आदि उन्हें एक और रखती जाएं। जब त्योहारों के लिए घर की सजावट शुरू करें तो इन सामान को इस्तेमाल में लाएं। घर में पहले से जो सामान उपलब्ध हैं, उनका नए तरीके से सजावट में इस्तेमाल करें।

गणपति विघ्नहर्ता हैं, शुभ कार्यों के प्रतीक हैं और परोपकारी हैं। गणपति की मूर्ति का इस्तेमाल आप अपने घर को फेस्टिव लुक देने के लिए कर सकती हैं। गणपति की मूर्ति को अपने घर के किसी ऐसे हिस्से में रखें, जहां सबकी नजर जाए। मूर्ति को खूबसूरत फूलों से सजा दें। आप चाहें तो गणपति के अलग-अलग रूपों की छोटी-छोटी मूर्तियों को अपने घर के

किसी एक हिस्से में सजा सकती हैं। चाहें तो अलग-अलग भगवान-भगवती की छोटी-छोटी मूर्तियों को एक जगह रखें और उसके आसपास गुलाब की पंखुडियां बिखेर कर एक दीप वहां जला दें। ज्यादा मेहनत के बिना ही आपके घर को एक अनोखा त्यौहारी लुक मिल जाएगा ।

घर की सजावट में अगर सिल्क या ब्रोकेड का इस्तेमाल किया जाए तो घर का माहौल अपने-आप त्योहारी हो जाता है। घर की सजावट के लिए आपको खासतौर पर सिल्क या ब्रोकेड के कपड़े खरीदने की जरूरत नहीं है। घर की इस सजावट में आपका वॉर्डरोब आपकी मदद कर देगा। अपने वॉर्डरोब से बनारसी सिल्क साड़ी, बांधनी दुपट्टा या फिर सिल्क स्टोल निकालें और उनका इस्तेमाल घर की सजावट में करें। गुलाबी, बैंगनी जैसे रंगों वाले कपड़े चुनें और इन्हें परदे आदि पर लपेट दें। आप अपने सोफा पर सिल्क की साड़ी को लपेटकर अंत में एक खूबसूरत-सी गांठ भी बांध सकती हैं। अपनी रचनात्मकता का इस्तेमाल करें और नारंगी, गुलाबी, लाल या हरे रंग की एक्सेसरीज का इस्तेमाल घर की सजावट में करें। आपके घर में अगर पीतल का बना सजावट का कोई समान है तो उसे त्योहारों से कुछ दिन पहले निकालकर उस पर पॉलिश करवा दें। अगर पीतल की कोई गहरी थाली है तो उसमें पानी भरकर उसमें कुछ खूबसूरत फूल डाल सकती हैं। तांबे से बना दीप, घंटी या पूजा-पाठ के अन्य सामान का सजावट में इस्तेमाल कर आप अपने घर को त्योहारी लुक दे सकती हैं।

घर को त्योहारी लुक देने में ताजे फूल भी आपका साथ दे सकते हैं। गेंदा, बेला और गुलाब जैसे फूलों का इस्तेमाल घर की सजावट में भरपूर मात्रा में करें। केले के पत्तों का इस्तेमाल आप अपनी डाइनिंग टेबल को सजाने या मूर्ति के नीचे रखने के लिए कर सकती हैं। फूलों की माला का इस्तेमाल दरवाजे और खिड़कियों को सजाने के लिए कर सकती हैं। सिल्क फैब्रिक के साथ फूलों की माला का इस्तेमाल भी आप घर की सजावट में आसानी से कर सकती हैं।

3.2 जन्मदिन

जन्मदिन को पार्टी को सजावट में सर्वप्रथम ध्यान रखने योग्य बातें है कि वह कौन से आयु वर्ग के लिए किया जा रहा है । बच्चों लिए जन्म दिवस पर उत्साही रंगों, उनके प्रिय हीरो, कार्टून आदि का प्रयोग किया जा सकता है वहीं वड़े बुजुर्गों के जन्म दिवस की सजावट में शालीनता होनी चाहिए । किशोरावस्था में चुलबुलाहट रूपी सजावट होनी चाहिए । सभी आयु वर्गों के हिसाब से गुब्बारे फरियों के द्वारा सजावट होना आवश्यक है । चूंकि जन्म दिवस उत्साह का प्रतीक होता है अत : उत्साही रंगों का प्रयोग करना चाहिए । थीम सजावट का प्रचलन आज के आधुनिक युग में काफी है । इसमें किसी भी एक थीम जैसे--पुष्प, कार्टून, सुपर हीरों आदि दे दी जाती है जिसमें पहनावा एवं सजावट भी थीम के हिसाब से की जाती है । जन्म दिवा में केक एवं गुब्बारे का प्रदर्शन होना अत्यंत आवश्यक है ।

3.3 कृष्ण जन्माष्टमी

जन्माष्टमी हिन्दू धर्म का एक पवित्र त्योहार है । पारम्परिक केलेण्डर के अनुसार यह भाद्रपद माह में शुक्ल पक्ष के आठवें दिन मनाई जाती है । उत्तर भारत मैँ यह प्रमुख रूप से मनाईं जाती है । जन्माष्टमी महाराष्ट्र में दही हाडी के लिए प्रसिद्ध है । इस दिन भक्तगण दिन भर उपवास एबं फलहारी व्यंजन का ही सेवन करते है एव अर्धरात्रि कृष्ण के जन्म के पश्चात भोजन ग्रहण करते है । कृष्ण जन्म के उपलक्षुय में झांकियों से घरों एव मंदिरों क्रो सजाया जाता है । झांकियों मैँ कृष्ण भगवान पालने मैँ बैठाए जाते है, क्योंकि ऐसा मानते है कि अर्धरात्रि के समय कृष्ण का जन्म हुआ था और उस वक्त वह शैशवावस्था में होते है । कृष्ण की विभिन्न बाल लीलाओ का भी प्रदर्शन किया जाता है, इसमे दूध, दही, मक्खन को प्रसाद के रूप में रखा जाता है । विभिन्न प्रकार के पुष्पो की माला से झांकी को सजाया जाता है । झांकी में दही हाडी भी रखी जाती है जो इस बात का प्रतीक है कि कृष्ण अपनी मां से छुपकर मक्खन का सैवन करते है । इस लिए रुई का प्रयोग किया जा सकता है । जीवन में उत्साह देने वाले रंगों का प्रयोग किया जाता है ।

3.4 दीपावली

दीपावली हिन्दू कलेण्डर के अनुसार अश्विन पक्ष की अमावस्या को आता है। यह रोशनी का त्योहार है। भारत में दीपावली पांच दिवसीय उत्सव होता है। दीपावली का पहला दिन धनतेरस, जिसमें लोग आभूषण, चांदी एबं सोने के सिक्के खरीदते है। दूसरा दिन रूप चौदस के रूप में मनाया जात्ता है। जिसमेँ लोग उबटन के साथ स्नान करते है। तीसरे दिन मुख्य दीपावली का त्योहार मनाया जाता है। जिसमें लक्ष्मी जी एंव गणेश जी की पूजा की जाती है। इस दिन बंगाल में काली पूजा करते है। पूरे घर में रोशनी दिये, सजावटी लाईटों आदि के माध्यम से की जाती है। इस दिन भगवान राम वनवास से अयोध्या लौटकर आए थे, अत: खुशी के रुप में घी के दीपक जलाये जाते हैं व पटाखे चलाते हैं। दीपावली का चौथा दिन हिंन्दूकलेण्डर के हिसाब से नये वर्ष के रूप में मनाया जाता है पांचवा दिवस भाईदूज के रूप में मनाया जाता है जो कि भाई और बहन के प्यार का प्रतीक है।

दीपावली कि झांकी में लक्ष्मी जी व गणेश जी को बहुत महत्त्व दिया जाता है। इनके आस-पास सारी झांकी का निर्माण होता है,फूलो की मालाओं एवं दीपक का झांकी सजाने में प्रमुख स्थान रहता है। इसमें प्रसाद भी रखा जाता है साथ ही गणेश जी के भोग मे विभिन्न व्यंजनों की थाली भी रखी जाती है। सरस्वती की पूजा हेतु इसमें कापी एवं कलम रखा जात्ता है। पूजा की थाली विभिन्न सुंदर तरीकों से सजाई जाती है। लक्ष्मी जी की पूजा नीचे बैठकर की जाती है अत: दीपावली की सजावट टेबल के स्थान पर जमीन पर होनी चाहिए। सजावट में उत्साहित रंगों का प्रयोग किया जाता है।

फैस्टिव सीजन में हर कोई अपना घर खूबसूरत सजावट और रोशनी से गुलजार करना चाहता है. लेकिन डैकोर के सही तरीकों व तकनीकों के बिना घर की सजावट अधूरी ही रहती है. ऐसे में इस त्योहार पर अपने आशियाने में कैसे लगाएं चारचांद, बता रहे हैं राजेश कुमार.

घर की सजावट से जुड़ी 3 चीजें अहम हैं. आप की पसंद, घर का साइज और आप का बजट. मार्केट में ऐसे औप्शंस की कमी नहीं है जो आप को कन्फ्यूज कर देंगे. जरूरी नहीं है घर की सजावट में सिर्फ नई चीजें ही इस्तेमाल की जाएं, कुछ पुरानी और विंटेज कलैक्शन टाइप चीजें भी आप के घर को एकदम नया लुक दे सकती हैं. दीवाली के मौके पर सजावट के लिए जरूरी सामान की बात करें तो इस में कैंडल्स, फल, दीए, बंदनवार, रंगोली, लाइटिंग, मोटिफ्स, फ्लोटिंग कैंडल्स के अलावा घर के इंटीरियर के लिए रंगीन कुशंस, परदे, प्लांट्स और रंगबिरंगी इलैक्ट्रिक प्रमुख तौर पर काम आती हैं. इन के इर्दगिर्द ही घर की सारी साजसज्जा सिमटती है.

रोशनी से गुलजार आशियाना

दीवाली में सजावट की सब से अहम चीज है रोशनी. चूंकि यह त्योहार ही रोशनी का है इसलिए इस दिन दीप, कैंडल्स और इलैक्ट्रिक लाइट्स वगैरह हर घरमें जगमगाहट भरती हैं. लाइटिंग काफी महत्त्वपूर्ण है, ध्यान रखें कि यह खूबसूरत तो हो लेकिन भारीभरकम रंगों व चुभने वाले प्रकाश वाली न हों. बैडरूम घर का मुख्य भाग होता है, वहां सफेद रोशनी ही करें. इस से आप रिलैक्स फील करेंगे.

घर के किसी कोने को उभारने के लिए ट्रैक लाइट जबकि स्टाइलिश लुक के लिए फेयरी लाइट्स का विकल्प ठीक होता है. इस के अलावा घर के हर कोने में रोज जलने वाले दीए मिट्टी के बने हों और उन पर कुछ पेंट या ड्राइंग कर उन्हें नया लुक दें. दीए के साथसाथ कैंडल की जगमगाहट भी जरूरी है. इसलिए कई रंगों और डिजाइंस की कैंडल्स प्रयोग में लाएं, घर जगमगा उठेगा. लड़ियों और दीयों का कौंबिनेशन भी बनाया जा सकता है. इस का इफैक्ट अच्छा लगता है.

घर का बदलें इंटीरियर

दीवाली पर घर सिर्फ पेंट करने से ही नहीं चमकता. आप घर की दीवारों को कई तरह के वाल पेपर्स और सीनरी के जरिए भी नया लुक दे सकते हैं. फर्नीचर के साथ भी कई क्रिएटिव ऐक्सपैरीमैंट कर सकते हैं. मसलन, ऐंटीक लुक का फर्नीचर आजमाएं. कोई कलर थीम चुन लें और फिर उसी

के अनुसार घर की साजसज्जा करें. मैचिंग का विशेष ध्यान रखें. नक्काशीदार सामान के जरिए भी घर को डिफरैंट लुक दे सकते हैं. कुछ और तरीके भी अपनाए जा सकते हैं, मसलन, घर के पायदान बदल कर नए लगाएं, सोफों के कुशन कवर बदलें, फर्नीचर को रिअरेंज करें, घर के इनडोर प्लांट्स के गमले पेंट करें, परदों का कौंबिनेशन और कलर थीम बदलें, किचन को मौड्यूलर अंदाज में सजाएं.

फूलों से सजेमहके घर

रंग और रोशनी के अलावा फूल डैकोरेशन में नया आकर्षण जोड़ते हैं. दीए तो रात में ही जगमगाते हैं जबकि फूल तो घर को दिनरात सजाते व महकाते रहते हैं. फूलों को घर में कई तरह से सजाया जा सकता है. पानी के टब से ले कर थाली तक, फूल अपने रंग और खुशबू से घर का कोनाकोना महका देते हैं. स्टील के प्लैटर के किनारे पर ताजा फूल रखें और फिर मिठाइयां सजा दें या फिर बेंत की टोकरी ले कर उस में नीचे फूल सजा कर, अलगअलग तरह की ढेर सारी चौकलेट्स भर कर मेज पर रख सकते हैं.

किसी पानी भरे गुलदान में किनारों पर ही फूल या पंख़डियां बिछा कर बीचोंबीच पानी पर तैरते दीए या कैंडल रखने से रोशनी, रंग और खुशबू से आप का आशियाना अलग ही रंगत में रोशन होगा. हां, सजाने से पहले फूलों को ताजा बनाए रखने के लिए फूलों की डंडियों को किसी गहरे बरतन में पानी में डुबो कर रखें, ताकि वे ज्यादा से ज्यादा पानी सोख सकें. जब आप इन की डंडियों को अरेंजमैंट के लिए काटेंगी तो इन का नीचे से जल्दी सूखना शुरू हो जाएगा.

पुराने कांच के डिजाइनर गिलासों, पौट या होल्डर का इस्तेमाल भी किया जा सकता है. फूलों की सजावट के लिए रचनात्मकता और थोड़े से तकनीकी ज्ञान की जरूरत होती है. सजावट के बाद फूलों की नमी बनाए रखने के लिए उन पर पानी छिड़कते रहें.

3.5 क्रिसमस

एक फेस्टिवल है जो प्यार, रोशनी और परंपराओं से मनाया जाता है। क्रिसमस के दौरान सभी इक्ट्ठा होते है और सेलिब्रेट करते है। इस पर्व के दौरान घर को लाइट्स लगाकर सजाया जाता है, क्रिसमस ट्री रखा जाता है। सभी लोग अपने घर की सजावट सबसे अच्छी करने की कोशिश करते है। क्रिसमस की सजावट में कई परंपरावादी चीजें भी होती है जो घर को ज्यादा डेकोरेटेड बनाती है। जैसे - क्रिसमस ट्री को सजाना, सांता तैयार करना, लाइट्स से डेकोरेट आदि।

क्रिसमस के दिनों में लाल रंग का उपयोग सबसे ज्यादा किया जाता है जो सर्दी के दिनों में गर्मी देता है इसके अलावा, माहौल में भी गर्माहट ला देता है। ऐसे ही कई अन्य परंपरावादी तरीके है जो क्रिसमस पर्व के दौरान घर को सजाने के काम में आते है।

क्रिसमस पर घर को इन तरीकों से सजाएं : -

ज्यादा तड़क - भड़क न करें : क्रिसमस एक शांत त्योहार है इसकी सजावट भी ऐसी होनी चाहिए कि वह आकर्षक हो लेकिन ज्यादा चमकीली या तड़क - भड़क वाली न हों। क्रिसमस के डेकोरेशन में मोनोटोन रंगों का इस्तेमाल करें, जैसे - कोबाल्ट ब्लू, सुर्ख लाल आदि। क्रिसमस ट्री को भी रिबन और सिल्वर रंग के बबल से सजाएं।

मेंटलपीस को सजाएं : अपने घर के मेंटलपीस को सजाने के लिए मालाओं, कैंडल और फूलों का इस्तेमाल करें। इससे फर्नीचर वाला रस्टिक लुक आएगा और कमरे में भी ट्रेडिशनल लुक दिखेगा।

टेबल डेकोरेशन : क्रिसमस के दौरान घर की डाईनिंग टेबल पर फलों को सजाएं, आप चाहें तो फलों का पिरामिड भी बना सकते है। क्रिसमस लुक देने के लिए संतरों का इस्तेमाल ज्यादा करें।

पेपर डेकोरेशन : विक्टोरियन काल से, क्रिसमस के दौरान पेपर डेकोरेशन सबसे ज्यादा किया जाता है। इसमें पूरे घर को पेपर की स्टाइलिश कटिंग से सजाया जाता है। इसके अलावा, गिफ्ट की पैकिंग भी अच्छी तरह की जाती है।

हॉलवे आईडिया : अपने घर को हॉलवे तरीके से डेकोरेट करें ताकि आपके घर आने वाले हर मेहमान का स्वागत नए तरीके से हो। आप चाहें तो घर में हरी माला और लाल रिबन का यूज कर सकते है जो माहौल में गर्मी पैदा करेगा और एक ट्रेडीशनल लुक देगा।

वेलकम करता फ्रंट पोर्च : क्रिसमस के दौरान अपने पोर्च को सबसे ज्यादा डेकोरेट करें। पोर्च को सुंदर लाइट पीस से सजाएं, इससे राजसी लुक आएगा। चाहें तो छोटे - छोटे पाइन ट्री पर लाइट लगा कर रख लें।

शानदार झूमर : क्रिसमस के दौरान अपने घर के ड्राईंग रूम में एक सुंदर सा झूमर लगाएं। झूमर के आसपास कई लाइट्स भी लगाएं, इससे रूम में अच्छा लगेगा।

लीविंग रूम को सजाएं : झूमर लगाने के अलावा भी अपने लीविंग रूम को और सजाएं। सभी फर्नीचर को प्रॉपर क्लीन करें, उन पर नए और डार्क कलर के कुशन व कवर लगाएं। डार्क शेड के पर्दे लगाएं। कालीन बिछाएं। इस तरह आप क्रिसमस के दौरान अपने घर को पारंपरिक तरीके से सजा सकते है।

क्रिसमस के दौरान सीढ़ियों को सजाना काफी मजेदार काम है और आप इसे खूबसूरत रूप भी दे सकते हैं। आउटडोर डेकोरेशन, ट्री डेकोरेशन और मैन्टल डेकोरेशन के बाद सीढ़ी के डेकोरेशन की बारी आती है। सीढ़ी की सजावट के बाद पूरे घर की सजावट और भी बेहतर नजर आने लगती है। वैसे तो सीढ़ियों का डेकोरेशन कोई मुश्किल काम नहीं है, पर आज हम आपको कुछ ऐसे तरीके बता रहे हैं, जिससे आपका काम आसान हो जाएगा।

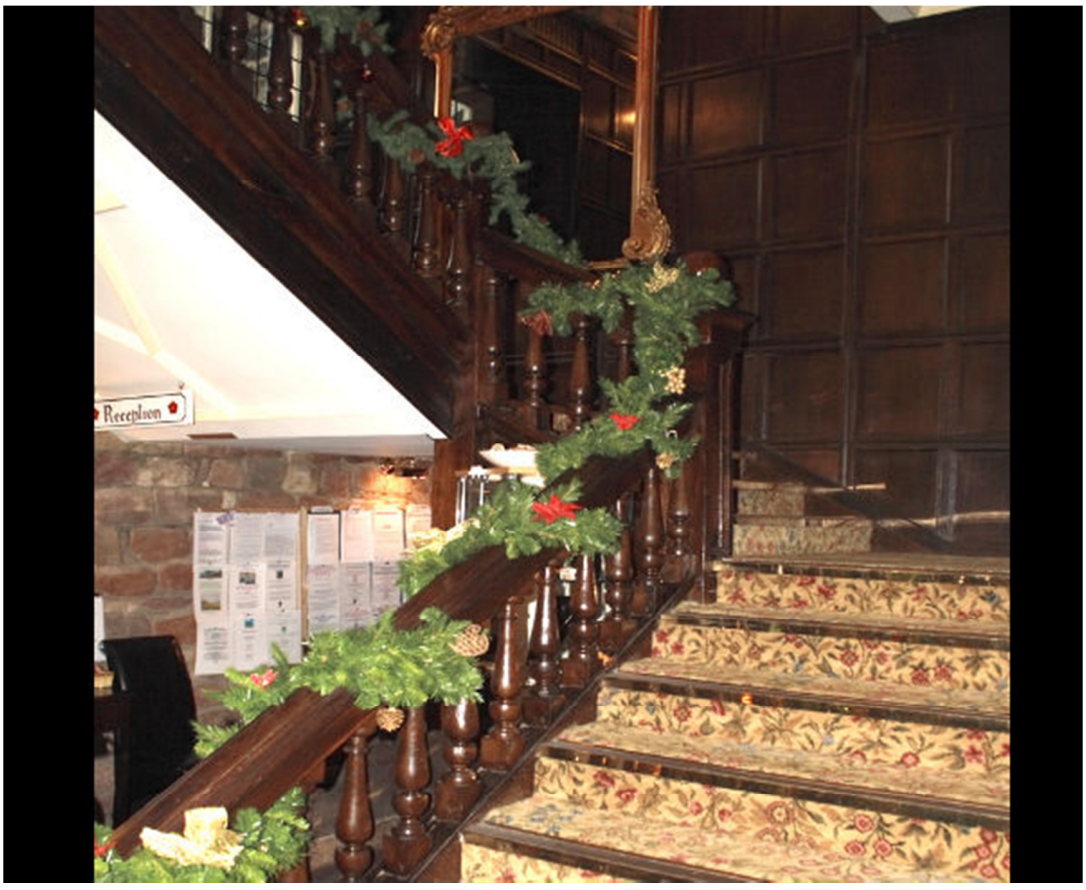

1. परफेक्ट लुक: चाहे आपके घर में पुरानी लकड़ी की सीढ़ी हो या फिर मॉर्डन सीढ़ी, आप क्रिसमस की लड़ी के जरिए इसे परफेक्ट लुक दे सकते हैं। क्रिसमस की लड़ी लगाने से क्रिसमस का फील आता है और सजावट की खूबसूरती और भी बढ़ जाती है। हालांकि सजावटी सामान खरीदने से पहले यह जरूर देख लें कि आपके घर की सीढ़ी किस तरह की है। वैसे क्रिसमस की लड़ी आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प रहेगा। इसलिए इसे लगाने से कभी न चूके।

2. ब्राइटनेस के लिए लगाएं लाइट: लड़ी लगाने के बाद आपको लाइट लगाने की जरूरत पड़ेगी। बैनिस्टर के चारों और आप छोटे—छोटे लाइट लगाकर अपनी सीढ़ी को और खूबसूरत बना सकते हैं। इससे सीढ़ी की सजावट में चमक आती है। क्रिसमस की लड़ी के बीच से आती रोशनी आंखों को सुकून देने वाली होती है। इसे आप जरूर ट्राइ करें।

3. साफिस्टिकेशन: अगर आप कपल के साथ रहे रहे हैं तो निश्चित रूप से आप सजावट में रोमांटिक लाइट भी लगाना चाहेंगे। इसके लिए आप मूड बेहतर बनाने वाले लाइट का इस्तेमाल कर अपने डेकोरेशन को सॉफिस्टिकेट बना सकते हैं। अगर सीढ़ी की साज सज्जा चमकीली और सॉफिस्टिकेट हो तो इसे हर कोई पसंद करता है। अपनी सीढ़ी की साज सज्जा को रोमांटिक लुक देने के लिए आप इसमें रिबन, सफेद लाइट और हरी लड़ी जोड़ सकते हैं।

4. नए प्रयोग करें: अगर आप सीढ़ियों की परंपरागत साज सज्जा से बोर हो गए हैं तो आपके लिए तड़क—भड़क वाली साज—सज्जा अच्छी रहेगी। लोग आमतौर पर ताजी लड़ी का चुनाव करते हैं और इसे बैनिस्टर के चारों और लगाते है। हालांकि बेहतर साज सज्जा के लिए आप आर्टिफियल लड़ी का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। परंपरागत लोग हरी लड़ी को पसंद करते हैं, वहीं फंकी स्टाइल वाले लोग मेटेलिक लड़ी को प्राथमिकता देते हैं। सीढ़ियों से सजाने में संतरा, गुलाबी और चमकीला गुलाबी रंग जादुई असर करता है। इसके अलावा आप लड़ी के साथ—साथ जगमगाती लाइट भी लगा सकते हैं।

5.आभूषण का करें इस्तेमाल: आप अपने डेकोरेशन को अलग रूप देने के लिए आभूषण का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर पेड़ को सजाने के बाद क्रिसमस आभूषण बच गए हैं तो आप इसका इस्तेमाल सीढ़ियों की सजावट में कर सकते हैं। क्रिसमस की लड़ी में जब आप 20 से 30 आभूषण लगाएंगे तो सीढ़ी की खूबसूरती देखते ही बनेगी। इस पतले आभूषण का जगमगाती लाइट के साथ तालमेल हर किसी का ध्यान अपनी और खींचेगा।

3.6 अभ्यास प्रश्न

- दीपावली पर आप अपने घर की सजावट किस प्रकार से कर सकेंगे

3.7 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 4

धातु की सफाई एंव पालिश

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 एलुमिनियम

4.3 स्टील

4.4 ताम्बा

4.5 पीतल

4.6 कांस्य

4.7 चांदी

4.8 कांच

4.9 लकड़ी

4.10 सोना

4.11 सिरेमिक

4.12 अभ्यास प्रश्न

4.13 संदर्भ ग्रन्थ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र विभिन्न धातु की सफाई एंव पालिश के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

4.1 प्रस्तावना

रसोई मे प्रयोग आने वाले बर्तनों तथा उपकरणों को पर्याप्त देखभाल द्वारा लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है । भारतीय घरो में विभिन्न प्रकार के धातुओं के बने बर्तनों का प्रयोग किया जाता है, जैसे-चांदी, एल्युमिनियम, स्टेलनेस स्टील, पीतल, लोहा, कांच, चीनी, मिट्टी

इत्यादि । इन बर्तनों को विशिष्ट तरीके से, साधनों द्वारा क्रमबद्ध तरीके से साफ करना चाहिए । घरों में सामान्यतया उपयोग में आने वाले विभिन्न पदार्थों से निर्मित वस्तुओं व उपकरणों की देखभाल व रखरखाव की विशिष्ट विधियो निम्न प्रकार है—

4.2 एल्यूमिनियम

भारतीय घरों से प्रयुक्त एल्यूमिनियम के बर्तन दो स्वरुपों में मिलते हैं :

(1) स्टेम्पड बर्तन जो कि एल्युमिनियम कि मोटी चादर से बनते है, जैसे-मापक कम तथा चम्मच, छलनी, कद्दूकस इत्यादि

(2) कास्ट बर्तन इस प्रकार के बर्तनों का आधार जैसे-यापक क्रम तथा चम्मच, उतनी, कदूदूकस इत्यादि

(3) कास्ट बर्तन इस प्रकार के बर्तनो का आधार कास्ट लोहे का होता हैं जिसमे पिघला हुआ एल्युमिनियम डालकर बनाया जाता है ।

सफाई की विधि :

इन बर्तनों को गर्म पानी व साबुन से साफ किया जा सकता है । इन्हें साफ करने के लिए राख का इस्तेमाल भी किया जा सकता है । इन बर्तनों पर लवण या क्षार का प्रयोग नहीं करना चाहिए जैसे कि, सोडा क्योंकि सोडा एल्यूमिनियम को क्षतिग्रस्त कर सकता है । यदि एल्यूमिनियम के बर्तनों पर धब्बे पड़ जाते हैं तो इन धब्बो को उबले हुए सेब के छिलकों द्वारा हटाया जा सकता है और सफेदी द्वारा रगड़कर इन पर पॉलिश की जा सकती है । यदि ये बर्तन चिकने हो तो इन्हें गर्म पानी से धो सकते हैं । इन्हें साफ करने के लिए स्टील वूल या नारियल के रेशों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं, या इन्हें इमली या नींबू से भी साफ कर सकते है । आंतरिक सतह पर बहुत अधिक धब्बे हो तो उसमें पानी व सिरका मिलाकर लगभग आधे घण्टे तक उबालना चाहिए । जब धब्बे हट जाये तो इन्हें ठण्डे पानी से धोना चाहिए और फिर सूखे कपड़े से पोंछ लेना चहिए ।

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पोलिश	टीप्पणी

सफाई हेतु : 1.साबुन युवत्त गरम जल 2.स्वच्छ जल 3.ब्रश/स्टील वूल 4.साफकपड़ा पॉलिश हेतु: 1.व्हाइर्टिंग पाउडर 2.कपड़े का टुकडा 3.डस्टर ध्ब्बे छुड़ाने हेतु: 1.स्टीलवूल	1.बर्तन चिकनाईंयुक्त है तो तेज गरम अन्यथा ठण्डे पानी में भिगाएं 2.साबुन युक्त गरम जल में ब्रश की सहायता से साफ करें 3.धब्बे छुडाने हेतु स्टील वूल का प्रयोग करें 4.स्वच्छ जल में धोएं 5॰कपडे से पोंछ कर साफ करें।	1.कपड़े के टुकडे से बाहरी सतह पर व्हाइर्टिंग पाउडर लगाएं 2.डस्टर से रगड़ कर साफ करें	1.स्रोडा का प्रयोग एल्युमिनियम को कल कर देताहै। 2.पकाने के बर्तन को अन्दर से करें

लोहे से स्टील हल्की होती है और इसे किसी भी स्वरूप में ढाला जा सकता है। भारी स्टील जिसमें 1 प्रतिशत कार्बन होता है का प्रयोग चाकू, छुरी में किया जात्ता है जहां काटने के लिए तीखे किनारों की आवश्यकता होती है। जबकि मुलायम स्टील में 0.1

प्रतिशत कार्बन होता है जिसका प्रयोग बर्तन बनाने के लिए किया जाता है।

सफाई विधि :

आवश्यक	सफाई कि	पॉलिश	टिप्प्णी

सामग्री	विधि		
1.साबुन युक्त गरम जल 2.ब्रश/स्टील वूल 3.डस्टर 4.साफ कपड़ा पॉलिशहेतु: 1.व्हाइटिंग पाउडर 2.कपड़े का टुकडा 3.डस्टर	1.बर्तन चिकनाईं युक्त है तो तेज गरम अथवा ठंडे पानी में भिगोए । 2.साबुन युक्त गरम जल में डुबोकर ब्रश या स्टील वूल से साफ करे 3.स्वच्छ जल में धोएं 4.कपड़े से सुखाएं	1.पॉलिश हेतु मोटे कपड़े के टुकड़े से व्हाइटिंग पाउडर लगाएं । 2.डस्टर से रगड़े ।	1.चिकनाईयुक्त बर्तनों की सफाई हेतु सोडा का उपयोग किया जा सकता है

4.3 स्टील कटलरी:

सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई कि विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाइ हेतु: 1.सोडायुक्त जल 2.अखबार 3.तेज गर्म साबुन का पानी 4.सूती कपडा	1.कटलरी को अखबार से पोंछ कर चिकनाई हटाएं 2.सोडा युक्त गरम पानी में	1.नाईफ बोर्ड पर रखकर नाईंफ़ पॉलिश लगाएं 2.गहरे धब्बे हटाने हेतु कॉर्क	1. स्टील वूल का उपयोग किया जा सकता है

5.सोडा 6.स्टील बुल 7.नाइफ क्लॉथ **पॉलिश हेतु:** 1.डस्टर 2 . नाइफ पॉलीश 3 . नाइफ बोर्ड 4॰कार्क या आलूका टुकडा 5.नाइफ मशीन	डुबोएं 3.अब साबुन के पानी में साफ करे 4.स्वच्छ पानी से साफ करे 5.साफ कपड़े से पोंछे	या आलू के टुकडे का उपयोग करें	

4.4 लोहा

लोहा दो स्वरूपों में प्राप्त किया जा सकता है- (1) कास्ट लोहा (2) शीट लोहा ।

कास्ट लोहा अपेक्षाकृत अधिक भारी होता है तो आसानी से इसका क्षरण हो जाता है । गीले लोहे पर लगी जंग लाल आयरन ऑक्साइड की होती है । इस प्रकार के बर्तनों को साफ करते समय यदि चिकने हो तो उन्हें पहले कागज या अखबार से पोछना चाहिंए । फिर स्टील वूल कि सहायता से गर्म साबुन के पानी का इस्तेमाल करना चाहिए । तत्पश्चात इसे ठण्डे पानी में धोकर सुखाना चाहिए । वर्तन कि सतह पर कुछ मात्रा में चिकनाई लगाने से इसे जंग लगने से बचाया जा सकता है । लोहे के बर्तनो की सतह पर कालिख जम जाती है इसे सावधानीपूर्वक हटाना चाहिए । भारतीय घरों में लोहे के बर्तनों को राख से रगड दिया जाता है जिससे पैंदे पर जमी कालिख को आसानी से हटाया जा सकता है

स्फार्हेतु:	1.यदि बर्तन	1 एमरी पेपर से	1 बर्तन को नमी

1 गर्म साबुन युक्त जल 2 स्वच्छ गुनगुना पानी 3 . चिलमची 4 . स्कबर 5 . नम कपडा 6 . ईट 7. ब्रिक पाउडर पॉलिश हेतु 8 . एमरी पेपर धब्बे छुढानेहेतु: 1 . स्टील स्कबर 2 . ब्रिक पाउडर	बहुत चिकनाईयुक्त हो तो तेज गर्म अन्यथा गुनगुने पानी में डुबोएं 2 .गरम साबुनयुक्त जल में स्कबर कि सहायता से साफ करे 3 ईट, स्कबर या ब्रिक पाउडर का उपयोग करते हुए धब्बे छुड़ाएं	रगड़े 2 बाद में कपड़े से पोंछे 3 कुछ बूंदें गरम सरसों के तेल की लगाकर साफ सूखे कपड़े से पोंछ दे । इससे जंग नहीं लगेगी	से दूर अच्छी तरह सुखा कर रखे 2 जंग से बचाव हेतु सरसों का तेल लगाए

गेल्वेनाइज्जड आयरन

इसका प्रयोग सिर्फ सिंक तथा बाल्टी बनाने में किया जाता है । गेल्वेनाइज्जड आयरन को भी कास्ट आयरन के समान की सांफ किया जाता है । जंग से बचाव के लिए बर्तन की सतह पर तेल की कुछ बूंदें फैलानी चाहिए ।

सफाई विधि:

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पौलिश	टिप्पणी
सफाईहेतु: 1 गर्म साबुन युक्त जल	1. गर्म साबुन के पानी में साफ करे 2 चिकनाई होने		1.अच्छी तरह सुखा कर रखे 2.क्ले व नदी की

2 सोडा 3 नेट का कपडा या फ्लोर कपडा 4 .साफज़ल 5 .पैरांफिन 6. अखबार धब्बे छुड़ाने हेतु: 1.झावा 2. रेत	पर सोडा मिलाएं 3 बाथ ब्रिक या रेत से रगड़कर दाग- धब्बे छुड़ाएं 4 .नेट के कपड़े या फ्लोर कपड़े से रगड़कर साफ करें 5.स्वच्छ पानी से साफ करें 6 .कपड़े से पोंछ कर सुखाएं 7 . अखवार व पैरांफिन से साफकरें 8 . स्वच्छ गरम जल से धोएं 9 .कपड़े सै पोंछे		मिट्टी मिलाकर बाथ बिक्र पाउडर तैयार किया जाता हैं ।

4.5 तांबा

इसका प्रयोग बिजली के तारों में होता है । बर्तनों में इसका प्रयोग न्यूनतम होता है । इसका प्रयोग स्टेनलैस स्टील के बर्तनों के पैंदे प्लेर्टिंग के लिए होता है । तांबे के बर्तनों पर से धब्बो को हटाने के लिए नमक तथा सिंरके का प्रयोग किया जाता है

4.6 पीतल

यह काँपर तथा जिंक कि मिश्रित धातु है और इसमें संक्षारण के प्रति अधिक प्रतिरोधकता होती है। भोजन पकाने के बर्तनों की

अपेक्षाकृत्त इसका प्रयोग सजावटी सामान बनाने में होता हैं। तांबा तथा पीतल कार्बन आँक्साइड गेस की उपस्थिति में मलीन होकर जंगार बनाते हैं, जो कि एक विषाक्त काबोंनेट है। यदि इस धातु पर बहुत अधिक धब्बे पड़ गये हो तो इसे स्त्रोडे के घोल से धोना चाहिए। पीतल तथा कांसे की साधारण सफाई के लिए इमली के पानी का इस्तेमाल किया जा सकता है। नारियल के छिलके की सहायता से इंट के बारिक चूरे का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। तत्पश्चात इसे ठंडे पानी मे धोकर सुखाया जा सकता है। पीतल के बर्तनो के लिए नीबू का रस या सिरका या विम पाउडर का इस्तेमाल किया जा सकता है। पीतल के बर्तनों पर धब्बो को कटे हुए नींबू पर नमक लगाकर साफ किया जा सकता है। सुखाने के पश्चात इन पर ब्रासो पॉलीश करनी चाहिए। घर में ब्रास फिटिंग जैसे दरवाजे की कुण्दिया, हैण्डल, नल आदि को साफ करके ब्रास्त्रो पॉलिश करनी चाहिए। बहुत अधिक पॉलीश का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे वस्तुएं चिपचिपी हौ जाती हैं और कम चमकती है पीतल के गहनों को पहले गर्म साबुन के पानी से धोना चाहिए, तत्पश्चात गहनों क्रो साफ पानी से धोना चाहिए, फिर साफ शुष्क कपड़े की सहायता से सुखाना चाहिए और फिर इस पर ब्रासो पॉलिश करनी चाहिए

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1 . इमली/नींबू/स्त्रोडा 2 . नमक 3 . ब्रिक पाउडर 4 . डिटर्जेन्ट 5 . गरम जल	1.इमली को गर्म जल में 10-15 मिनट तक भिगोकर गाढा पेस्ट तैयार करे 2 . वस्तु को गर्म जल व डिटर्जेन्ट	1 . स्वच्छ डस्टर से वस्तु को अच्छी तरह सुखाएं 2 . नरम वस्त्र को सहायता से	1 . सिर्फ बाहरी सतह पर पॉलिश करे 2 . पकाने के बर्तन पर व्यावसायिक पोलिश का

6 . नारियल रेशे 7 . मखमल का कपड़ा 8 . डस्टर पॉलीश हेतु: 1 . व्हाइटिंगपाउडर 2 . मखमल का कपडा 3 . पॉलिश हेतु कपडा धब्बे छुड़ाने हेतु: 1 . इमली का पानी व नमक 2 . नीबू	से साफ करे 3 . इमली/नींब्रूरस व नमक का पेस्ट लगाकर 5 - 10 मिनट छोड़ दें 4 . नारियल के रेशे व ब्रिक पाउडर से रगड़े 5 . पुन:साब्रुनयुक्त गर्म जल से साफ करे 6 . साफ जल सै धोएं 7 . मखमल के वस्त्र हैं पोंछ कर सुखा लें	शुष्क व्हाइर्टिग पाउडर लगाएं 3. पॉलिश वस्त्र से रगड़ कर चमकाएं	प्रयोग नहीं करे 3 . व्हाइटिंग पाउडर शुष्क रूप में प्रयोग करे

4.7 कांस्य तथा गन मैटल:

कांसा, कॉपर तथा टिन की मिश्रित धातु है । पुराने समय में इनका प्रयोग बर्तनों के लिए किया जाता था । आजकल इस धातु का प्रयोग सजावटी सामान के लिए किया जाता है । गन मैटल कॉपर तथा सिलिकान या कॉपर तथा जिंक को मिश्रित धातु है सामान्यतया इसका प्रयोग भत्ते की आन्तरिक सतह के लिए किया जाता है । इन धातुओं को भी पीतल के समान की साफ किया जाता है ।

4.8 चाँदी

चाँदी का प्रयोग गहने, कटलरी, टी सैट, कोल्ड ड्रॉक सैट तथा सजावटी सामान बनाने में किया जाता है । इन्हें धोने के लिए गर्म साबुन के पानी का प्रयोग करना चाहिए । चांदी के बर्तनों पर नमक के प्रयोग द्वारा अण्डे के धब्बो को हटाया जा सकता है । इन्हें साफ करने के लिए वाईर्टिंग को पानी में घोलकर बने पेस्ट का इस्तेमाल किया जा सकता है । इन्हें साफ करने के लिए तनु अमोनिया या मिथाइलेटेड सिप्रिट का इस्तेमाल किया जा सकता है । चांदी के बर्तनों को उबले हुए स्रोडे से भी किया जा सकता है इलेकट्रो प्लेतिड सामान जो कि सफेद धातु के बने होते हैं और जिन पर चांदी को परत चढी रहती है उन्हें अतिविशिष्ट देखभाल कि आवश्यकता होती है , क्योंकि इस प्रकार के बर्तनों में कई धातुओं का समावेश होता है । चांदी पर अम्ल का प्रयोग नहीं करना चाहिए । चांदी सल्फर कि उपस्थिति में मलिन होकर सल्फर स्रल्फाइड बनाता है । इस पर कमोइस लेदर या सिल्वो पॉलिश को जा सकती है ।

सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1.एल्यूमिनियम का बर्तन 2 . धुलाई का सोडा 3 . नमक 4 . गर्म जल 5 . डिटर्जेन्ट **पॉलीश हेतु:** 1. व्यावसायिक	1. साबुन युक्त गर्म पानी से साफ करे 2.चांदी कि वस्तु को गर्म पानी युक्त एल्यूमिनियम के बर्तन में रखें । इसमें एक चम्मच धुलाई का सोडा और	1 .पाउडर को ज़ल/अमोनिया/ मेथिलेटिड स्प्रिट मिलाकर पतला पेस्ट बनाएं 2 .कपड़े को सहायता से इस पेस्ट कि पतली परत चांदी की वस्तु पर एक साथ लगाएं व	चाय कि कैत्तली के अंदर धब्बे छुडाने हेतु उसमें गर्म पानी जिसमें एक चम्मच सोडा या बोरेक्स मिला हो , डाला जाता है । पानी ठण्डा होने तक इसे

पंक्तिया 2 . पॉलिश हेतु कपडा 3 . केमोईस लेदर 4 . मखमल का कपड़ा	एक कहछि नमक प्रति एक लीटर पानी के अनुसार डालें । इसे 10 - 15 मिनट तक उबाले 3.कोई काले धब्बे हो तो स्प्रज या प्लास्टिक ब्रश से घिसें 4 . साफ जल से धोएं 5 . वस्तु को सुखा लें	सूखने दे 3 .सूखे डस्टर कि सहायता से पॉलिश उतार दें 4. पॉलिश करने वाले वस्त्र या केमोईस लेदर से ब्रश करे तरल पॉलीश: 1 .बोतल अच्छी तरह हिलाकर कपड़े के दुकड़े से तरल को वस्तु पर लगाएं व सूखने दें 2 .डस्टर कि सहायता से पॉलिश उतार कर लेदर या वस्त्र से चमकाएं व्यावसायिक वस्त्र 1 . वस्तु पर उपरोक्त वस्त्र घिसें	पड़ा रहने दें । फिर ब्रश व कपड़े की सहायता से साफ करे जरुरत होने पर यह प्रक्रिया दो बार करे 2 . व्यवसायिक वस्त्र एक फलालेनमुना वस्त्र है जो व्हाइर्टिग, ज्यूलर रूज व एक वाष्पशील तरल में भीगा रहता है । इसे कभी धोना नहीं चाहिए ।

		2 . लेदर या पॉलिश वस्त्र से ब्रश करे	

4.9 कांच

इसका प्रयोग मुख्यतया खिड़की, दरवाजों व गिलास इत्यादि के लिए किया जाता है । काँच में संबाहकता कम होती है परंतु यह ऊष्मा को पर्याप्त मात्रा में अवशोषित करता है । यदि कांच पर दूध का धब्बा लग जाये, तो इसे ठण्डे पानी से तुरन्त धो देना चहिए । तत्पश्चात इसे गर्म साबुन के पानी से धोना चाहिए, फिर साफ़ पानी से धोकर सुखा लेना चाहिए । सप्ताह में एक बार कांच को सूखे कपडे से रगड़ना चाहिए । और अन्त में इसे नरम कपड़े या टिशूपेपर से साफ करना चाहिए । धब्बो को हटाने के लिए ग्लास क्लेन्जेंट का प्रयोग किया जाता है ।

शीशा सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1 . गर्म जल 2 . मेथीलेटिड स्प्रिट 3. अखबार या केमोईस लेदर 4 . स्पंज क्लीनर	1 .कांच को साफ डस्टर या लिनन वस्त्र से पोंछे 2 .बाहरी फ्रेम को उसके पदार्थ अनुसार साफ करे 3 .शीशे को पानी से साफ करते समय ध्यान रखें कि पानी फ्रेम के		

	बीच नहीं जाएं 4.मेथीलेटिड स्प्रिट रगड़े 5 .अच्छी तरह सुखाकर अखबार या केमोईस लेदर से पॉलिश करे		

कांच कई बर्तन सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1. गर्म जल 2 साबुनयुक्त गर्म जल 3 .सोडा 4 .स्टील वूल 5 .डस्टर	1 चिकनाईयुक्त होने पर गर्म अन्यथा ठण्डे जल में भिगाएं 2 साबुनयुक्त गर्म पानी में धोएं 3.स्टील वूल का प्रयोग करें 4 .ठण्डे जल से धोएं 5 . डस्टर से पोंछ कर सुखाएं		1. बर्तन के अधिक गदे या चिकनाईयुक्त होने पर सोडा युक्त जल का प्रयोग करें!

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
1.साबुनयुक्त जल 2.स्पंज 3.अखबार 4.साफ करने हेतु पदार्थ जैसे-प्रयोग की हुई चाय पत्ती, व्हाइटिंग तरल (व्हाइर्टिंग + अमोनिया+जल) 5.मेथिलेतिद स्प्रिट	1.साफसूती वस्त्र से पोंछकर उपर से 'टिशू पेपर/अखवार या केमोईस लेदर से रगड़े 2 गीले स्पंज से साफ करने पर अच्छी तरह अखवार से पोंछ कर सुखा दे अन्यथा पानी के धब्बे पड़ सकते हैं 3.चमक हेतु व्हाइटिंग तरल का पेस्ट मखमल वस्त्र की सहायता से लगाएं 5-10 मिनट सूखने दे । अखवार या केमोईस लेदर की सहायता से रगड़ें 4. व्यवसायिक तौर पर उपलब्ध		1.धब्बे छुडाने हेतु मेथींलेटि स्प्रिट का प्रयोग किया जा सकता है 2.ईनेमल/पेंट के धब्बे छुडाने हेतु तारपीन तेल का प्रयोग करें 3.चिकनाईयुवत्त खिडकी कि सफाई करते समय पानी में थोडा अमोनियम मिलाया जा सकता है

	क्लीनर को लगाकर अखबार से पोंछ कर भी साफ कर सकते हैं		

प्लास्टिक : ये भार में हल्के परन्तु मज़बूत, रंगीन, नमी प्रतिरोधक तथा ऊष्मा एवं विद्युत के अच्छे इन्सूलेटर होते हैं । इन्हें साफ करना अत्यन्त आसान होता है

इस समूह से बने सभी पदार्थों पर उष्ण, नमी तथा स्केच का कोई प्रभाव नहीं पड़त्ता । प्लास्टिक की देखभाल प्लास्टिक को हल्के साबुन या डिटरजेट से आसानी से धोया जा सकता है । स्टील वूल या सेंड पेपर से प्लास्टिक की सतह पर स्क्रेच आ जाते है।

सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1.साबुनयुक्त गर्म जल 2. दो साफ नरम डस्टर 3. मोनिया/मेथिलेडिट स्प्रिट 4. नमक 5. तरल मोम	1. साबुनयुक्त गर्म जल में 10-15 मिनट डुबोएं 2. नरम ब्रश या स्कबर से धीरे-औरे	1. चमक लाने हेतु त्तेल की बूंद डालकर नरम स्वच्छ डस्टर हैं रगडे	1 . धब्बे छुडाने हेतु अमोनिया/सिरका/तारपीन/मेथीले स्प्रिट मसले । 2. बहुत तेज गर्म जल के प्रयोग से बचे 3.खुरचने हेतु तीखी चीज का प्रयोग नहीं करें

पॉलिश 6. नरम ब्रश 7.तेल- ओलिव या सरसों	रगड़े 3. स्वच्छ जल से धोएं 4 . सुखाएँ		

चमडा सफाई विधि :

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
सफाई हेतु: 1. रोजमर्रा की सफाई हेतु 2 साफ डस्टर 2. मासिक सफाई हेतु अ.साफ डस्टर या नरम ब्रश ब. गर्म साबुनयुक्त जल स. लेनोलीन तेल द.सिरका/लिगसीड	1. दैनिक सफाई हेतु डस्टर से अच्छी तरह पोंछे । किनारों फोल्ड व सिलाई का विशेष ध्यान रखे विद्युत चालित वैक्यूम क्लीनर प्रयोग कर सकते हैं 2. ज्यादा	1. अच्छी फ़र्नीचर पॉलिश या क्रीम का प्रयोग करें 2. शूक्रीम का प्रयोग कर सकते हैं 3.मोम/त्तारपीन/बैसलीन लगाएं	1.चमक हैतु लेनोलीन तेल व केस्टर तेल अच्छे रहते हैँ 2. सूखने पर चमड़े में दरारें आने लगती हैं, अत: पॉलिश आवश्यक है

तेल य. फलालेन वस्त्र र. मोम ल. शू क्रीम	गंदा होने पर साबुन युक्त गर्म जल में डुबोएं व निचुड़े वस्त्र से पौछें 3. गंदा होने पर लिनसीड तेल व सिरका 2 :1 के अनुपात में मिलाकर मसलें 4. बहुत गंदा होने पर गुनगुने साबुन के पानी में धोकर सुखाएं		3. धूप में भी चमडा ख़राब होता है।

4.10 लकडी सफाई विधि

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी

सफाई हेतु: 1. नर्म यश 2. नर्म डस्टर 3. साब्रुनयुक्त गर्म जल 4. शुष्क डस्टर विशिष्ट पकाई हेतु: 1. स्टील वूल 2. तारपीन या उसका समरूप पॉलीश हेतु: 1. पॉलिश 2 . पॉलिश वस्त्र 3 . दो डस्टर	1. नर्म ब्रश से मिटूटी हटाए 2. नर्म डस्टर से पोंछे 3. गहरे धब्बे को साब्रुनयुक्त गर्म जल से साफकरें 4. शुष्क डस्टर से अच्छी तरह पोंछे 5. जमी हुई चिकनाईयुबत्त गंदगी हटाने के लिए स्टील वूल और तारपीन या उसके समान अन्य वस्तु की सहायता से धीरे-धीरे रगड़े व बाद में पॉलिश करे	थोड़ी सी पॉलिश लगाकर पॉलिश वस्त्र या शुष्क डस्टर की सहायता से अच्छी तरह रगड़ें	1. सख्त ब्रश का इस्तेमाल नहीं करें । इससे लकडी के खराब होने की संभावना रहती है 2. बहुत तेज गर्म जल का प्रयोग करने से लकडी नरम होकर फूल सकतीहै। 3. लकडी को अधिक समय तक गीला नहीं रहने दें

4.11 सोना सफाई विधि:

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी

सफाई हेतु: 1.साबुनयुक्त गर्म जल 2. स्वच्छ गर्म जल 3. नर्म ब्रश 4. फलालेन का वस्त्र 5. स्वच्छ नरम लिनन वस्त्र पाँलिश हेतु: 1.केमोईस लेदर या व्यावसायिक वस्त्र 2.प्लेट ब्रश 3.स्वच्छ नर्म डस्टर	1 गर्म साबुनयुक्त जल में धोएं 2. नर्म ब्रश की सहायता से फंसी गंदगी निकाले 3. स्वच्छ जल से धोएं। 4. नर्म लिनन वस्त्र से पोंछे।	व्यवसायिक वस्त्र या केमोईस लेदर से हल्के हाथों से रगड़ें 2. नर्म स्वच्छ डस्टर से साफ करें	1. यदि स्वर्ण वस्तु में स्टोन लगे हो तो उसे वहुत ध्यान से धोएं।

4.12 सिरोमिक बर्तन सफाई विधि:

आवश्यक सामग्री	सफाई की विधि	पॉलिश	टिप्पणी
1. गर्म जल 2.साबुनयुक्त गर्म जल 3.सोडा 4.स्पंज या सूती		1.बर्तन से खाद्य अवशेष हटाएं 2.जल से धोएं 3.वस्तु को जल में भिगोएं	1.गर्म सिरके में भिगोकर चाय के दाग मिटाएं जा सकतें है

वस्त्र 5.प्लास्टिक टब		चिकनाईयुक्त होने पर जल में सोडा मिलाएं या गर्म जल प्रयोग करें 4.स्पंज या सूती वस्त्र की सहायता से साबुनयुक्त गर्म जल से साफ करें 5. स्वच्छ जल से साफ करें व सुखाएं	

4.13 अभ्यास प्रश्न

1. विभिन्न धातु की सफाई एंव पालिश के बारे में जानकारी दीजिये

4.14 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा

2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 5

रंगोली व अल्पना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 रंगोली

5.3 अल्पना

5.4 अभ्यास प्रश्न

5.5 संदर्भ ग्रन्थ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र रंगोली और अल्पना के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे |

5.1 प्रस्तावना

प्राचीन काल कि गुफाओं से लेकर मोहनजोदडो व हडप्पा संस्कृति को खुदाई से प्राप्त बर्तनों, मुद्राओं आदि पर किसी न किसी रूप में हम अंकन कला के चिन्ह पाते है । इसके अतिरिक्त भूमि अलंकरण का यह रूप आर्यों के वैदिक जुडा ही साथ के कर्मों यज्ञादि-हुआ हमें मिलता है । यज्ञ को वेदी को विभिन्न तरह की रेखाओं, त्रिक्रोणों, वृत और आयातों में अनाजों, आटे, हल्दी, कुमकुम व फूल पत्तियों से सजाया जाता था ।

वर्तमान शहरी समाज में किसी सार्वजनिक उत्सव या पर्व पर अतिथियों के आगमन पर उनके स्वागत के लिए हम मांडने, अल्पना या रंगोली आदि सजाते ही हैं । इसके अतिरिक्त अपने पारम्परिक रूप में ग्रामीण समाज में भी हम इस परम्परा को गहरी जड़ें पाते है । त्यौहारों, व्रत, अनुष्ठान, पूजा, उत्सव, विवाह तथा पुत्र जन्म आदि के अवसर पर मांडने बनाने की परम्परा हमारे देश में सर्वत्र प्रचलित है, जिनके पृथक-पृथक जगह पृथक-पृथक नाम है ।रंगोली धार्मिक, सांस्कृतिक आस्थाओं की प्रतीक रही है। इसको आध्यात्मिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है।तभी तो विभिन्न हवनों एवं यज्ञों में 'वेदी' का निर्माण करते समय भी माँडने बनाए जाते हैं। ग्रामीण अंचलों में घर-आँगन बुहारकर लीपने के बाद रंगोली बनाने का रिवाज आज भी विद्यमान है। भूमि-शुद्धिकरण की भावना एवं समृद्धि का आह्वान भी इसके पीछे निहित है। अल्पना जीवन दर्शन की प्रतीक है जिसमें नश्वरता को जानते हुए भी पूरे जोश के साथ वर्तमान को सुमंगल के साथ जीने की कामना और श्रद्धा निरंतर रहती है। यह जानते हुए भी कि यह कल धुल जाएगी, जिस प्रयोजन से की जाती है, वह हो जाने की कामना ही सबसे बड़ी है। त्योहारों के अतिरिक्त घर-परिवार में

अन्य कोई मांगलिक अवसरों पर या यूँ कहें कि रंगोली सजाने की कला अब सिर्फ पूजागृह तक सीमित नहीं रह गई है। स्त्रियाँ बड़े शौक एवं उत्साह से घर के हर कमरे में तथा प्रवेश द्वार पर रंगोली बनाती हैं। यह शौक स्वयं उनकी कल्पना का आधार तो है ही, नित-नवीन सृजन करने की भावना का प्रतीक भी है। रंगोली में बनाए जाने वाले चिह्न जैसे स्वस्तिक, कमल का फूल, लक्ष्मीजी के पग (पगलिए) इत्यादि समृद्धि और मंगलकामना के सूचक समझे जाते हैं। आज कई घरों, देवालयों के आगे नित्य रंगोली बनाई जाती है। रीति-रिवाजों को सहेजती-सँवारती यह कला आधुनिक परिवारों का भी अंग बन गई है। शिल्प कौशल और विविधतायुक्त कलात्मक अभिरुचि के परिचय से गृह-सज्जा के लिएबनाए जाने वाले कुछ माँडणों को छोड़कर प्रायः सभी माँडणे किसी मानवीय भावना के प्रतीक होते हैं। और इस प्रकार ये हमारी सांस्कृतिक भावनाओं को साकार करने में महत्त्वपूर्ण साधन माने जाते हैं। हर्ष और प्रसन्नता का प्रतीक रंगोली रंगमयी अभिव्यक्ति है

5.2 रंगोली

पुकोलम यानी फूलों की रंगोली

रंगोली एक अलंकरण कला है जिसका भारत के अलग अलग प्रांतों में अलग अलग नाम है। उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, राजस्थान में मांडना, बिहार में अरिपन, बंगाल में अल्पना, महाराष्ट्र में रंगोली, कर्नाटक में रंगवल्ली, तमिलनाडु में कोल्लम, उत्तरांचल में ऐपण, आंध्र प्रदेश में मुग्गु या मुग्गुलु, हिमाचल प्रदेश में 'अदूपना', कुमाऊँ मेंलिखथाप या थापा, तो केरल में कोलम। इन सभी रंगोलियों में अनेक विभिन्नताएँ भी हैं। महाराष्ट्र में लोग अपने घरों के दरवाजे पर सुबह के समय रंगोली इसलिए बनाते हैं, ताकि घर में कोई बुरी ताकत प्रवेश न कर सके। भारत के दक्षिण किनारे पर बसे केरल में ओणम के अवसर पर रंगोली सजाने के लिए फूलों का इस्तेमाल किया जाता है। दक्षिण भारतीय प्रांत- तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक के 'कोलम' में कुछ अंतर तो होता है परंतु इनकी मूल बातें यथावत होती हैं। मूल्यतः ये ज्यामितीय और सममितीय आकारों में सजाई जाती हैं। इसके

लिए चावल के आटे या घोल का इस्तेमाल किया जाता है। चावल के आटे के इस्तेमाल के पीछे इसका सफेद रंग होना व आसानी से उपलब्धता है। सूखे चावल के आटे को अँगूठे व तर्जनी के बीच रखकर एक निश्चित साँचे में गिराया जाता है। राजस्थान का मांडना जो मंडन शब्द से लिया गया है का अर्थ सज्जा है। मांडने को विभिन्न पर्वों, मुख्य उत्सवों तथा ऋतुओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसे आकृतियों के विभिन्न आकार के आधार पर भी बाँटा जा सकता है। कुमाऊँ के'लिख थाप' या थापा में अनेक प्रकार के आलेखन प्रतीकों, कलात्मक डिजाइनों, बेलबूटों का प्रयोग किया जाता है। लिखथाप में समाज के अलग-अलग द्वारा वर्गों अलग-है। जाता किया प्रयोग का माध्यमों कला और चिह्नों अलग आमतौर पर दक्षिण भारतीय रंगोली ज्यामितीय आकारों पर आधारित होती है जबकि उत्तर भारत की शुभ चिह्नों पर।

रंगोली के प्रमुख तत्त्व

रंगोली भारत के किसी भी प्रांत की हो, वह लोक कला है, अतः इसके तत्व भी लोक से लिए गए हैं और सामान्य हैं। रंगोली का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व उत्सवधर्मिता है। इसके लिए शुभ प्रतीकों का चयन किया जाता है। इस प्रकार के प्रतीक पीढ़ियों से उसी रूप में बनाए जाते रहे हैं इन और - इस से रूप पारंपरिक पीढी नई है। होता आवश्यक बनाना का प्रतीकों को परंपरा की परिवार अपने-अपने प्रकार इस और है सीखती को कला है। रखती कायम रंगोली के प्रमुख प्रतीकों में कमल का फूल, इसकी पत्तियाँ, आम, मंगल कलश, मछलियाँ, अलग अलग तरह की चिड़ियाँ, तोते, हंस, मोर, मानव आकृतियाँ और बेलबूटे लगभग संपूर्ण भारत की रंगोलियों में पाए जाते हैं। विशेष अवसरों पर बनाई जाने वाली रंगोलियों में कुछ विशेष आकृतियाँ भी जुड़ जाती हैं जैसे दीपावली की रंगोली में दीप, गणेश या लक्ष्मी। रंगोली का दूसरा प्रमुख तत्त्व प्रयोग आने वाली सामग्री है। इसमें वही सामग्री प्रयुक्त होती है जो आसानी से हर स्थान पर मिल जाती है। इसलिए यह कला अमीर प्रचलित में घरों के सभी गरीब-सामान् है।य रूप से रंगोली बनाने की प्रमुख सामग्री है चावल हुए पिसे - घोल का, सुखाए हुए पत्तों के पाउडर से बनाया रंग, चारकोल, जलाई हुई

मिट्टी, लकड़ी का बुरादा आदि। रंगोली का तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व पृष्ठभूमि है। रंगोली की पृष्ठभूमि के लिए साफ़ या लीपी हुई ज़मीन या दीवार का प्रयोग किया जाता है। रंगोली आँगन के मध्य में, कोनों पर, या बेल के रूप में चारों और बनाई जाती है। मुख्यद्वार की देहरी पर भी रंगोली बनाने की परंपरा है। भगवान के आसन, दीप के आधार, पूजा की चौकी और यज्ञ की वेदी पर भी रंगोली सजाने की परंपरा है। समय के साथ रंगोली कला में नवीन कल्पनाओं एवं नए विचारों का भी समावेश हुआ है। अतिथि सत्कार और पर्यटन पर भी इसका प्रभाव पड़ा है और इसका व्यावसायिक रूप भी विकसित हुआ है। इसके कारण इसे होटलों जैसे स्थानों पर सुविधाजनक रंगों से भी बनाया जाने लगा है पर इसका पारंपरिक आकर्षण, कलात्मकता और महत्त्व अभी भी बने हुए है।

बंगाल में चावलों को कूट पीस कर उसका लेप तैयार करके तथा रंग भरने के लिए उसमें रंग मिलाकर कपड़े की एक बत्ती की सहायता से महिलाएं अल्पना बनाती है । इनकी आकृतियों में मुख्य है, मछली, सूर्य, रीछ, चन्द्र, लक्ष्मी के चरण तथा पत्तियां और लताएं । अच्छी फसल क्रे लिए महिलाएं आंगन में पेड़ की आकृति बनाकर भी उसकी पूजा करती है । महाराष्ट्र तथा गुजरात में रेखाओं के लिए बिल्लोर पाउडर तथा अन्दर के भराव के लिए रंगीन पाउडर को काम में लिया जाता है । जिस जगह रंगोली बनाईं जाती है उसे पहले गीली गेरु से लीप कर सूखने के लिए छोड दिया जाता है फिर सूखने पर सीधी रेखाओं में बिदिया जोडकर डिजाइन पूरा किया जाता है फिर उसे रुपहला पाउडर छिड़क कर चमकदार बना दिया जाता है ।

गुजरात में इन रंगों के माध्यम से पौराणिक दृश्य, स्वास्तिक तथा कुछ ज्यामितीय नमूने व महापुरुषों की आकृतियां भी अंकित की जाती है । तमिलनाडू में जहां चावल के लेप से मांडने मांडे जाते है, वहीं केरल में कोलम अलंकरण वहुत अप्रचलित है । इसमै गाय के गोबर से धरती को लीप कर उस पर विभिन्न रंगों के फूल व पंखुडियां बनाई जाती है ।

राजस्थान में भी प्राचीन काल से दीवारों और फर्श को सजाया जाता रहा है । राजस्थान में मांडनों के लिए गेरु तथा खडिया का प्रयोग किया जाता

है । गेरु तथा खडिया को रात को भिगोकर रखा जाता है और सुबह इसका प्रयोग मांडना बनाने में किया जात्ता है । एक विशेष मौसम या त्योहार के अनुसार विभिन्न प्रकार के वर्गाकार, आयताकार तथा फूलों के नमूने बनाये जाते है । आधुनिक युग में ये मांडना डिजाइन इतने प्रसिद्ध हो गये है कि ब्लोक प्रिटिंग के वस्त्रो पर भी मांद्रा मोटिफ दिखाई देने लगे है ।

अल्पना साफ एंव समतल भूमि पर बनानी चहिये । जो अल्पना सूखे रंग के चूर्ण से बनाई जाती है उसे धूलीं चित्र कहते है और जिस अल्पना के बनाने मे जल का प्रयोग किया जाता है उसे रस चित्र कहते है ।

सबसे अधिक अल्पना दीपावली पर्व पर बनायी जाती है । उस समय घर की सफाई, पुताई होती है । कच्चे फर्श को गोबर, मिट्टी से लीपा जाता है । उस यर खडिया व गेरू से मांगलिक चौक पूरती है, लक्ष्मी जी के पगल्या) । है बनाती (पाँव

रंगोली :

रंगोली एक प्राचीन लोककला के रूप में पूरे भारत में प्रचलित है । रंगोली बनाने के लिए पिसे हुए चावल, गेहू'का आटा, मिटटी आदि का प्रयोग किया जाता है । इसमें रंग भरने के लिए वनस्पतियों से निकाले गये रंग, गेरु, हल्दी, नील, ईट का चूरा, कच्चे कोयला का चूरा आदि काम में लिया जात्ता है । आजकल बाजारों में सफेद पत्थर का पिसा हुआ पाउडर हर रंग में मिलता है ।

- रंगोली बिन्दु की सहायता से बनायी जाती है । जिस प्रकार का नमूना बनाना हो उसके अनुसार बिन्दु डालकर नमूना रेखांकित किया जाता है ।
- रंगोली के नमूने ज्यामिती नमूने होते है । जैसे गोल चौंखूटे तिकोने- के रूपों आदि अष्टचक्रनमूने को मुख्य रेखाएं सफेद रंग से बनाईं जाती है । नमूने के बीच में अन्य रंग भरे जाते है ।
- आजकल बाजार में रंगोली के, नमूने के विविध साँचे मिलते है, जिन्हें देख कर घर मे रंगोली बनाई जाती है ।
- रंगोली का रंग बुरादे को रंग कर भी बनाया जा सकता है ।

प्रयोगशाला मे बुरादे को रंगना:

- बुरादा महीन होना चहिये ।
- कपडे रंगने वाले रंगो को पहले पानी मे भिगो ले ।
- अब बुरादे को छान कर उसमे रंग मिला दे ।
- उसे अच्छी तरह मिलाकर अखबार की तीन चार या प्लास्टिक पर सूखा दे ।
- रंग गहरा या हल्का अपनी इच्छानुसार करते है ।
- यह कार्य करते समय हाथों मे सर्जिकल दस्ताने पहनने चाहिए ।
- रंग को छाया मे सुखाना चाहिए, क्योँकि धूप मे रंग उड़ जाते है ।

1. सर्वप्रथम जमीन साफ करें ।
2. रंगों का चुनाव करते समय हल्के रंग अन्दर व गहरे रंग बाहर भरें ।
3. नमूना अन्दर क्री और से बाहर क्री और बनाना
4. अल्पना या रंगोली नंगे पैर बनानी चाहिए ।
5. नमूना बनाने क्रे पश्चात चारों और सफाई है करनी चाहिए ।
6. रगो का चुनाव पूर्व मे करना चाहिए ।

5.3 अल्पना

मांडना राजस्थान की लोक कला है। इसे विशेष अवसरों पर महिलाएँ ज़मीन अथवा दीवार पर बनाती हैं। मांडना, मंडन शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है सज्जा। मांडने को विभिन्न पर्वों, मुख्य उत्सवों तथा ॠतुओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसे आकृतियों के विभिन्न आकार के आधार पर भी बाँटा जा सकता है। उदाहरणचौका स्वरुप-, मांडने की चतुर्भुज आकृति है जिसका समृद्धि के उत्सवों में विशेष महत्व है जबकि त्रिभुज, वृत्त एवं स्वास्तिक लगभग सभी पर्वों या उत्सवों में बनाए जाते है। कुछ आकृतियों में आनेवाले पर्व का निरुपण एवं उस दौरान पड़ने वाले पर्वों को भी बनाया जाता है। मांडना की पारंपरिक आकृतियों में ज्यामितीय एवं पुष्प आकृतियों को लिया गया है। इन आकृतियों में त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त, स्वास्तिक, शतरंज पट का आधार, कई सीधी रेखाएँ, तरंग

की आकृति आदि मुख्य है। इनमें से कुछ आकृतियाँ हड़प्पा की सभ्यता के काल में भी मिलती है। पुष्प आकृतियाँ ज्यादातर सामाजिक एवं धार्मिक विश्वास तथा जादू-तंत्र आकृतियां ज्यामितीय जबकि हैं हुई जुड़ी से टोने- या देवी किसी रुप के आकृतियों ज्यामितीय कुछ से। रहस्य तांत्रिक एवं मंत्र कि जैसे हैं होते जुड़े से देवता षष्टकोण जो दो त्रिभुज के जोड़कर बनाया जाता है, देवी लक्ष्मी को चिह्नित करता है। माडने की यह आकृति काफी प्रसिद्ध है तथा इसे विशेषत के कटाई फसल में सर्दियों तथा दीपावली : किसी आकृतियां सारी बहुत अलावा इनके है। जाता बनाया में उत्सव समय चारों के आकृति मुख्यऔर बनाई जाती है। ये आकृतियां सामाजिक एवं धार्मिक परंपरा पर आधारित होती है जिसमें वर्षों पुराने रीति तथा रिवाज- है। करती प्रदर्शित को दृष्टि की महिलाओं में पर्वों विभिन्न

राजस्थान की लोक आस्था में है। स्थान महत्वपूर्ण अत्यंत का "मांडनो" त्योहारों, उत्सव और मांगलिक कार्यों में मांडना प्रत्येक घर की आंगन- विशिष्ठ से सदियों में संस्कृति भारतीय का कला मांडना है। होता शोभा धारण स्वरूप का लोकप्रथा कला यह तो पर अवसर के दीपोत्सव है। स्थान लिपाई की घरों में अंचल ग्रामीण पर उत्सव इस है। लेती कर, पुताई व रंगाई के साथ मांडने बनाना अनिवार्य समझा जाता है। राजस्थान में ग्रामीण अंचल के अलावा शहरी क्षेत्र में भी मांडना अंकन के जीवंत दर्शन होते है किंतु कतिपय घरों में इनके अंकन का माध्यम बदल जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में मांडना उकेरने में गेरु या हिरमिच एवं खडिया या चूने का प्रयोग किया जाता है। इसके निर्माण में गेरु या हिरमिच का प्रयोग बैकग्राउंड के रूप में किया जाता है जबकि इसमें विभिन्न आकृतियों व रेखाओं का अंकन खड़िया अथवा चूने से किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में मांडने चित्रण में गेरु व खडिया के स्थान पर ऑयल रंगों का अक्सर उपयोग होने लगा है। नगरों में सामान्यतः लाल ऑयल पेंट की जमीन पर विभिन्न रंगों से आकारों का अंकन किया जाता है। दीपावली पर प्रत्येक गृहणी अपने घर के द्वार, आंगन व दीवारों की लिपाईप्रकार भिन्न-भिन्न पश्चात के पुताई- जीवन हमारे है। उकेरती मांडने आकर्षक व सुंदर केमें इनके सांस्कृतिक महत्व से कम ही लोग परिचित हैं, यहां तक कि इन्हें चित्रित करने वाली

महिलाएँ भी अक्सर इसे नहीं जानती है।
हमारी संस्कृति में मांडनों को श्री एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह माना जाता है कि जिस घर में इनका सुंदर अंकन होता है उस घर में लक्ष्मी जी का निवास रहता है।
मांडनो का अंकन सदियों से हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक आस्थाओं की प्रतीक रहा है। इसको आध्यात्मिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। तभी तो हवन और यज्ञों में 'वेदी' का निर्माण करते समय भी मांडने बनाए जाते हैं। हमारी सांस्कृतिक परम्परा में यह भी है कि घर के आंगन को धोने व लीपने के बाद उसे खाली नहीं छोड़ते क्योंकि यह शुभ भी नहीं माना जाता। ऎसे में आंगन में मांडने बनाकर अति अल्प मात्रा में मूंग, चावल, जौ व गेहूं जैसी मांगलिक वस्तुएं फैला दी जाती है।
मांडना मंड या माण्डण्य)न वर्णित में काल प्राचीन (64 कलाओं में कलाओं में शामिल है जिसे अल्पना कहा गया है। मांडनों को कुछ लोग मुख्यतः चार प्रकारों में वर्गीकृत करते हैआधारित स्थान " -, पर्व आधारित, तिथि आधारित और वर्ष पर्यन्त अंकित किए जाने वाले।"
राजस्थान के मांडनों में चौक, चौपड़, संझया, श्रवण कुमार, नागों का जोड़ा, डमरू, जलेबी, फीणी, चंग, मेहन्दी, केल, बहू पसारो, बेल, दसेरो, साथिया (स्वस्तिक), पगल्या, शकरपारा, सूरज, केरी, पान, कुण्ड, बीजणी (पंखे), पंचनारेल-, चंवरछत्र, दीपक, हटड़ी, रथ, बैलगाड़ी, मोर व अन्य पशु पक्षी आदि प्रमुख है।
मांडने के अंकन के लिए स्थान का विशेष ध्यान रखा जाता है। जैसे- दीवार पर केल, संझ्या व तुलसी, बरलो आदि।

अल्पना के संबंध में पुराणों में कई कथाएँ प्रचलित हैं। चित्रकला पर पहले भारतीय लेख 'चित्र लक्षण' में एक कथा का उल्लेख आता है, वह इस प्रकार है एक पुरोहित का बेटा मर गया।" ब्रह्मा ने राजा से कहा, "वह लड़के का रेखाचित्र ज़मीन पर बना दे ताकि उस में जान डाली जा सके। राजा ने ज़मीन पर कुछ रेखाएँ खींचीं, यहीं से अल्पना की शुरुआत हुई।

इसी संदर्भ में एक और कथा है कि ब्रह्मा ने सृजन के उन्माद में आम के पेड़ का रस निकाल कर उसी से ज़मीन पर एक स्त्री की आकृति बनाई। उस स्त्री

का सौंदर्य अप्सराओं को मात देने वाला था, बाद में वह स्त्री उर्वशी कहलाई। ब्रह्मा द्वारा खींचीं गई यह आकृति अल्पना का प्रथम रूप है। अल्पना के संबंध में और भी पौराणिक संदर्भ मिलते हैं, जैसे में रामायण - ज़िक्र का अल्पना भी वहाँ हैं गई की जहाँ चर्चा की मंडप विवाह के सीता हुआ। विकास सांस्कृतिक का अल्पना में युग के शासकों चोला में दक्षिण है।

मोहन जोदड़ो और हड़प्पा में भी मांडी हुई अल्पना के चिह्न मिलते हैं। अल्पना वात्स्यायन के 'कामसूत्र-' में वर्णित चौसठ कलाओं में से एक है। यह अति प्राचीन लोक कला है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में साधारणतया यह जाना जाता है कि 'अल्पना' शब्द संस्कृत के -'ओलंपेन' शब्द से निकला है, ओलंपेन का मतलब है था विश्वास का लोगों में काल प्राचीन करना। लेप - श चित्र कलात्मक ये किहर व गाँवों को धन में रखने परिपूर्ण से धान्य- इसी हैं। रखते सुरक्षित को संपत्ति से प्रभाव जादुई अपने और है होते समर्थ प्रचलन पर अवसरों सामाजिक और धार्मिक का कला अल्पना से दृष्टिकोण हुआ।

बहुत से व्रत या पूजा, जिनमें कि अल्पना दी जाती है, आर्यों के युग से पूर्व की है। आनंद कुमार स्वामी, जो कि भारतीय कला के पंडित कहलाते हैं, का मत है कि बंगाल की आधुनिक लोक कला का सीधा संबंध 5000 वर्ष पूर्व की मोहन जोदड़ो की कला से है। व्रतचारी आँदोलन के जन्मदाता तथा बंगला लोक कला व संस्कृति के विद्वान गुरुसहाय दत्त के अनुसार कमल का फूल जो बंगाली स्त्रियाँ अपनी अल्पनाओं के मध्य बनाती हैं, वह मोहन जोदड़ो के समय के कमल के फूल का प्रतिरूप ही है।

कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि अल्पना हमारी संस्कृति में आस्ट्रिक लोगों, जैसे मुंडा प्रजातीयों से आई हैं, जो कि इस देश में आर्यों के आने से अनेक वर्ष पूर्व रह रहे थे। उन के अनुसार प्राचीन व परंपरागत बंगला की लोक कला कृषि युग से चली आ रही है। उस समय के लोगों ने कुछ देवी देवताओँ व कुछ जादुई प्रभावों पर विश्वास कर रक्खा था, जिसके अभ्यास से अच्छी फसल होती थी तथा प्रेतात्माएँ भाग जाती थीं।

लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि अल्पना कला केवल बंगाल में ही प्रचलित है या थी। इसका अलग में रूपों भिन्न-भिन्न से नामों अलग-

है प्रचलन भी में भागों अन्य के भारत, गुजरात में इसे सतिया, महाराष्ट्र में रंगोली, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश में चौक पूरना व सांझी, पहाड़ों में चौक पूरण व कहीं कहीं-'एपण', राजस्थान में मंडने, बिहार में अरिचन, मधुबनी, कहजर, आँध्र प्रदेश में मुग्गुल और दक्षिण भारत में कोलम कहते हैं।

देश के समस्त प्रांतों की अल्पना कला में कुछ बातों में भिन्नता होते हुए भी कई बातों में समानता है -

भिन्न प्रांतों की अल्पना में समानता :

साधारणतया इसका स्त्री समाज में अधिक संबंध हैं और स्त्रियाँ ही इसे बनाती हैं। बड़े उत्सवों में स्त्रियों के समूह के समूह इस कार्य को करते हैं। कहते हैं जो आकार इसमें उभरते हैं उनके पीछे बनाने वालों का प्रेम, लगन और उसकी भक्ति होती है। स्त्रियाँ जैसेहैं खींचती रेखाएँ जैसे-, उन रेखाओं में आकृतियाँ बनती जाती हैं, अपने भावों की अभिव्यक्ति वे गीतों की पंक्तियों में भी करती हैं।

इस सजावट से बनाने वालों की आंतरिक शुद्धता का पता चलता है। कन्याएँ प्रारंभ से ही पूजा करते समय यह कामना करती है कि हमें ऐसा पति व घर मिले जो धनहो पूर्ण से धान्य-, इसलिए अल्पना में समस्त शृंगार व गृहस्थी की चीज़ें जैसे धान, मछली, कंघी बनाकर पूजा की जाती है। जब नई बहू घर में प्रवेश करती है तो कई जगह उसे दरवाज़ों पर रुक कर अल्पना बनानी पड़ती हैं। इस अल्पना में जो आकृतियाँ उभरती हैं, उनको देख कर बनाने वाले के व्यक्तित्व का बोध होता है। कई परिवारों में बहू को लक्ष्मी का रूप मानते हैं। उसके स्वागत में अल्पना में कमल बनाए

जाते हैं, जिन पर उसे चलने को कहा जाता है।

अल्पना बहुत तन, मन व श्रद्धा से की जाती है। यह जानते हुए भी कि यह कल धुल जाएगी, जिस प्रयोजन से की जाती है, वह हो जाने की कामना ही सबसे बड़ी है। यह सामाजिक उत्सवों, दुखी अवसरों, त्यौहारों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बनाई जाती है। कुछ धार्मिक 'प्रतीक' ऐसे पाए जाते हैं, जो पीढ़ियों से उसी रूप में बनाए जाते रहे हैं का प्रतीकों इन और - से सासों तथा माताओं अपनी बहुएँ तथा कन्याएँ है। होता आवश्यक बनाना को परंपरा की परिवार अपने-अपने रप्रका इस और है सीखती को कला इस है। रखती कायम

इस कला में प्रयोग आने वाली सामग्री आसानी से हर स्थान पर मिल जाती है। इसलिए यह कला गरीब से गरीब परिवार में भी अंकित की जाती हैं, जैसे घोल का चावल हुआ पिसे -, सुखाए हुए पत्तों के पाउडर से बनाया रंग, चारकोल, जलाई हुई मिट्टी आदि।

इस कला का संबंध आस्ट्रिक लोगों से भी बताया जाता है। इस में प्रयोग में आने वाले कई नमूने आस्ट्रिक लोगों के आलेखनों में से लिए गए हैं इसलिए यह निश्चित है कि हमारे देश के बहुत से सामाजिक व धार्मिक रीति रिवाज़ हमने आस्ट्रिक लोगों से पाए हैं।

इन्हीं परंपरागत आलेखनों से प्रेरणा लेकर आचार्य अवनींद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन में कला भवन में अन्य चित्रकला के विषयों के साथइस साथ-निकेतन शांति कला यह आज बनाया। विषय अनिवार्य एक भी को कला नाम का मजा देवी गोरी में कला इस हैं। जाती जानी से नाम के अल्पना की हैं। जाती मानी जननी की अल्पना निकेतन शांति जो रहेगा चिरस्मरणीय

5.4 प्रश्न

1.रंगोली बनाने की विधि का वर्णन कीजिये

2.अल्पना बनाने की विधि का वर्णन कीजिये

5.5 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी
साहित्य प्रकाशन आगरा

2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह
पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 6

पुष्प सज्जा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 पुष्प सज्जा का प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं

6.3 फूलदान के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें

6.4 पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौधे सामग्री

6.5 पुष्प व्यवस्था के प्रकार

6.6 अभ्यास प्रश्न

6.7 संदर्भ ग्रन्थ

6.0 उद्देश्य

- छात्र पुष्प सज्जा का प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

- छात्र फूलदान के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौधे सामग्री की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र पुष्प व्यवस्था के प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

6.1 प्रस्तावना

पुष्प सज्जा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की जरूरत होती है। पुष्प सामग्री, यथा फूल, पत्तियां, कलियां, टहनियां तो नितान्त आवश्यक होती है। इसके अतिरिक्त सीप, पंख, घोंघा, छोटे छोटे कंकड-पत्थर आदि का उपयोग सुन्दरता बढ़ाने में किया जाता है। कुछ वस्तुओं का उपयोग आधार के रूप में किया जाता है। कुछ वस्तुएं सज्जा को सुन्दर, आकर्षक एवं मोहक बनाने के लिए जरूरी होती है। कुछ वस्तुएं सहायक सामग्री की तरह काम में ली जाती है।

6.2 पुष्प सज्जा का प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं

1 फूलदान अथवा फूल लगाने के पात्र - फूलों को सजाने एवं कलात्मक रूप देने में फूलदानों/पात्रों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें ऐसी क्षमता व शक्ति होती है कि चाहे तो ये पुष्प सज्जा की सुन्दरता में चार चांद लगा सकती है अथवा इसकी शोभा को घटा सकते हैं। फूल लगाने के पात्र के पात्र गुलदान, गमला या गुलदस्ता भी कहते है। आजकल विभिन्न आकार रंग रूप, आकृति, बनावट, डिजाइन के फूलदान बाजार में उपलब्ध है। फूलदान विभिन्न पदार्थों के बने होते है, जैसे शीशा धातु, चीनी मिट्टी संगमरगमर, पत्थर, लकडी, प्लास्टिक आदि। धातु के बने फूलदान पर सुन्दर नक्काशी की हुई रहती है। जयपुर एवं मुरादाबाद के पीतल के फूलदान पूरे भारतवर्ष पर सुन्दर नक्काशी की हुई रहती है। जयपुर एवं मुरादाबाद के पीतल के फूलदान पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। वैसे आजकल सुन्दर रंगों एवं डिजाइनों में प्लास्टिक के फूलदान उपलब्ध होने लगे है। मिट्टी के बने छोटे छोटे चिकने घड़े, सुराही या हांडी को सुन्दर रंगों में

रंगकर, चित्रकारी करके फूलदान का रूप दिया जा सकता है। गमलों में भी फूलों को सजाकर कमरे, आंगन अथवा बरामदें में रखें जा सकते है।

चित्र : विभिन्न प्रकार का फूलदान/फ्लावर पॉट

चित्र - विभिन्न प्रकार का फूलदान/फ्लावर पॉट

फूलदान विभिन्न आकृति के मिलते है। जैसे उंचे चपटे एवं नीचे, लम्बे गोल अण्डाकार, चौकोर, बेलनाकार, तंग मुंह वाले, त्रिकोण जानवरों के पक्षियों के आकार के। फूलदान का चयन सज्जाकर्ता की रूचि, पुष्प सामग्री, पसन्द आदि पर निर्भर करता है।

6.3 फूलदान के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें

फूलदान के चयन में निम्न बातों को मस्तिष्क में रखना चाहिए -

1. पुष्प सज्जा किस शैली से की जानी है? शैली के अनुसार ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए।

2. पुष्प सज्जा किस स्थान की जानी है, यथा - आंगन, बरामदें, ऑफिस में, होटल में मेज पर आदि।
3. पुष्प सज्जा हेतु कितनी मात्रा/संख्या में पुष्प सामग्री प्रयुक्त की जानी है।
4. फूलों के रंग रूप, आकर, भार, किस प्रकार का है। फूलदान का रंग इस प्रकार का होना चाहिए कि फूलों का रंग खिल उठे, दबे नहीं। एक सादे फूलदान में फूल अधिक आकर्षक दिखते है। कुछ कुछ सफेद क्रीम, हाथीदांत जैसे रंग क्रीम या मिट्टी के रंग के फूलदानों में फूलों को उपयुक्त मिट्टी के रंग फूलदानों में फूलों को उपयुक्त पृष्ठभूमि मिलती है और पुष्प सज्जा मोहक बन जाती है। अधिक सुन्दर फूलदान या चटक रंगों के फूलदान से पुष्प सज्जा आकर्षक नहीं बनती है बल्कि दर्शक का ध्यान पुष्प सज्जा की बजाय फूलदान पर चला जाता है। ऐसे फूलदानों में पुष्प सज्जा हेतु बेहद अनुभवी हाथों की जरूरत होती है क्योंकि फूलदान तथा पुष्प सज्जा में प्रतिस्पर्धा हो जाती है जबकि सादे या हल्के रंग के फूलदान में फूल ही मुख्य आकर्षण के केन्द्र होते है।
5. हल्के रंग के फूलों के साथ गहरे रंग के फूलदान शोभते है। इसी तरह गहरे व चटक रंग के फूलों के लिए हल्के रंग व कम अलंकरण युक्त फूलदान ही अच्छे लगते है।
6. उंचे फूलदान दीवार के उस भाग के सामने फबते हैं जिसकी उंचाई चौडाइर्ग् से अधिक हो परन्तु इनमें पुष्प विन्यास नेत्रों के स्तर से अधिक उंचा नहीं होना चाहिए।
7. कमरे की रंग योजना के अनुसार ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए। हल्के रंग के फूलदान में श्वेत पुष्पों की सज्जा शान्ति, शीतलता एवं आनन्द का अनुभव कराते है।
8. खाने की मेज पर उथले फूलदान लगना चाहिए ताकि भोजनकर्ता एक दूसरे को देख सकें, बातचीत कर सकें। साथ ही भोजन परोसते समय हाथ से लगाकर फूलदान नहीं गिरने पायें।
9. यदि औपचारिक पुष्प सज्जा करनी है तो कांच के चिकने धरातल वाले फूलदान का चुनाव करना चाहिए। अनौपचारिक पुष्प

विन्यास में खुरदरे, चपटे व नीचे तल वाले फूलदान उपयुक्त रहते है।

टहनी होल्डर -

पुष्प सज्जा को मूजबूती प्रदान करने टहनियों को बांधे रखने एवं सहारा प्रदान करने के लिए टहनी होल्डर का उपयोग किया जाता है। टहनी होल्डर्स विभिन्न प्रकार के होते है। पिन प्वाइन्ट टहनी होल्डर्स तथा हेयर पिंन होल्डरर्स सबसे अच्छे माने जाते है। टहनी होल्डर्स की नरम मिट्टी या गर्म मोम से फूलदान में चिपका दिया जाता है। इनके सुख जाने के उपरान्त ही पुष्प सज्जा की जानी चाहिए।

1 टहनी होल्डर धातु के बने होते हैं। इनकी निचली सतह चपटी होती है तथा इसके उपरी सतह पर पिन जैसे उभार होते है। इन्हीं की सहायता से फूलों एवं टहनियों को लगाकर दृढता एवं मजबूती प्रदान की जाती है। टहनी को बांधने हेतु लोहे के पतले तारों का भी प्रयोग किया जाता है। विभिन्न रंगों के पारदर्शी प्लास्टिक के फीते भी टहनियों को बांधने में प्रयुक्त किये जाते है।

2 टहनी होल्डर्स का उपयोग करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि ये बाहर से नहीं दिखे। फूल एवं पत्तियों से टहनी होल्डर्स की अच्छी तरह से ढंक देना चाहिए। सीप, घोंघा, मोती, पंख, चिकने पत्थर से भी होल्डर्स को ढंका जा सकता है।?

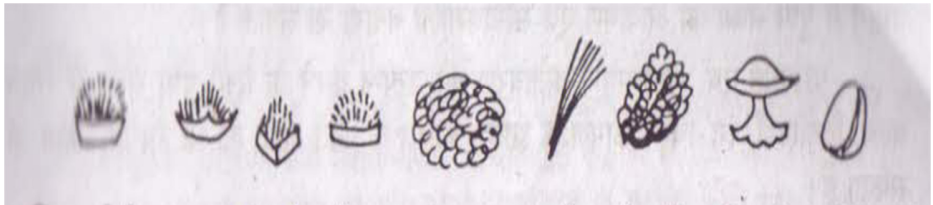

चित्र : विभिन्न प्रकार के स्टेम होल्डर एवं पुष्प सज्जा में उपयोग में लायी जाने वाली सामग्री

आजकल डालिया, सूप, बांस की बनी छोटी टोकरी, तार की जाली, तश्तरी आदि से भी पुष्प व्यवस्था की जाने लगी है। इनमें चिकनी मिट्टी या गर्म मोम फैलाकर टहनी होल्डर को लगाया जाता है फिर

फूलों को मनचाहे शैली में सजाया जाता है। फूलों को सहारा देने के लिए पतली छड़ी का भी उपयोग किया जाता है।

पुष्प सज्जा को प्राकृतिक सौन्दर्य देने के लिए तथा मोहक प्रस्तुति के लिए कुछ पत्तियों को कलात्मक रूप से बिखेर दिया जाता है।

3 नरम मिट्टी, रेत, प्लास्टीसीन - जब फूलों को डलिया, उथले तश्तरी या उथले पात्र में सजाया जाता है तब इसकी जरूरत पड़ती है, ये फूलों, घासों, टहनियों आदि को कसकर पकड़े रहता है तथा गिरने से रोकता है। कभी कभी पिन होल्डर को भी स्थिर करने में इनका उपयोग किया जाता है।

4 सुईदार होल्डर - इनका उपयोग फूलदानों में फूलों को व्यवस्थित करने में किया जाता है। ये विभिन्न आकार प्रकार के होते हैं। इनमें सुई जैसे नुकीले उभार होते हैं।

5 कैंची, चाकू, ब्लेड - फूलों की टहनियों, प्लास्टिक के फीते, डंठलों, तारों आदि को काटने के लिए ये जरूरी होती है। फूलों, टहनियों को तेज ब्लेड या चाकू से काटनी चाहिए।

6 आधार - फूलदानों की सुन्दरता बढ़ाने तथा उसके नीचे के धरातल की सुरक्षा प्रदान करने के लिए आधार का उपयोग किया जाता है। आधार के रूप में लकडी /पत्थर, पीतल का स्टेण्ड, चटाई आदि का प्रयोग किया जाता है। फूलदा को स्टैण्ड पर रखने से उसके उपरी भाग के वजन का प्रभाव ठीक रहता है। पूर्वी देशों में मुख्यत: काले रंग के हल्के स्टैण्ड प्रयुक्त किये जाते हैं। आधार रूप में लकडी, पत्थर या शीशे का भी उपयोग किया जा सकता है। लकडी के टुकडों को विभिन्न आकारों में काटकर भी आधार बनाया जा सकता है।

7 सीप, घोंघा, मूंगा, स्टार फिश, पत्थर, शंख आदि - सीप, घोंघा, मूंगा, स्टारफिश, पत्थर, शंख आदि का उपयोग उपसाधनों के रूप में किया जाता है। ये फूल सज्जा की सुन्दरता एवं आकर्षण में चार चांद लगा देते है। मगर इनका प्रयोग करते समय यह अवश्य ध्यान

रखना चाहिए कि वे फूलों के साथ मिलकर एक इकाई का निर्माण कर सकें, अलग नहीं दिखें।

घोंघा, स्टारफिश, मूंगा, पत्थर, कंकड आदि भावात्मक दशा निर्मित करने में सहायक होते है। उदाहरणार्थ - फिश, मूंगा, सीप, शंख आदि के उपयोग से समुद्रीय प्रभाव उत्पन्न होता है। इसी तरह छोटी गुडिया, पशु, पक्षियों की छोटी छोटी मूर्तियां आदि के प्रयोग से पुष्प सज्जा को आकर्षण एवं सौन्दर्यशाली बनाया जा सकता है। प्रसन्नता एवं उल्लासपूर्ण वातावरण को उत्पन्न करने के लिए पुष्प सज्जा में रंगीन बल्ब, तितलियां, रंग बिरंगे कागज के झण्डे, कागज के फीते आदि का भी उपयोग किया जा सकता है। परन्तु उपसाधनों का प्रयोग करते समय यह अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनकी मात्रा पुष्प सामग्री से काफी कम होनी चाहिए। साथ ही ये सज्जा की विषय वस्तु से मेल खाते होनी चाहिए तभी आकर्षक सुन्दर एवं मनोहारी पुष्प सज्जा का निर्माण हो सकेगा।

6.4 पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौधे सामग्री

1 फूल पुष्प सज्जा का सबसे आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना तो पुष्प सज्जा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। फूल सुन्दर, कोमल व नाजुक होते हैं तथा वातावरण में सुगन्ध बिखेरते हैं। जहां फूल होते हैं, वहां की सम्पूर्ण वातावरण तरोजाता हो जाता है। परन्तु फूल जल्दी ही कुम्हलाकर, मुरझाकर, सूखकर नष्ट हो जाते हैं तो आइये जानें कि हम किस प्रकार फूलों को लम्बे समय तक ताजा रख सकें।

फूलदानों में फूलों को लम्बे समय तक जाता बनाये रखने के लिए निम्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को अपने मस्तिष्क में रखना चाहिए -

1. फूलों को सूर्यास्त व सूर्योदय से पूर्व काटना चाहिए। इनकी टहनियों को तिरछा काटें।

2. कुछ फूल डाली से अलग होते ही मुरझा जाते हैं क्योंकि उनकी कटी टहनी में एयरलॉक बन जाते हैं। इस कारण वह पानी सोख नहीं पाता है। अत: फूलों को काटने के तुरन्त बाद ही पानी में डाल देना चाहिए।

3. वे फूल जिनकी टहनियां काफी सख्त एवं कठोर होती हैं उनकी बाहरी छाल को छिल देना चाहिए। ऐसा करने से फूल अधिक समय तक तरोताजा बना रहता है।

4. कुछ फूलों की हरी पत्तियां उनके जीवनकाल को कम कर देती है जैसे लाइकेन। अत: इनकी हरी पत्तियां हटा देनी चाहिए।

5. कुछ फूलों की टहनियों जैसे पॉपी, रबर, के तने को काटने से दूध जैसा श्वेत पदार्थ निकलता है। यह पदार्थ टहनी के अन्तिम छोर पर आकर जमा हो जाता है। जिसके कारण टहनी पानी ग्रहण नहीं कर पाती है। ऐसे फूलों को गीले कपड़े से लपेटकर उनकी टहनियों को उबलते पानी में 1-2 मिनट तक छोड देना चाहिए।

6. फूलें के टहनियों को सदैव तिरछा काटना चाहिए। तिरछे कटे हु ए भाग को चुटकी भर नमक लेकर रगड़ देना चाहिए। इससे फूल अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

7. बाहर से लाये गये फूलों की टहनियों को थोडा सा काटकर कुछ समय के लिए गुनगुने पानी में एक एम्परीन की गोली डालकर छोड देना चाहिए। थोडी ही देर में फूल तरोताजा होकर खिल उठते है।

8. पानी में एक बडा चम्मच नमक डालने से भी फूलों की आयु बढ जाती है।

9. पानी में थोडी सी मात्रा में परमैंगनेट ऑफ पोटाश डालने से भी उनकी आयु बढ जाती है।

10. कार्नेशन फूलों की आयु बढ़ाने के लिए पानी में एक छोटी चम्मच बोरिक एसिड मिला देना चाहिए।

11. स्वीटपीज के फूलों की आयु बढ़ाने के लिए पानी में एल्होहल की कुछ बूंदे डाल देनी चाहिए। इससे फूल लम्बे समय तक ताजे बने रहते हैं।

12. ऐस्टर के फूलों को यदि चीनी युक्त पानी में रखा जाए तो इनकी आयु काफी बढ जाती है। पानी में एक छोटा चम्मच चीनी डाल देनी चाहिए।

13. फूलदान में यदि तांबे के सिक्के डाल दिये जाएं तो भी फूल लम्बे समय तक ताजा बने रहते है। तांबे के फूलदा में फूलों का जीवनकाल बढ जाता है।

14. वायलेट के फूलों के दो घंटे पाली में डुबोकर फिर उन्हें बर्फ के ठंडे जल में सजा दिये जायें तो वे काफी समय तक तरोजाता व जीवंत बने रहते है।

15. डैफोडिल के फूलों को बहुत अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है परन्तु इनकी पानी को रोज बदलते रहना चाहिए।

16. फूलदान, पिन होल्डर, स्टेम होल्डर, आदि की सफाई अच्छी तरह से की जानी चाहिए। फूलदान का पानी दो तीन दिन में अवश्य ही बदल देना चाहिए।

17. फूलदान में फूलों की टहियों का जितना भाग पानी में डूबा रहता है उनकी पत्तियों को तोडकर/काटकर हटा देना चाहिए क्योंकि पत्तियां पानी में जल्दी सड जाती हैं। साथ ही टहनियों के सिरों को थोडा सा नीचे से काटकर दो भागों में चीर देना चाहिए। इस प्रक्रिया में भी फूल लम्बे समय तक ताजा बने रहते हैं।

18. पुष्प सज्जा में खिले हुए फूलों की अपेक्षा अधखिले फूलों एवं कलियों को चुनें।

19. फूलों को यदि दिन में उथले पानी मे ंरखा गया है तो रात्रि में गहरे पानी मे रखें। परन्तु डैफोडिल्स के फूलों को कम पानी की जरूरत होती है। यह अवश्य ध्यान रखें।

20. जिनिया एवं एस्टर के फूलों की आयु बढ़ाने के लिए इनके पानी को हर दूसरे दिन बदल दे, साथ ही नीचे से इनके सिरों को थोडा तिरछा काटते रहें। इस विधि से इनके फूल एक सप्ताह तक तरोताजा बने रहते हैं।

21. मनीप्लान्ट के पौधों में पानी बदलने की रोज जरूरत नहीं होती। बल्कि जितना पानी सूख जाए उतना ही पानी और उपर से डाल देना चाहिए।

2. पत्तियां, टहनियां और छोटे फल -

सब पेड़ों की पत्तियां कई महीनों तक खराब नहीं होती हैं। अत: इनका उपयोग पुष्प सज्जा में किया जाता है। जैसे - चीनी सदाबहार, रबर प्लांट, हकलबेरी, आइवी, आदि। कुछ सज्जा में छोटे फल एवं बेरियां भी उपयोग में लायी जाती है।

जापान सज्जा में सूखी टहनियों को भी कलात्मक ढंग से सजाकर पुष्प सज्जा की जाती है।

3. घास एवं खरपतवार - प्रकृति में अनेक प्रकार के सुन्दर सुन्दर घास एवं खरपतवार विद्यमानन होते हैं। इनका उपयोग पुष्प सज्जा में किया जाता है। जैसे स्लेकग्रास, फॉक्सटेल, मिल्कवीड आदि।

6.5 पुष्प व्यवस्था के प्रकार

व्यक्ति की दिलचस्पी फूलों के प्रति काफी बढी है। आज पुष्प सज्जा गृह सज्जा का अभिन्न अंग बन चुका है। घर हो या होटल, सार्वजनिक स्थल हो या निजी संस्थान, हर क्षेत्र में पुष्प विन्यास की लोकप्रियत काफी बढी है। साथ ही पुष्प विन्यास के विभिन्न तरीके भी परिमार्जित हुए है। सामान्यत: पुष्प व्यवस्था निम्नांकित प्रकार की होती हैं -

1. रेखीय डिजाइन में पुष्प व्यवस्था
2. समूह शैली में पुष्प व्यवस्था
3. लघु पुष्प व्यवस्था
4. मिलीजुली पुष्प व्यवस्था

1. **रेखीय डिजाइन में पुष्प व्यवस्था -** यह पुष्प व्यवस्था पूर्वी एवं पश्चिमी शैली का मिला जुला रूप है। इस व्यवस्था में फूलों, पत्तियों, टहनियों, एवं अन्य सामग्री को रेखीय डिजाइन मे इस तरह से सजाया जाता है कि पौधे की वृद्धि की सुन्दर, आकर्षक, एवं विशिष्ट रेखाएं स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो सकें। रेखाओं के उपयोग द्वारा किसी भी आकार में (जैसे- अर्द्धचन्द्राकार, त्रिकोण समानान्तर, वक्र आदि) पुष्प व्यवस्था की जाती है।

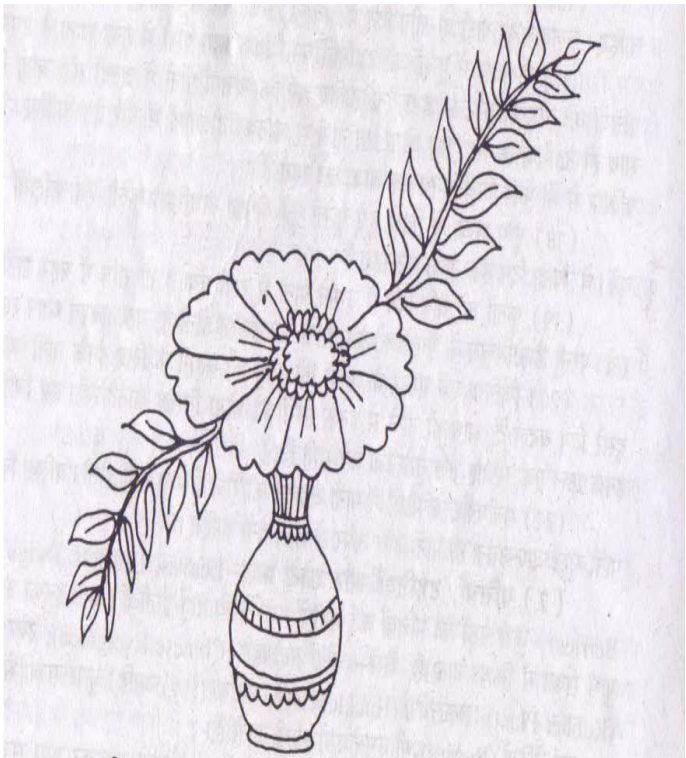

चित्र : रेखीय आकार में पुष्प सज्जा (अनुपात)

यथार्थ में यह पुष्प व्यवस्था कम समय में की जाने वाली सर्वाधिक सुन्दर व्यवस्था है। इसमें कम पुष्प सामग्री यथा - फूल, पत्तियों, टहनियों आदि की जरूरत होती है तथा सज्जा अत्यन्त ही आकर्षक, मनोहारी एवं ऐश्वर्यपूर्ण होती है।

रेखीय व्यवस्था करते समय सज्जाकर्ता को निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए -

1 इसमें प्रयुक्त की जाने वाली फूलों, पत्तियों एवं टहनियों की गुणवत्ता श्रेष्ठ होनी चाहिए। इसमें पुष्प सामग्री की गुणवत्ता पर बल दिया जाता है न कि मात्रा पर।

चित्र : रेखीय पुष्प सज्जा 'C' आकार में

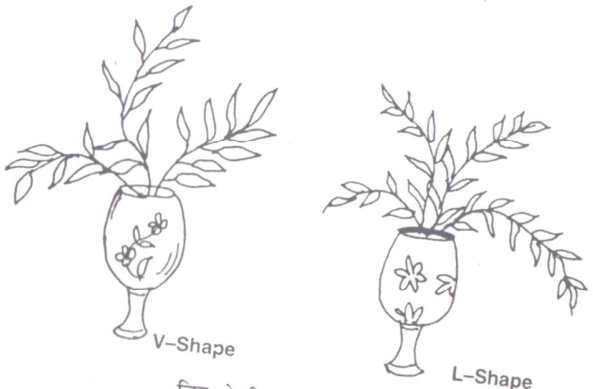

चित्र : रेखीय पुष्प सज्जा

2 रेखीय पुष्प व्यवस्था किस आकार की बनायी जानी है, इसकी योजना स्पष्ट रूप से अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति द्वारा मस्तिष्क में बना लेनी चाहिए।

3 रेखीय पुष्प व्यवस्था उथले फूलदान/पात्र में केवल तारों के गुच्छे से ही बनायी जा सकती है। पुष्पों को मनवांछित दिशा देने में तार सहायक होते हैं। उथले फूलदान किसी भी कोण से व्यवस्था संभव बनाते हैं।

रेखीय पुष्प व्यवस्था कैसे करें?

1 रेखीय पुष्प व्यवस्था करने से पूर्व सज्जाकर्ता को रेशमी डिजाइन की रूपरेखा मस्तिष्क में बना लेना चाहिए।

2 किस तरह की रेखा बनाई जानी है तथा रेखाओं का प्रयोग से किस तरह के आकार बनेंगे यह भी कल्पना के प्रयोग से किस तरह के आकार बनेंगे यह भी कल्पना में स्पष्ट होना चाहिए जैसे त्रिभुज,

अंग्रेजी के Cअक्षर, Fअक्षर, Sअक्षर, Zअक्षर अथवा अन्य कोई आकृति।

3 पुष्प विन्यास की आकृति के अनुरूप ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए। रेखीय पुष्प व्यवस्था के लिए उथले फूलदान ही श्रेष्ठ रहते हैं। यदि पुष्प व्यवस्था चौडी आकृति में की जानी है तो चौडे फूलदान की जरूरत होती है।

4 फूलदान की उंचाई एवं चौडाई को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुरूप टहनियों का चयन किया जाना चाहिए। सामान्यत: फूलदान की उंचाई एवं चौडाई से पुष्प व्यवस्था की उंचाई एवं चौडाई डेढ गुणी ज्यादा रहती है। यह अनुपात आकर्षक सज्जा के लिए आवश्यक है।

5 रेखा की आकृति के अनुरूप ही टहनियों से आधार तैयार की जानी चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि बाह्य रेखा की निरन्तरता बनी रही क्योंकि ये रेखाएं ही व्यवस्था को गति देती हैं तथा इनक लम्बाई, चौडाई एवं गहराई को स्पष्ट करती है।

6 हॉ। पुष्प सज्जा करते समय रंगों पर भी बल देना चाहिए। फूलदान का रंग, पुष्प का रंग तथा जिस स्थान पर फूल सजाकर रखा जाना है उनमें एकता एवं अनुरूपता होना जरूरी है तभी आकर्षक, मनोहारी एवं अदभुत छटा बिखेरने वाली पुष्प सज्जा बन सकती है।

7 पुष्प व्यवस्था में खाली स्थान को भी पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिए। बहुत अधिक फूलों एवं पत्तियों को भर देने से सज्जा आकर्षक नहीं दिखती है। उपसाधनों, यथा सीप, शंख, स्टारफिश, पत्थर, कंकड आदि रखकर भी सज्जा को अत्यधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

2 **समूह शैली में पुष्प व्यवस्था -** इस शैली द्वारा पुष्प सज्जा का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। आज भी भारत में परम्परागत रूप से पुष्प सज्जा में इसी शैली का प्रयोग अधिकांशत: किया जाता है। इसे गुलदस्ता सजाना भी कहते हैं।

समूह शैली में पुष्प व्यवस्था से तात्पर्य है - सुन्दर, आकर्षक एवं चटकीने रंगों के फूलों को चुनकर व्यवस्थित करके फूलदान में लगाना। इस शैली द्वारा पुष्प सज्जा में पर्याप्त मात्रा में फूलों, पत्तियों, टहनियों एवं अन्य पुष्प सामग्री की जरूरत होती है। उंचे फूलदान/पात्र का उपयोग किया जाता है। इस शैली को खास विशेषता है कि इसमें रेखाओं पर बल न देकर फूलों के रंग एवं सुन्दरता पर बल दिया जाता है। फूलों की समूहीकृत रचना गठी हुई अर्द्ध गठी अथवा बिखरी हुई हो सकती है। परन्तु इस शैली द्वारा सज्जा करते समय यह ध्यान रखना जरूरी होता है कि प्रत्येक फूल ही अपनी स्वयं की सुन्दरता बनी रहे तथा उनका आपसी मिश्रित प्रभाव भी सुन्दर, आकर्षक, मनोहारी एवं अदभुत छटा बिखरने वाली हो।

चित्र : समूह शैली में पुष्प सज्जा

फूलों की समूहीकृत विन्यास स्टाइलिश, स्वाभाविक अथवा आवर्तकाल हो सकता है। स्टालिश पुष्प विन्यास में फूलों के रंग अथवा रेखीय नमूना बनाकर आकर्षण उत्पन्न किया जाता है। अनौपचारिक कमरे में स्वाभाविक समूहीकृत पुष्प व्यवस्था की जा सकती है।

प्राचीनकाल में यूरोप के महलों में आवर्तकाल पुष्प विन्यास की जाती है।

समूहीकृत सज्जा कैसे करें -

1 समूहीकृत सज्जा उंचे आकार के फूलदान में की जानी चाहिए। फूलदान में उपरी सिर तक तार की जाली लगा देनी चाहिए।फ
2 फूलदान में इतना पानी भरना चाहिए ताकि टहनियों का अन्तिम सिरा पानी में डूबा रहें।
3 फूलदान की लम्बाई एवं चौडाई को ध्यान में रखते हुए इसके करीब 1 1/2 गुणी लम्बाई की टहनियों का चयन करना चाहिए। पात्र की चौडाई से सज्जा की चौडाई दोगुनी होनी चाहिए।
4 पुष्प सज्जा किस आकार, आकृति में बनाया जाना है इसका स्पष्ट रेखाचित्र से बना लेना चाहिए।
5 फूलों की टहनियों को तार की जाली की सहायता से विभिन्न दिशा में छितराकर व्यवस्थित करें। आडी खडी, विकीर्ण रेखाओं का उपयोग किया जा सकता है।
6 पुष्प सज्जा की बाह्य रेखा को स्पष्ट करने वाली टहनियों एवं शाखाओं को दृढतापूर्वक मजबूती से लगाना चाहिए क्योंकि इन्हीं पर सम्पूर्ण सज्जा निर्भर करती है।
7 पुष्प सज्जा को आकर्षक बनाने तथा रूचि केन्द्र पर दबाव उत्पन्न करने के लिए सबसे बडे, सुन्दर, चटकीले, खूबसूरत रंग के फूलों को केन्द्र में स्थापित करना चाहिए। दबाव उत्पन्न करने के लिए जिन फूलों का प्रयोग किया जाता है उनका चयन अत्यन्त ही सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
8 अन्त में सम्पूर्ण सज्जा के लिए तैयार आधार को विभिन्न फूलों, पत्तियों, टहनियों, घासादि में सजाना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि फूलों की व्यक्तिगत सुन्दरता एवं आकर्षण

कम नहीं हो तथा सामूहिक रूप से मिलकर वे सुन्दरता में चार चांद लगा सकें।

9 सामूहिक पुष्प सज्जा मेज पर बहुत खिलती है। यदि पृष्ठभूमि सादे रंग की है तो इस पर बहुरंगी फूलों वाली डिजाइन शोभती है।

3. **लघु पुष्प व्यवस्था -** जब पुष्प सज्जा किसी छोटे पात्र, फूलदान में की जाती है तब इसे लघु पुष्प व्यवस्था कहते हैं । इस प्रकार की पुष्प सज्जा छोटी कटोरी, गिलास, प्लेट, चौडे मुंह की छोटी शीशी, ऐश ट्रे आदि में भी की जा सकती है। लघु पुष्प सज्जा की लम्बाई सामान्यत: 4.5 दंच - 5.5 इंच रखी जाती है।

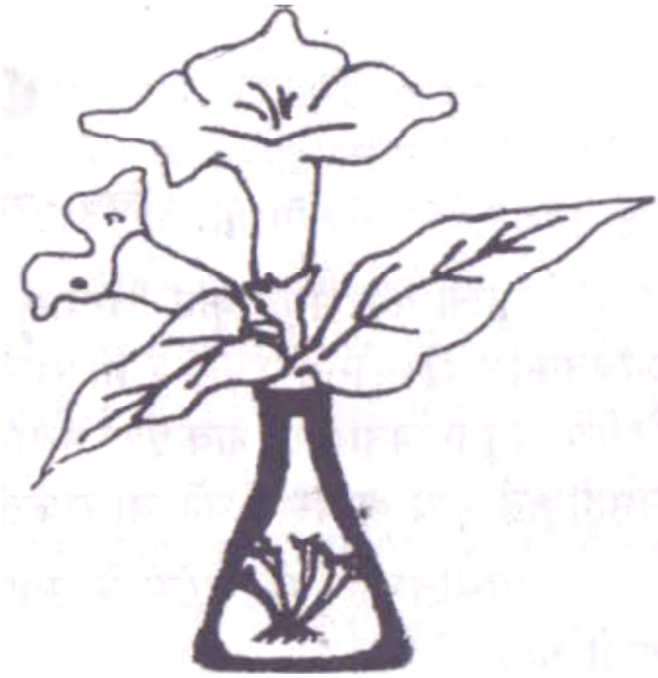

4 **मिली/जुली मिश्रित पुष्प व्यवस्था -** इस प्रकार की पुष्प सज्जा को अमेरिकन शैली की पुष्प सज्जा भी कहा जाता है। आजकल यह सज्जा कॉफी लोकप्रिय है। इसमें रेखीय शैली तथा समूहीकृत शैली की सबसे अच्छी गुणों एवं विशेषताओं को चुनकर इनके उपयोग में एक नवीन सज्जा की जाती है जिसे मिली जुली अथवा मिश्रित व्यवस्था कहते है।

मिश्रित प्रकार के पुष्प सज्जा में फूलों के रंग एवं रेखा दोनों पर ही बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। केन्द्र में समूहीकृत शैली तथा बाहर में

रेखीय शैली का उपयोग किया जाता है।विभिन्न कलाकारों ने पुष्प सज्जा के विभिन्न प्रकारों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा है। कुछ कलाकारेां का मानना है कि पुष्प सज्जा की मुख्य तीन विधियां है -

1 परम्परागत विधि

2 पूर्वदेशीय विधि

3आधुनिक विधि

परन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो पुष्प विन्यास की मुख्य दो विधियां है -

अ) औपचारिक पुष्प सज्जा - औपचारिक पुष्प सज्जा को परम्परागत अथवा रूढिगत पुष्प व्यवस्था भी कहा जाता है। इस विधि में विभिन्न रंग, सुगन्ध के फूलों, कलियों पत्तियों, टहनियों को एक साथ फूलदान में लगाया जाता है। भारत, चीन, एवं अन्य पूर्वी देशों में यह पुष्प व्यवस्था आज भी की जाती है। इस प्रकार की पुष्प सज्जा मे परम्परागत फूलदान ही शोभा पाते है विशेषकर, सिलखड़ी चीनी मिट्टी के ही फूलदान उपयुक्त रहते है। फूलदानों का बाह्य धरातल सम एवं चिकनी होना चाहिए। परन्तु आजकल औपचारिक पुष्प विन्यास में काफी परिवर्तन हुआ है। अब फूलों को समूहीकृत करके न केवल फूलदान में लगाये जाते हैं बल्कि कला के तत्वों की भी पालना की जाती है।

ब) अनौपचारिक पुष्प सज्जा - इस प्रकार की पुष्प सज्जा जापानी शैली पर आधारित है। इसमें अनौपचारिक संतुलन होता है। यह पुष्प सज्जा मुख्यत: सज्जाकर्ता के व्यक्तिगत रूचि एवं पसन्द पर निर्भर करता है। सज्जाकर्ता पुष्प व्यवस्था के माध्यम से अपने विचारों, भावों एवं संवेगों को अभिव्यक्त करता है। इसलिए यदि उसे व्यक्तिगत की अभिव्यंजना भी कहा जाए तो कोई अतिशोक्ति नहीं होगी। इस विधि में कम से कम फूलों, पत्तियों एवं टहनियों का प्रयोग कर सुन्दर एवं आकर्षक सज्जा की जाती है। सूखे पत्ते, सूखी टहनियां, सूखे बीजों की फलियां, गेहूं की बालें, सुन्दर घास, कुश, खरपतवार आदिसे भी सुन्दर पुष्प सज्जा की जाती है। अनौपचारिक पुष्प सज्जा में रंगों को अधिक महत्व न देकर रेखाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इस सज्जा मे चौरस फूलदान का उपयोग

किया जाता है ताकि टहनियों को मनवांछित तरीके से फैलाकर लगाया जा सकें।

6.5 अभ्यास प्रश्न

1. पुष्प सज्जा का प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं के बारे में बताइए
2. फूलदान के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें पर प्रकाश डालिए
3. पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौधे सामग्री कौन कौन सी है
4. पुष्प व्यवस्था के प्रकार बताइए

6.6 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा	बी.के. बख्शी साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा	डा. वृंदा सिंह पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई -7

नाटकीय रूपांतर

7.1 उद्देश्य
7.2 प्रस्तावना
7.3 बुलेटिन बोर्ड
7.4 प्रदर्शन
7.5 नाटक
7.6 कठपुतली
7.7 अभ्यास प्रश्न
7.8 संदर्भ ग्रन्थ

7.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- बुलेटिन बोर्ड की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- प्रदर्शन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

- नाटक की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- कठपुतली की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

संचार एक तकनीकी शब्द है जो अंग्रेजी के कम्यूनिकेशन का हिन्दी रूपांतरण है। इसका अर्थ होता है, किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुंचाना। इसके माध्यम से मनुष्य के सामाजिक संबंध बनते और विकसित होते हैं। मानवीय समाज की समस्त प्रक्रिया संचार पर आधारित है। इसके बिना मानव नहीं रह सकता। प्रत्येक मनुष्य अपनीजाग्रतावस्था में संचार करता है अर्थात बोलने सुनने सोचने देखने पढ़ने लिखने या विचार विमर्श में अपना समय लगाता है। जब मनुष्य अपने हाव भाव संकेतों और वाणी के माध्यम से सूचनाओं का आदान प्रदान करता है तो वह संचार कहलाता है।संचार का सामान्य भाषा में अर्थ है- एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सूचना या संदेश को संप्रेषित करना या किसी सूचना या तकनीक को दूसरे तक पहुंचाना। यह शब्द संस्कृत के चर धातु से पैदा हुआ है। जिसका अभिप्राय है-चलना। अपने व्यापक अर्थ में इसका प्रयोग चलने, दौड़ने जैसी क्रियाओं के लिए होता है। लेकिन आज संचार शब्द एक तकनीकी शब्द बन चुका है। जो अंग्रेजी के कम्युनिकेशन का हिन्दी रूपांतर है। यह शब्द वास्तव में लैटिन भाषा की कम्युनिकेयर क्रिया से निकलकर आया है। जिसका आशय है to take together, confer, discourse and consult on with another यह लैटिन भाषा के कम्युनिस शब्द से भी जुड़ता है

7.3 बुलेटिन बोर्ड

यह एक प्रकार का बोर्ड होता है जिस पर विषय सामग्री के चित्रों एवं सरल शब्दों की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है। बुलेटिन बोर्ड एक लकडी का बोर्ड होता है जिसके उपर कपडा लगा हुआ होता है। इस बोर्ड को चारों तरफ से कांच अथवा जाली से ढक देते है। यह बोर्ड ऐसी जगह लगाया जाता है जहां ज्यादा से ज्यादा लोगों का आवागमन होता है । ताकि इस का फायदा लोगों के द्वारा उठाया जा सके। किसी भी सूचना

देनी हो, उद्घोषणा करनी हो तो यह प्रसार शिक्षा की उचित सामग्री है। अक्सर ऑफिस, शिक्षण संस्थाओं, कार्यालयों आदि प्रमुख स्थानों पर इसका प्रयोग होता है।

बनाने की विधि - उचित आकार के आवश्यकतानुसार बोर्ड को तैयार करना चाहिए। बोर्ड को इस तरह लगाना चाहिए ताकि औसत व्यक्ति की आंखों की उंचाई पर पठन सामग्री हो। जिन भी विषय पर जानकारी देनी हो उसके बारे में पूर्ण जानकारी एकत्रित कर लेनी चाहिए। एक बोर्ड पर केवल एक ही विषय के बारे में जानकारी देनी चाहिए। यदि चित्रों की सहायता से समझाया जा सके तो उससे दर्शकों का ध्यान ज्यादा आकर्षित किया जा सकेगा।

चूंकि पठन सामग्री को समझाने के लिए कोई भी मौजूद नहीं रहेगा अत: पाठ्य सामग्री अपने आप में संपूर्ण एवं सरल होनी चाहिए। अधिक जानकारी के लिए कहां सम्पर्क करना है इसकी जानकारी देना अत्यन्त आवश्यक है। पाठ्य सामग्री को अच्छी तरह से बोर्ड के उपर लगाना चाहिए। पुरानी सामग्री को निकाल लेना चाहिए ताकि दर्शकों को किसी भी प्रकार की कठिनाई ना हो। एक शीर्षक का बुलेटिन बोर्ड का होना अत्यन्त आवश्यक है। ताकि दर्शकों को यह समझ में आ सकें कि किसकी सूचना दी जा रही है। बोर्ड पर लगी विषय सामग्री सरल, चित्रित, संक्षिप्त, रूचिक होनी चाहिए।

बुलेटिन बोर्ड के लाभ

1- सार्वजनिक स्थान पर ही लिखा हुआ बोर्ड लटकाना चाहिए।
2- साफ बडा और सरल भाषा में ही समाचार लिखा होना चाहिए।
3- नित्य सूचना लिखी जाये।
4- प्रसार जल्दी होता है।
5- अधिक जानकारी दी जा सकती है।

बुलेटिन बोर्ड की हानियां

1- बोर्ड उचित स्थान पर लगा होना चाहिए अन्यथ इसका उपयोग नहीं होगा।

2- यह केवल शिक्षित व्यक्तियों के लिए ही है।
3- इसको बनाने में काफी मेहनत लगती है।
4- सूचना बोर्ड से उतरने के पश्चात् उपयोग नहीं ले सकते है।

7.4 प्रदर्शन

कहावत कहीं जाती है कि यदि सुनते हैं तो भूल जाते हैं देखते हैं तो थोडा याद रहता है परन्तु यदि हम किसी कार्य को करते है तो कभी भी भूल नहीं पाते है। कर के सीखने के सिद्धान्त पर आधारित प्रसार शिक्षा प्रदर्शन पद्धति है। किसी विषय को कर के जब दिखाया जाता है तो यह प्रदर्शन का एक अच्छा तरीका है। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें दर्शकों की भूमिका एवं सहयोग की आवश्यकता होती है इसमें किसी भी विषय वस्तु को ज्यादा अच्छी तरीके से समझा जा सकता है। जब किसी कार्य को स्वयं आंखों में देखकर अथवा करते हैं तो इसका विश्वास करना दर्शकों के लिए आसान हो जाता है। यह किसी भी कार्य को करके सीखने की उत्तम, सरल एवं सफल पद्धति है।

प्रदर्शन के प्रकार - यह मुख्यत: दो प्रकार की होती है

1- विधि प्रदर्शन
2- परिणाम प्रदर्शन

1- विधि प्रदर्शन

यह प्रदर्शन के तरीके में किसी भी कार्य को समूह के समक्ष करके दिखाया जाता है। इसमें क्रिया करने से पूर्व एक बार प्रदर्शन करके देख लेना बहुत आवश्यक होता है। समूह का आकार ज्यादा बडा नहीं होना चाहिए क्योंकि ज्यादा बडे समूह को क्रिया होते हुए दिखाई नहीं देती है। क्रिया करते हुए समूह की भागीदारी आवश्यक रूप से होनी चाहिए ताकि विषय वस्तु समझने में आसानी रहती है। जब क्रिया हो रही हो तब कम शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि जो भी दिखाया जा रहा हो वह आसानी से समझ में आ सकें। अधिक वार्तालाप से ध्यान बंटने की आशंका रहती है। यदि वार्तालाप की आवश्यकता हो तो कम एवं सरल शब्दों का इस्तेमाल

करना चाहिए। प्रदर्शन उपयोगी एवं कार्य में निपुणता लाने वाला होना चाहिए । किसी भी कला, विषय-वस्तु सिखाने से पूर्व उसका परिचय देना आवश्यक है। यह क्रिया समूह के लिए कितना उपयोगी है इसकी जानकारी आवश्यक रूप से देनी सरल प्रक्रिया है जिसमें समूह के सामने क्रिया करके प्रदर्शित किया जाता है जिससे विषय वस्तु अच्छे तरीके से दर्शकों को समझ में आती है। कभी कीाी पूर्व प्रदर्शन तैयारियों में वास्तविक प्रदर्शन से अधिक समय लगता है। पूर्वाभ्यास भी महत्वपूर्ण है। जिससे प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली हो सके।

2- **परिणाम प्रदर्शन -** यह एक लम्बी विधि है किन्हींदो पद्धतियों के मध्य अंतर को दर्शाने हेतु परिणाम प्रदर्शन किया जाता है। किसी भी नई विधि के अच्छे परिणामों जैसे खेती के नए बीज से उत्पन्न फसल, पशु पक्षी का नए तरीके से पालन, उद्योग, धंधे आदि को प्रदर्शित करने की यह तकनीक है। इसमें विकसित पद्धति के लाभ व नुकसान को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। किसी भी परिणाम को प्रसारित करने हेतु प्रसारकर्ता को काफी तैयारी सावधानीपूर्वक करनी पडती है। इस क्रिया में समूह को हर पग पर क्रिया को दिखाना पडता है। यदि क्रिया खेतों में हो रही हो तो समूह को उस स्थान पर लेकर जाना होता है। यह किसी कार्य को सीखने की उन्नत विधि है क्योंकि यदि तकनीक सफल हुई तो इसका अनुसरण काफी संख्या में होगा। इसमें दर्शकों के साथ वार्तालाप में शब्दों की आवश्यकता ज्यादा रहती है। क्योंकि इसमें दो पद्धतियों के मध्य अंतर को दर्शाया जाता है। प्रदर्शन आरंभ करने से पूर्व क्रिया का परिचय एवं उसकी महत्ता के बारे में जानकारी देना अत्यन्त ही आवश्यक होता है। प्रदर्शन के स्थल का रास्ता सरल एवं सुन्दर होना चाहिए। प्रदर्शन स्थल तथा प्रदर्शन संबंधी सूचनाएं लोगों को समय से पूर्व में प्रदान करें। प्रदर्शन स्थल पर साइन बोर्ड या सूचना पट्ट लगाकर प्रदर्शन कार्यक्रम का वितरण प्रस्तुत करे जिसे आते जाते हुए लोग देख सकें। यहां एक बात और स्पष्ट कर देनी आवश्यक है

कि प्रदर्शन स्थल सुगम स्थान पर होना चाहिए। जहां यातायात सिंचाई आदि की सुविधाएं सुलभ हों।

प्रदर्शन के लाभ

1- पद्धति प्रदर्शन के माध्यम से लोगों की कार्य दक्षता विकसित होती है।
2- कार्य सम्पन्नता में निपुणता आती है।
3- लोगों में आत्म विश्वास और उत्साह बढता है।
4- देखकर तथा स्वयं करके सीखना एक स्वस्थ प्रक्रिया है जो मनल तथा मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ती है। इससे प्रसार कार्यक्रम तथा प्रसारकर्ता के प्रति विश्वास जमता है।
5- स्वस्थ पर्यावरण स्वच्छ परिवेश पौष्टिक आहार कम लागत द्वारा सम्पन्न कार्यों इत्यादि से लोग लाभान्वित होते है।
6- ग्रामीण इस बात के प्रति आस्थावान होते हैं कि आधुनिक पद्धतियां केवल शहरी और सम्पन्न लोग ही नहीं अपना सकते वरन् वे भी उनका उपयोग कर सकते है।
7- अशिक्षित लोगों तक भी अपना संदेश पहुंचाते हैं।
8- दिमाग पर अपनी छाप छोड़ते है।
9- समूह चर्चा के लिए बेहद प्रभावपूर्ण होते है।
10- दर्शक के लिए प्रेरणादायक होते है।
11- दर्शक को नजदीक से वास्तविक जीवन का अनुभव कराने में सफल होते है।
12- कार्यक्रमों के अन्त में बाजार भाव, मौसम की जानकारी ग्रामीणों के लिए रूचिकर रहती है।
13- किसी भी कार्य के कारण और परिणाम साथ साथ दिखाई जाते है इसलिए अधिक प्रभावशाली होते है।

प्रदर्शन की हानि

1- महंगे होते है।
2- छोटे जन समूह के लिए ही उपयोगी ।
3- अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते है।

4- प्रसार कार्यक्रमों के अन्तर्गत आने वाले सभी विषयों को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता अत: इस शिक्षण पद्धति का सीमित प्रयोग ही किया जा सकता है।
5- प्रयोग उन्हीं कार्यकर्ताओं के लिए उचित है जिसे यंत्रों की कार्य प्रणाली का अच्छी प्रकार ज्ञान हो । प्रसारकर्ता की योग्यता विधि प्रदर्शन की एक आवश्यक शर्त है। विधि प्रदर्शन यदि सफल नहीं हुआ या रूचिकर नहीं हुआ तो इसका विपरित प्रभाव पूरे प्रसार कार्यक्रम पर पडता है।
6- अधिकतर गांव के प्रधान अपने घर पर ही उसका उपयोग करते हैं, साधारण जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती है।
7- विधि प्रदर्शन यदि सफल नहीं हुआ या रूचिकर नहीं हुआ तो इसकसा विपरित प्रभाव पूरे प्रसार कार्यक्रम पर पडता है।

अभ्यास कार्य

एक प्रदर्शन बनाइये -

1- विषय
2- ग्रहणकर्ता
3- उद्देश्य
4- प्रदर्शन का समय
5- परिचय
6- क्या करेगे
7- सर
8- अ) मुख्य बिन्दु
9- ब) अंतिम बिन्दु
10- स) श्रोतागण को धन्यवाद एवं प्रश्न पूछने को कहना

7.5 नाटक

किसी भी विषय को कहानी के रूप में स्वयं व अन्य लोगों के अभिनय के द्वारा करके बताना ही नाटक कहलाता है। यह छोटे अथवा बडे किसी भी समूह को दिखाया जा सकता है। इसमें जगह की पाबंदी नहीं रहती है।

आज कल नुक्कड नाटक काफी प्रचलन में है जिनमें किसी भी नुक्कड का चयन करके नाटक का उद्देयपूर्ण प्रदर्शन किया जाता है। इसमें पात्र उचित पोशाक पहन कर कहानी के रूप में विषय वस्तु को प्रदर्शित करते है। कहानी का उद्देश्यपूर्ण रोचक होना अत्यनत आवश्यक होता है। पात्रों की संख्या कहानी के आवश्यकतानुसार होनी चाहिए। पात्रों में कहानी को इस तरह प्रदर्शित करने की क्षमता होनी चाहिए कि कहानी दर्शकों के हृदय तक जाए एवं उद्देश्य पूर्ण हो सके। पात्रों की आवाज में स्पष्टीकरण होना चाहिए। कहानी उद्देयपूर्ण संक्षिप्त होनी चाहिए। कहानी में इस्तेमाल में आने वाली भाषा सरल एवं स्थानीय होनी चाहिए। नाटक करने का स्थल ऐसा होना चाहिए कि उस पक्ष से ज्यादा से ज्यादा व्यक्तियों का आवागमन होता हो। नाटक शुरू करने से पूर्व कहानी का परिचय एवं उद्देश्य दर्शकों के सामने अवश्य रखना चाहिए नाटक में मनोरंजन का पहलू आवश्यक रूप से आना चाहिए। पात्रों को चाहिए कि यदि नाटक में किसी भी प्रकार की स्थिति का सामना करना पडे तो वह कहानी का रूख मोडकर उसे उद्देश्यपूर्ण बना सके। पात्रों की आवाज में स्पष्टीकरण होना आवश्यक है। छोटे एवं अर्थपूर्ण वाक्यों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। नाटक दर्शकों के समाने प्रस्तुत करने से पूर्व उसका अभ्यास करना जरूरी है। मंच संचालन का कर्य काफी अच्छा सरल एवं योग्य व्यक्ति के द्वारा किया जाना चाहिए। कहानी केवल एक उद्देश्य को लेकर ही होनी चाहिए ज्यादा पात्रों की संख्या लम्बी कहानी कथा को विषय से अलग ले जाती है। चाहे तो बीच में गानों का भी समावेश कर लेना चाहिए ताकि दर्शक अन्त तक कहानी से बंधा रहे। अंत में सभी कलाकारों को एक साथ मंख् पर आकर कहानी का उद्देश्य बतानाचाहिए। कहानी की तारीफ होनी चाहिए। उचित एवं कर्णप्रिय भाषा का ही उपयोग करना चाहिए।

नाटक के लाभ

1- नाटक का प्रभाव गहरा पडता है।
2- खर्चा कम आता है।
3- दिमाग पर अपनी छाप छोड़ते है।

4- स्थानीय पात्र के सहयोग के कारण यह ज्यादा प्रभावशाली माध्यम है।
5- अच्छे दृष्टिकोणोंको प्रस्तुत करते है।

नाटक की हानियां

1- इसके लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है।
2- नुक्कड नाटक करने से पूर्व सरकारी स्वीकृति लेनी पडती है जो कि कई बार जटिल कार्य बन जाता है।
3- समिति विषय ही ले सकते है।
4- बार बार एक ही विषय पर नाटक नहीं कर सकते है।
5- व्यक्तियों को इक्ट्ठा कर नाटक दिखाना जटिल कार्य है।

अभ्यास कार्य

1- विषय
2- उद्देश्य
3- पात्र
4- जगह (स्थान एवं दिनांक)
5- प्रोग्राम
6- प्रचार का तरीका
7- कहानी
8- सार
9- मुख्य बिन्दु
10- अंतिम कथन
11- श्रोतागणकों को धन्यवाद एवं उनसे पूछने को कहना

7.6 कठपुतली

यह प्रचार प्रसार का एक अच्छा तरीका है इसमें किसी भी संदेश को कठपुतली कहानी के माध्यम से समझाया जाता है। पुराने समय में कठपुतली केवल लोक कथाओं इतिहास आदि को समाज में प्रदर्शित करने हेतु उपयोग में लाई जाती थी परन्तु आज के युग में इसे संचार का एक रोचक साधन मान कर उपयोग में लिया जाता है। इसका सबसे बडा

महत्व यह है कि इसके उपयोग हेतु स्थानीय व्यक्तियों का समावेश आवश्यक होता है। यह श्रोताओं को सीखने की तरफ ध्यान आकर्षित करने में समर्थ रहती है। विभिन्न विषय वस्तु को सीखने हेतु यह एक उपयोगी एवं रोचक तरीका है। बच्चों को किसी विषय की जानकारी देने हेतु यह अच्छा माध्यम है। इसमें किसी भी विषय को कहानी बनाकर जीवित दृश्यों की भांति प्रदर्शित किया जाता है। चूंकि दृश्य जीवित लगते हैं अत: प्रभावकाफी लम्बे समय तक एवं व्यापक होता है। इसमें मनोरंजन के साथ साथ शिक्षण भी हो जाता है। महिलाओं का सहयोग इसमें काफी रहता है क्योंकि स्थानीय स्तर पर महिलाएं कठपुतली बनाने, उनकी स्वयं की समस्याओं को रखने एवं उनके विचारों का आदान प्रदान करने में समर्थ होती है।

कठपुतली के प्रकार

1- हाथ की कठपुतली
2- सूत्रों की कठपुतली
3- छड़ की कठपुतली
4- छाया की कठपुतली

कठपुतली प्रदर्शन में ध्यान रखने योग्य बातें -

किसी भी एक विषय पर ध्यान रखना चाहिए। कहानी का समय ज्यादा लम्बा अथवा छोटा नहीं होना चाहिए। कहानी के चुनाव के पश्चात पात्रों का चुनाव करना चाहिए। कहानी के पात्र एवं भाषा स्थानीय ही होनी चाहिए। पात्र को अपनी आवाज में समय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन कर लेना चाहिए। कहानी में कहीं भी रूकावट नहीं होनी चाहिए। नीरसता की कहानी नहीं होनी चाहिए। कहानी के अंत में एक उद्देश्य निकल कर आना चाहिए। कहानी एक प्रक्रिया की तरह होनी चाहिए ताकि श्रोतागण रूचि ले सके। कठपुतली की प्रदर्शनी हेतु बहुत ज्यादा बडा समूह नहीं होना चाहिए। कहानी के मध्य में मनोरंजन दृश्य गाने कविताओं का भी समावेश होना चाहिए ताकि दर्शक अपनी जगह पर बंधे रहें।

कठपुतली के लाभ

1- कठपुतली का खेल कम खर्चीला प्रदर्शन है।
2- इन्हें प्रस्तुतकर्ता स्वयं ही बना सकता है अथवा कठपुतलियों को बनाने में गांव की महिलाओं और युवकों की सहायता भी ले सकता है।
3- कठपुतली के खेल की प्रस्तुती भी वह गांव वालों की सहभागिता प्राप्त कर इससे उनका तमाशा बना सकता है।
4- कठपुतली के खेल में स्थानीय शब्दों, भाषा, कथा आदि की अभिव्यक्ति होती है जिससे लोग सहज ही इनमे रम जाते है।
5- इसमें गीत संगीत प्रकाश का सम्मिलित प्रभाव दर्शकों पर पडता है।
6- एक प्रदर्शन के पश्चात कठपुतलियां बेकार नहीं हो जाती है। इनका प्रयोग बार बार किया जा सकता है।
7- अशिक्षित लोगों तक भी अपना संदेश पहुंचाया जा सकता है।
8- दिमाग पर अपनी छाप छोडते है।
9- समूह चर्चा के लिए बेहद प्रभावपूर्ण होते है।

कठपुतली की हानियां

1- कठपुतली के माध्यम से सभी प्रकार का शिक्षण या संदेश प्रस्तुत करना संभव नहीं होता है।
2- इसमें कथा या प्रस्तुति विषय सीमित होते है।
3- प्रस्तुतकर्ता की चुस्ती और स्फुर्ति पर खेल की सफलता पूरी तरह निर्भर करती है। कठपुतली खेल में सक्षम व्यक्ति कम ही होते हैं।
4- अधिकतर गांव के प्रधान अपने घर पर ही उसका उपयोग करते है, साधारण जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती है।
5- एक क्षेत्र में बार बार एक ही विषयवस्तु प्रस्तुत नहीं की जा सकती। अत: बार बार नए आलेख तैयार करने पडते है।
6- पर्याप्त समय देकर खेल की तैयारी करनी पडती है।

अभ्यास

कठपुतली का प्रदर्शन कीजिये।

1- विषय

2- उद्देश्य
3- जगह (स्थान) एवं दिनांक
4- प्रोग्राम
5- प्रचार का तरीका
6- कहानी

7.7 अभ्यास प्रश्न

1. बुलेटिन बोर्ड बनाइये
2. प्रदर्शन बनाइये
3. नाटक बनाइये
4. कठपुतली बनाइये

7.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रसार शिक्षा प्रायोगिक डॉ दीपा स्वामी
2. प्रसार शिक्षा –डा. वंदना जैन , डा पूनम कुमारी
3. प्रसार शिक्षा-डा बी. डी. हरपलानी
4. प्रसार शिक्षा- डा वृंदा सिंह

इकाई 8

दीवार सज्जा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 उपसाधनों की व्यवस्था में कला के तत्वों का महत्व

8.3 उपसाधनों के प्रकार

8.4 चित्रों के प्रकार

8.5 हाशिये के नियम के अनुसार

8.6 विभिन्न कक्षा में चित्र व्यवस्था

8.7 अभ्यास प्रश्न

8.8 संदर्भ ग्रन्थ

8.0 उद्देश्य

- छात्र उपसाधनों की व्यवस्था में कला के तत्वों का महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र उपसाधनों के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र चित्रों के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र हाशिये के नियम के अनुसार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र विभिन्न कक्षा में चित्र व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

8.1 प्रस्तावना

घर की आन्तरिक सजावट में उपसाधनों का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसका मुख्य उद्देश्य - असाधारण सौन्दर्यता प्रदान करने के साथ ही कार्यात्मकता एवं उपयोगिता में वृद्धि करता है। इससे कमरे में सजीवता, जीवंतता, विभिन्न एवं विविधता आती है तथा नीरसता भंग होती है। उपसाधनों मे सुज्जित घर सुन्दर, आकर्षक, मनोहारी एवं सुविधापूर्ण बनता है। इनके समुचित प्रयोग से एक साधारण सा घर भीस्वर्ग सा सुन्दर, अनोखा छटा बिखरने वाला तथा अलौकिक दिखने लगता है। साथ ही सज्जाकर्ता की मन मस्तिष्क व भावना कलात्मक क्षुधा शान्त होती है।गृह सज्जा में उपसाधनों से आशय है - उन तमाम ऐसी वस्तुओं से है जो आन्तरिक सजावट को सम्पूर्णता, भव्यता, अलौकिकता एवं सौन्दर्यता प्रदान करते है। ये वस्तुएं प्रकृति प्रदत्त, मानव निर्मित, ऐतिहासिक, धार्मिक, प्रतीकात्मक अथवा किसी काल विशेष को ही हो सकती है।

एम.जे. एलेक्जेएन्डर के अनुसार - उपसाधनों से तात्पर्य ऐसी तमाम वस्तुओं से है जो डिजाइन के प्रभाव को बढ़ाती है तथा दूसरे तत्वों की कार्यात्मकता एवं कलात्मकता में वृद्धि करती है तथा इन्हें चुनने का कोई सर्वमान्य नियम नहीं होता। प्रसिद्ध विद्वान सुन्दराज के शब्दों में - आन्तरिक सज्जा एवं सृजनात्मक कला है जो कि एक साधारण घर की काया पलट कर सकती है।

8.2 उपसाधनों की व्यवस्था में कला के तत्वों का महत्व

1. **रेखा , आकार एवं नमूने** - सजावट में प्रयुक्त किये जाने वाले उपसाधनों के रूप में रेखा, आकार एवं डिजाइन कमरे के रूप रेखा, आकार एवं डिजाइन के अनुरूप होना चाहिए तभी सज्जा खिलती है। इनमें थोडा बहुत भिन्नता तो है। सजावटी वस्तुएं भी अपना अस्तितव खो देती है। उदाहरणार्थ - आधुनिक डिजाइन के बने मकान में यदि ऐतिहासिक शैली या मुगलकालीन शैली के फर्नीचर लगा दिये जाएं तो वे हास्यास्पद लगते हैं तथा सज्जाकर्ता के फुडहड़ता एं अज्ञानता को दर्शाता है। जबकि यही फर्नीचर राजमहल में फबते हैं और महलों की सुन्दरता में चार चांद बिखरते नजर आते हैं। आधुनिक डिजाइन के बने मकारन में तो आधुनिक फर्नीचर ही फबते हैं तथा घर को शोभायमान करते हैं। सजावट का मुख्य उद्देश्य किसी वस्तु की उपयोगिता, कार्यात्मकता को उसके नमूने द्वारा बढाया है तथा जिस उपसाधन से घर को सजाया गया है, उसके महत्व को स्थायित्व प्रदान कर सार्थक और सुन्दर बनाता है।
2. उपसाधनों के नमूनों में समय केसाथ परिवर्तन होता रहता है परन्तु घर के नमूने यही बदलते। इसलिए सज्जा सामग्री में लाये जाने वाले परिवर्तन करमरे की रेखा रूप, आकार एवं नमूने के अनुसार होने पर ही वे सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि कर सकते हैं।
3. **रंग -** उपसाधनों का रंग कमरे का रंग योजना में मेल खाते होना चाहिए, ताकि इनमें एकता एवं अनुरूपता का भाव उत्पन्न हो। इसीलिए उपसाधनों का चयन करते समय इसके रंग पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। इतना हीं नहीं, इन्हें कहां , किसर स्थान पर कौन से कमरे में सजाया जाना है, इस बात पर भी गौर किया जाना चाएि और फिर उसी के अनुरूप इनके रंगों का चुनाव किया जाना चाहिए। यद्यपि अधिकांश उपसाधन कमरे को तीव्र रंग का प्रभाव प्रदान करते हैं। प्राकृतिक चित्रों एवं नमूनों में प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग किया जाता है जिससे ये कक्ष की सुन्दरता में अतिशय वृद्धि

करते हैं। ऐसे रंगों से युक्त चित्रों से घर बैठे ही प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लिया जा सकता है।

4. **अभिव्यंजकता -** सजावट के उपसाधनों का उपयोग जिन विचारों, उद्देश्यों को प्रकट करने के लिए किया जाए, इनकी व्यवस्था में वही विचार स्पष्ट झलकना चाहिए। इनका प्रमुख उद्देश्य - कक्ष में असाधारण सुन्दरता प्रदान करने की अपेक्षा कमरे की चित्रवृत्ति या भावना को महत्व प्रदान करना होता है। उदाहरण - सुन्दर पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं, पौधे पौधे मढे हुए चित्र मूतियां पशु पक्षी के चित्र पुष्प सज्जा सजावटी वस्तुएं आदि घर की सज्जा में प्राण फूंककर प्रण फूंककर जीवंत बना देता हैं।

8.3 उपसाधनों के प्रकार

उपसाधनों को हम निम्न वर्गों में बांट सकते हैं -

1. **कलात्मक वस्तुएं -** वे वस्तुएं जिन्हें घर में केवल सौन्दर्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से लगाया जाता है, कलात्मक वस्तुएं कहलाती है। जैसे चित्र, सौन्दर्य प्राप्ति मूर्ति सज्जा प्राचीन परम्परागत एवं लोक जीवन पर आधारित वस्तुएं धातु के बने सजावटी सामग्री आदि।
2. **प्राकृतिक वस्तुएं -** वे सभी प्राकृति वस्तुएं जिनमें घर को सजाया जाता है तथा ये सौन्दर्यात्पादन में विशिष्ट सहायोग करते है, प्राकृतिक वस्तुएं कहलाते है, जैसे फूल पतियां, सूखी टहनियां, सूखे फल, बीज, मछलियां सीप, शंख आदि।
3. **उपयोगी वस्तुएं -** वे वस्तुएं जो सौन्दर्यात्मक होने के साथ ही दैनिक जीवन में भी काम आती है जिनमें कार्यात्मकता का गुण होता है, उपयोगी वस्तुएं कहलाती है जैसे घडियां, दरी, कालीन, लैम्प, फुलदान, कलमदान, ऐशे ट्रे, पुस्तकं वाद्य यंत्र , समय शक्ति की बचत के उपकरण आदि।

कलात्मक वस्तुएं

घर के भीतर सजावट में चित्रों का सबसे पहला व प्रमुख स्थान है। इससे दीवार, टेबुल, मेन्टल पीस, आलमारी आदि की सज्जा की जाती है। वे

व्यक्ति की सौन्दर्यात्मक एवं कलात्मक भावनओं के प्रतीक होते है। उच्च कोटि के चित्रों में सौन्दर्यात्मक के साथ ही भावना विषय वस्तु का अनूठा समन्वय होता है। चित्रों के उचित प्रयोग किये गये चित्रों को देखकर उस परिवार के स्वभाव, कला के प्रति प्रेम, सौन्दर्यात्मक एवं कालात्मक अभिरूचि का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। चित्र सदैव उच्च कोटि के लगाये जाने चाहिए। निम्न स्तर के चित्र लगाने से बेहतर होता है क कमरे की दीवार को यों ही रिक्त छोड दिया जाए, कुछ भी न लगाया जाए, क्योंकि निम्न स्तर के चित्र टांगने में कक्ष की शोभा नहीं बढती बल्कि कुरूपता एवं अनाकर्षण बढता है। साथ ही गृहिणी का फुडहडप होने का भी पता चल जाता है। अन्य सज्जा सामग्री भी इसके प्रभाव में आकार अपना मौलिक सौन्दर्य खो देते है।

8.4 चित्रों के प्रकार

गृह सज्जा में प्रयक्त किये जाने वाले चित्र विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नानुसार हैं -

1. **प्राकृतिक चित्र -** प्राकृतिक दृश्यों के चित्र सभी को अपनी और आकर्षित करते हैं। फल फुलों से लदे, भरे वृक्ष, आम्र मंजर, सरसों के पीले फुल से लहलहाते खेत, कलकल करती नदियां, सागर की लहरें, पहाडों की उंची उंची चोटियां, बर्फ में लदा हुआ हिमालय, भू दृश्य आदि के चित्र प्राकृतिक चित्र होते है। इन्हें प्रत्येक व्यक्ति पसन्द करता है। ऐसे चित्रों को बैठक कख्ज्ञ में लगाकर सज्जा में चार चांद लगाया जा सकता है। प्राकृतिक दृश्यों के चित्र अनोखा छटा बिखेरने वाले होते है। जिसमें दर्शक के मन का कौना कोना खिल उठता है। आंखें तृप्त हो जाती है हृदय आहूलादिल हो जाता है। परिवार के सदस्य घर बैठे ही प्राकृतिक भ्रमण कर लेते हैं और प्राकृतिक छटा का रसपान कर लेते है। प्राकृतिक चित्रों को सीढियां, बरामदें, रहने का कक्ष, लॉबी आदि में भी लगाया जा सकता है।
2. **पशु पक्षियों के चित्र -** पशु-पक्षिओं के चित्र बच्चों के कमरे में लगाये जाने चाहिए। बालकों को पशु-पक्षियों से बेहद प्रेम होता है। इनके

चित्र कमरे में लगाने से उन्हें इनके बारे में जानने का अवसर मिलता है। साथ ही ज्ञान वृद्धि भी होती है तथा वे जानवरों, पक्षियोंएवं प्रकृति से प्रेम करना सीख जाते है।

3. **फल फूलों के चित्र -** फल फूलों एवं सब्जियें के चित्र भोजन कक्ष एवं रसोईघर में लगाना चाहिए। इनमें भूख बढती है तथा क्षुधा तृप्त होती है। इन्हें लकडी के सादे फ्रेम में मढवाकर लगाना चाहिए। अगर ये चित्र छाटे है, तब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने के लिए कपउे की तब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने कके लिए कपड़े कीतब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने के लिए कपउे की पृष्ठभूमि का भी उपयोग किया जा सकता है। इन्हें बैठक में भी आलमारी के उपर मंटलपीस पर अथवा सोफे के पीछे लगाया जा सकता है । फल फूलों के चित्रात्मक एवं आनन्दमय होते है। तथा मन में खुशी, उत्साह उल्लास एवं प्रसन्नता का संचार करते है।

4. **ऐतिहासिक चित्र-**ऐतिहासिक चित्रो को बैठक कक्ष की दीवार पर लगाया जा सकता है।परन्तु इन्हे लगाते समय यह ध्यान रहना चाहिए कि इसमे सौन्दर्यबोध भी हो । बगैर सौन्दर्यबोध के चित्रो से कक्ष की शोभा नही बटती अपितु ये सज्जा को अनाकर्षक, बेजान एंव प्राणहीन कर देते है। साथ ही इनका स्वंय का अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है।

5. **लोक जीवन पर आधारित चित्र -** लोक जीवन पर आधारित चित्रो को भी सज्जा हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। इन्हे बैठक कक्ष, बरामदा लॉबी आदि में लगाया जा सकता है। लोक जीवन पर आधारित चित्र हैं - पानी भरते पनिहारन का चित्र खेत में काम करते किसान, आंगन बुहारते स्त्री का चित्र बैलों को चराने ले जाते ग्वाल बाल आदि। इन चित्रों के माध्यम से इनके स्वाभाविक एवं क्रियात्मक जीवन को प्रदर्शित किया जाता है। चटक रंगों के

परिधानों में सजी ग्रामीण स्त्रियों का चित्र सम्पूर्ण वातावरण में उल्लास एवं उत्साह बिखेरते नजर आते हैं।

6. **धार्मिक चित्र -** धार्मिक चित्रों की पूजा घर, बैठक कक्ष, बरामदें आदि में लगाया जा सकता है जैसे कृष्ण लीला का चित्र, राम -सीता विवाह, का चित्र ईसा महीह का चित्र , गुरू गोविन्द सिंह का चित्र आदि। महापुरूषों के चित्र को भी बैठक कक्ष में लगाया जा सकता है। बालकों के कमरे में वैज्ञानिकों, महात्माओं, महापुरूषों स्वतंत्रता सेनानियों आदि के चित्र अवश्य लगाने चाहिए। इसमें उनमें नैतिकता एवं देशभक्ति का भाव जागृत होता है । उनमें नैतिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक मूल्यों का विकास होता है।
7. **पोरट्रेट -** पोरट्रेट को बैठक कक्ष में लगाना उपयुक्त रहता है। इससे सज्जा की सुन्दरता, मोहकत एवं आकर्षण में चार चांद लग जाता है। यदि इनके रंग कमरे की रंग योजना से संगीत करते हैं तब उन्हें किसी भी कक्ष में लगवाया जा सकता है।
8. **अमूर्त चित्र -** आजकल अर्मूत चित्रों का काफी प्रचलन बढा है। अर्मूत चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें विषय वस्तु स्पष्ट नहीं होती है। हरेक व्यक्ति अपने अपने दृष्टि एवं सोच से इसका अर्थ लगाते है। बैठक कक्ष में ऐसे चित्रों को लगाया जा सकता है।

चित्रों के विभिन्न माध्यमों से बनाये जा सकते है जैसे

1. **जलीय रंग चित्र -** कुछ चित्रों को जलीय रंगों से बनाये जाते हैं जलीय रंग सस्ते होते हैं। इन्हें मोटे कागज चार्ट पेपर पर बना कर मढकर टांगा जा सकता है। परन्तु जलीय रंगों से बने चित्र बहुत अधिक चित्रात्मक नहीं होते है।
2. **तेल चित्र -** कलात्मक सज्जा के दृष्टिकोण से तेल चित्र उत्कृष्ट श्रेणी के होते है। ये अत्यधिक टिकाउ, सुन्दर, एवं आकर्षक होते है। परन्तु ये काफी महंगे होते है।
3. **फैब्रिक रंग चित्र -** फैब्रिक रंगों से बने चित्र भी बेहद मोहक, खूबसूरत एवं आकर्षक होते है। कपडे पर फैब्रिक रंगों की

सहायता से बने चित्र सज्जा की सुन्दरता एवं आकर्षक से दोगुनी वृद्धि कर देते है। फलत: सज्जा खिल उठती है।

4. **छपे चित्र -** आजकल नित्य प्रति नवीन आविष्कार हो रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप ऐसे ऐसे चित्र बनाये जाने लगे है जिन्हें देखकर यह पता लगाना मुश्किल है कि वास्तव में यह चित्र किसी श्रेष्ठ कलाकार से बनाये गये है। अथवा छापे गये है। छापे हुए चित्र सस्ते होते है इन्हें कम समय एवं श्रम से तैयार किया जा सकता है।
5. **धातु एन्ग्रेविंग** - कई धातुओं में उभार द्वारा चित्र बनाये जाते है जैसे एल्युमिनियम, तांबा, चांदी आदि। ये देखने में अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक होते है।

चित्रों का चुनाव - घर की सज्जा हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले चित्रों के चयन में काफी सोच, समझ, ज्ञान एवं अनुभव की जरूरत होती है। सामान्यत व्यक्ति के लिए चयन करना इतना आसान काम नहीं होता है। चित्र ऐसा होना चाहिए जो सज्जा की सुन्दरता में वृद्धि कर सके तथा दर्शक को अपनी और खिंच सकें चित्र के माध्यम से चित्रकार अपनी अभिरूचि को व्यक्त करता है। कल्पना को मूर्त रूप देता है समस्या को उजागर करता है। और अपने विचारेां को दूसरे तक पहुंचाता है। इसलिए चित्रों का चयन सोच समझकर किया जाना चाहिए। इनके चुनावों में कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों पर ध्यान देना जरूरी है।

चित्रों का चुनाव करते समय ध्यान देने योग्य बातें -

प्रसिद्ध लेखक सुन्दरराज के अनुसार कलात्मक चित्रों के चयन में निम्न बातों को मस्तिष्क में रखना चाहिए -

1. घर के सामान्य सज्जा के अनुरूप हो
2. अच्छी डिजाइन से युक्त हो तथा
3. परिवार के लोगों को पसन्द हो ।

कलात्मक चित्रों को चयन करते समय विशेष ध्यान की जरूरत होती है। साथ ही यह देखना भी आवश्यक होता है कि चित्र सौन्दर्यात्मक,

विषयात्मक, रंग, रूप, रचना, बनावट आदि के दृष्टिकोण से सुन्दर हो तथा कमरे के रंग योजना से मेल खाते हुए चित्रों का चयन करते समय निम्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखना जरूरी है -

1. **सौन्दर्य बोध -** चित्रों का सौन्दर्य वर्धन में अमूल्य स्थान है। उनके प्रयोग से साधारण सा कक्ष भी अनौखी छटा बिखरने वाला, आलौकिक एवं अतिश्रेय सुन्दर दिखने लगता है। सौन्दर्य से आनन्द एवं खुशी भी होती है। व्यक्ति का रोम रोम फुल्लकित हो उठता है। अत: चित्रो के चयन मे सौन्दर्यात्मक पक्ष को देखना जरूरी है। फूलों से लदी झुकी डालिया बसंत ऋतु का मनोहारी चित्र आम्रमंजर पर कलरव करते पक्षी सागर की लहरों पर्वतों की चोटियां व उन पर बनी पगडिया आदि सौन्दर्यात्मक मार्मिकता वाले चत्रि होते है जिन्हें बैठक कक्ष, रहने का कक्ष, बरामदे, सीडियों के उपर, लॉबी आदि में लगाया जा सकता है। यह चित्र चित्रात्मक होते है तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी और लुभाते है उन्हें प्रसन्नता देते है घर बैठे ही व्यक्ति प्राकृतिक छटाओं का अवलोकन कर लेते है।
2. **विषय वस्तु -** घर की सजावट हेतु चित्रों का चयन करते समय सौन्दर्य मार्मिकता के साथ ही विषय वस्तु पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है विषय वस्तु के दृष्टिकोण से कोई भी ऐतिहासिक घटना परिचित घटना मार्मिक हो सकती है। परन्तु इसमें सौन्दर्यात्मक मार्मिकता होना भी जरूरी है चित्र का विषय वस्तु ऐसा हो जो केवल व्यक्ति विशेष को ही नहीं अपितु सभी को प्रभावित करने वाला और अपनी और आकर्षित करने वाला होना चाहिए । चित्र दर्शन को पसन्द आना चाहिए। क्योंकि चित्र लगाने का मुख्य उद्देश्य ही सजावट करना है प्रयुक्त चित्रों की विषय वस्तु नैतिक, आत्मिक बल देने वाली, ईश्वर के प्रति प्रेम उपजाने वाली प्रेरणास्पद होनी चाहिए इस दृष्टि से महापुरूषों महात्माओं, वैज्ञानिकों, प्राकृतिक दृश्यों, देवी देवताओं के चित्र, फूल पत्तियों के चित्र बाग बगीचों के चित्र जीवन से जुडे चित्र श्रेष्ठ होते है इनमें दर्शकों को अपनी और खिचने का अनुठा गुण होता है।

3. **चित्रों के आकार एवं स्वरूप -** चित्रों का चयन करते समय इनके आकार एवं स्वरूप पर बल देना आत्यावश्यक है। स्वयं चित्रों में भी आपस में समानुपात होना जरूरी है। कमरे के आकार एवं स्वरूप के अनुरूप ही चित्र का आकार एवं स्वरूप होना चाहिए, तभी वे खिलते हैं तथा कक्ष को सुन्दर बनाते हैं। यदि कमरा छोटा है तब इसमें छोटे आकार के चित्र ही शोभा पाते है। सामान्यत: एक औसत माप के कमरे में 20 से 25 इंच से बडा चित्र नहीं लगाना चाहिए। चौडी दीवार में चौडा तथा लम्बी दिवार में लम्बा चित्र लगाने से कक्ष की शोभा बढती है।

4. **चित्रों के रंग, नमूना का भाव -** गृह सज्जा में प्रयोग किये जाने वाली चित्रों के चयन में इनके रंग, नमूना एवं भाव को भी मस्तिष्क में रखना आवश्यक है। कई लोग चित्रों का चयन करते समय केवल इनके रंग रूप पर ही ध्यान देते है तथा इनकी कलात्मक सौन्दर्य, विषय वस्तु, संबंध मार्मिकता एवं अन्य पक्ष की भुला देते है। परन्तु ऐसा करना उचित नहीं है। रंग नमूना एवं भाव कमरे की योजना के अनुसार होने चाहिए तथा सज्जा खिलती है। रंग चित्रवृत्ति स्थापित करना है तथा आकार को शक्ति प्रदान करता है। कई बार अत्यन्त सुन्दर एवं सरस चित्र भी उपयुक्त रंग के अभाव में अपनी सुन्दरता आकर्षक एवं लुभावना खो देते है।
5. **चित्र देखकर कलाकार के प्रयोजन का स्पष्टीकरण हो -** कलाकार जिन चित्रों को बनाता है उसे पीछे कल्पना शक्ति को मूर्तरूप देने की इच्छा, स्वयं की अभिव्यक्ति तथा अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने की प्रबल इच्छा रहती है। एक कलाकार का हृदय अत्यन्त ही कोमल एवं सवेदनशील होता है वह एक साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अपने आस पास के वातावरण का अध्ययन अत्यन्त ही सूक्ष्मता, गहनता एवं बारीकी से करता है। और अपनी कला के माध्यम से अपने आस पास के वातावरण में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, बुराईयों, अच्छाइयों, संस्कृतियों, प्राकृतिक छटाओं आदि को समाज तक पहुंचाता है। इस दृष्टि से कलाकार एक दर्शक के मध्य

संवाद वाहन का एक प्रमुख साधन है। कलाकार जब अपने चित्रों को बनाता है तब वह यह आशा करता है कि जब लोग दर्शक इसके चित्र को देखेगे तो उन्हें भी अनुभूति होगी, उनके मन में भी वही विचार उत्पन्न होगे जो स्वयं कलाकार को हुई थी हां! कुछ कलाकार का मुख्य उद्देश्य अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाना नहीं होता बल्कि वह अपने चित्र के माध्यम से दर्शकों को खुश करना होता है कुछ कलाकार दर्शक के मत को धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में प्रवाहित करना होता है।

चित्रों को मढवाना -

चित्रों के प्रभाव को बढाने के लिए इन्हें मढवाना आवश्यक होता है। बिना मढवाये गये चित्रों में वह सुन्दरता एवं आकर्षक उत्पन्न नहीं हो पाती है। जो वास्तव में होना चाहिए। सुन्दर चित्र भी आकर्षक मढाई नही के कारण प्राणहीन हो जाते है। माढवाने से चित्र रेखाओं की गति रूक जाती है। मढवाने से चौखटे तथा जिस दिवार पर इन्हें टांगा जाना है उसके मध्य एक संबंध स्थापित हो जाता है चित्र मढवाते समय फ्रेम पर ध्यान देना जरूरी है। बगैर सुन्दर फ्रेम के चित्र भी नहीं शोभते । फ्रेम का रंग, रूप, आकार, रचना आदि चित्र के अनुरूप होना चाहिए ऐसा नहीं होना चाहिए कि फ्रेम की सुन्दरता एवं चित्रों की सुन्दरता प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो जाये सभी प्रकार के चित्रों के लिए लकडी के सादे फ्रेम उपयुक्त होते है। वैसे आजकल विभिन्न वस्तुओं के फ्रेम भी बाजार में उपलब्ध होते है। जिनका उपयोग चित्रों को मढने में किया जाता है। यदि चित्र छोटे होते है। तब इन्हें कक्ष के आकार को ध्यान में रखते हुए इसकी पृष्ठभूमि में कागज या कपडा लगाकर मढवाया जा सकता है।

चित्रों के फ्रेम - किसी भी चित्र की सुन्दरता, आकर्षण, मोहकता एवं लुभावना पन में फ्रेम का अमूल्य योगदान होता है। इससे चित्र के प्रभाव एवं सौन्दर्य में गुणात्मक रूप से वृद्धि हो जाती है। चित्र की रेखाओं की गति रूक जाती है। चित्र की वास्तविक शोभा तो उसके मढने वाले एवं फ्रेम करने वाले पर निर्भर करती है। साधारण सा चित्र भी सुन्दर मढाई में खिल उठता है।

चित्र के अनुसार ही फ्रेम भी होना चाहिए। इसलिए इसके चयन में चित्र की भांति ही अधिक ध्यान देना आवश्यक है। जब आपको किसी चित्र के लिए फ्रेम का चुनाव करना हो तो सबसे सुन्दर एवं सरल तरीका यह है कि फ्रेम लगाने वाले की दुकान पर जाये वहां विभिन्न प्रकार फ्रेमों के टुकडे उपलब्ध रहते है। इन टुकडों को चित्र के किनारे पर लगाकर देखे कि उनमें से फ्रेम का कोनसा टुकडा अधिक खूबसूरत लग रहा है। जो टुकडा खूबसूरत लगे, उसी से चित्र मढवाये जाने चाहिए। सभी चित्रों में एक जैसे फ्रेम नहीं शोभते विभिन्न प्रकार के चित्रों के लिए विशेष प्रकार के फ्रेम भी शोभते है। पेन्टिग, पेन्ट, और इंक स्क्रेच, ऐचिंग, लिथोग्राफ जलीय रंग पेन्टिग आदि के लिए शीशा सहित फेम ही सुन्दर लगते है। वैसे मौलिक पेन्टिग को बिना शीशा लगवाये भी मढवाया जा सकता है। छोटे चित्रों में चोडे फ्रेम जरा सा भी अच्छे नहीं लगते । तेलीय चित्रों पर चौडे एवं भारी फ्रेम खूब फबते है। यदि फ्रेम का रंग ताबीय हो अथवा सुनहरा पीला हो तब तो चित्र की सुन्दरता एवं आकर्षण एवं लुभावनापन में चार चांद लग जाता है। क्योंकि वे तेलीय चित्रों में चटकीले रंगों को अधिक उभारकर प्रदर्शित करते है। यह सदैव स्मरण रहना चाहिए कि फ्रेम ऐसा हो जिसकी सुन्दरता चित्र की सुन्दरता से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते । जितनी बडी पेन्टिग हो उतना ही अधिक चौडा व भारी फ्रेम लगवाना चाहिए। लकडी के सादे फ्रेम सभी प्रकार के चित्रों पर अच्छे लगते है। लकडी के विभिन्न रंगों में रंग कर (काला, भूरा, स्लेटी, चाकलेटी, सफेद आदि) फ्रेम तैयार किया जाता है। यदि बिना रंग किये लकडी के रंग जैसा ही फ्रेम, चित्र मढवाने में प्रयुक्त किया जाना है तब कमरे में उपयोग में ली गई फर्नीचर की लकडी जैसा ही रंग के लकडी के फ्रेम बनवाकर चित्र मढवाने चाहिए। इससे कमरे में लय एवं लालित्व उत्पन्न हो जाता है। जो दर्शक को अपनी और खिचता है। चित्रों में आकर्षण उत्पन्न करने के लिए कभी कभी प्रधान रंगों से चित्र बने होते है। उसके विपरित रंगों के फ्रेम से चित्र मढवाये जाने चाहिए। मगर याद रखे, चित्र के फ्रेम रंग एवं दीवार के रंग में पर्याप्त विभिन्नता होनी चाहिए। तभी चित्र एवं दीवार की शोभा द्विगुणित हो सकती है।

चित्रों के मेट या माउण्ट

कुछ चित्रों को मढवाने से पूर्व उचित पृष्ठभूमि दिया जाना आवश्यक होता है इसके लिए माउण्ट या मैट लगाया जाता है। परन्तु चित्र की शोभा तभी बढती है जब मैट या माउण्ट का रंग चित्र के रंग से मैल खाता हुआ हो । काला प्रिन्ट, ऐंचिग, काले सफेद फोटोग्राफ, स्क्रेच, वाटर कलर पेन्टिग इन सभी से माउण्ट का रंग चित्र के सबसे कम मूल्य वाले रंग से कुछ अधिक गहरा होना चाहिए। तेल चित्रों में माउण्ट मेट की कोई जरूरत नहीं होती है। यदि चित्र बहुत बडा है तब भी माउण्ट लगवाने की आवश्यकता नहीं होती है। सफेद रंग के मेट कदापि नहीं लगवाना चाहिए। इससे चित्रों की शोभा नहीं बढती । इतना ही नहीं यह चित्रों की सुन्दरता एवं आकर्षण को ही कम कर देते है। बहुत हल्के रंगों के चित्रों के लिए क्रीम या स्लेटी रंग का माउण्ट लगाना बढिया होता है। कभी कभी काले मेट भी लगाये जाते है। काले मेट से चित्र की सुन्दरता में निकार आ जाता है। मेट माउण्ट लगाने से पूर्व हासिया छोडना जरूरी होता है। हासिये के भी कुछ नियम होते है जिन्हें ध्यान में रखना आवश्यक होता है

हथिये के नियम -

आयताकार, वर्गाकार, आडी एवं लम्बवत् चित्रों को मैट लगाते समय चित्र के चारों और हशिया छोडा जाता है। हाशिये सभी और से एक समान दूरी पर नहीं छोडे जाते बल्कि इनमें अन्तर होता है। चित्र के चारों और कितना कितना हशिये छोडा जाए। इसके लिए भी अनुपात संबंधी कुछ नियम है जिनके पालन से चित्र सुन्दर एवं चिताकर्षक लगते है।

8.5 हाशिये के नियम के अनुसार

1. **वगौकार चित्र में -** वर्गाकार चित्रों में नीचे के भाग में सबसे अधिक हाशिया छोडा जाता है। बाकि के तीनों हाशिये नीचे वाले हाशिये से कम चौडा किन्तु आपस में बराबर होना चाहिए। नीचे के हाशिये अधिक चौडा होने से चित्र हवा में लटकते नजर नहीं आते है।
2. **खडी आयताकार चित्र -** खडी आयताकार चित्र में नीचे के भाग में सबसे चौडा हाशिये उपर भाग मे उससे कम तथा दोनो बगलों के

हाशिये उपर वाले हाशिये से भी कम छोडा जाता है। इससे दृष्टि उपर की और जाते हुए चित्र के आयाताकार के लम्बवत् स्वरूप को बल देती है।

3. **आडी आयताकार चित्र -** आडी आयाताकार चित्रों में नीचे के भाग में सबसे अधिक चौडा उपर के भाग में सबसे कम चौडा तथा दोनों बगलों में मध्यम चौडाई लिए हुए हाशिया छोडना चाहिए।

   नोट - सभी प्रकार के चित्रों में नीचे के भाग में सबसे अधिक चौडा हाशिया छोडा जाना चाहिए। इससे चित्र हवा में लटकते हुए नजर नहीं आते है।

4. फोटोग्राफ को बिना मैट के भी मढवाये जा सकते है।

   वर्गाकार चित्रों में हाशिये का अनुपात सामान्यत: 3:2:2 रखा जाता है तथा आयताकार चित्र में 11:7:5 का अनुपात रखने से वे सुन्दर दिखाई देते है।

   चित्रों को टांगना - चित्र को दीवार पर किस तरह से टांगे जाएं, वह भी एक कला है। अत्यन्त सुन्दर ढंग से मढ़े गये चित्रों को भी यदि दीवार पर उचित तरीके से नहीं टांगा जाए तो उसकी सुन्दरता एवं आकर्षण नष्ट हो जाती है। इससे चित्रों को दीवार पर टांगने से पूर्व सोच समझकर निर्णय लेना जरूरी है। अधिकांश परिवार यह सोचते हैं कि चित्रों में तो दीवार की शोभा बढती है। अत: जितना मर्जी हो उतना चित्र दीवार पर टांग दिया जाए। इसी सोच व धारणा के चलते वे कमरे में अनेकों चित्र बिना क्रम के टांग देते हैं। यहां तक कि पुस्तक की आलमारी के उपर अतिशदान पर, ताक पर, शेल्फ पर, फ्रीज पर भी । जहां कभी भी उन्हें रिक्त स्थान दिखता है चित्र टांगने से नहीं चूकते। परन्तु इस तरह से बिना सोच समझें चित्रों के टांगना/लगाना मूर्खतापूर्ण कार्य है। इससे कमरे के सौन्दर्य एवं आकर्षण में वृद्धि नहीं होती बल्कि घट जाती है। चित्र अपनी मौलिक सुन्दरता एवं आकर्षण भी खो देता है।

चित्रों को दीवार पर टांगते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना जरूरी है, जैसे -

1. चित्र को उचित उचाई पर टांगना चाहिए। टांगने से पहले एक बार चित्र की स्थिति देख लेनी चाहिए। चित्र खडे हुए व्यक्ति के नेत्रों के स्तर के नीचे होना चाहिए। अधिक उंचाई पर लगाने से चित्र का प्रभाव कम हो जाता है।
2. चित्र को समतल दीवार पर सटाकर चौरस टांगना चाहिए। ऐसा करने से दीवार एवं पूर्व चित्र के बीच में एकीकरण का भाव उत्पन्न हो जाता है और वे दीवार का ही एक भाग की तरह दिखते है।
3. चित्र को लगताते समय रेखाओं पर भी ध्यान देना जरूरी है। उदाहरण अगर एक चित्र में खडी रेखा तथा दूसरी आडी रेखा का प्रभाव देता है तो ऐसे चित्रों से एकीकरण का भाव नष्ट हो जाता है। अत: जिन चित्रों में एक सा रेखा का भाव हो उन्हें एक और लगाना चाहिए।
4. फर्नीचर को ध्यान में रखकर चित्र टांगा जाना चाहिए। ऐसा नहीं हो कि चित्रों की रेखा उपर की और हो तथा फर्नीचर की रेखा नीचे की और हो। इस तरीके से चित्र टांगना गलत व दोषपूर्ण होता है। क्योंकि इससे एकता एवं अनुरूपता का भाव नष्ट होत है।
5. चित्र सदैव किसी फर्नीचर जैसे आलमारी, सोफा, बुक, रैक, पलंग आदि के साथ संबंध स्थापित करते हुए लगाना चाहिए। बिल्कुल खाली दीवार पर टांगने से वे अलग से दिखते है। जिससे रिक्तता एवं नीरसता का भाव उत्पन्न होता है।
6. एक ही कमरे में ढेर सारे चित्र नहीं टांगने चाहिए। इससे कक्ष की सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि नहीं होती है बल्कि कमरा भरा भरा किसी चित्रशाला अथवा अजयाबघर की तरह दिखता है। बहुत सारे चित्र सजाने से बेहतर तो यह है कि दो चार चित्र ही सजाये जाएं जो वास्तव में खूबसूरत हो तथा लोगों को ध्यान अपनी और खिंचने में प्रभावित करने में सक्षम हो।

7. छोटे छोटे चित्रों को समूह में टांगना चाहिए। चित्रों के बीच में रिक्त स्थान कम से कम होना चाहिए। यदि चित्रों के बीच रिक्त स्थान रखना पडे तो इनकी चौडाई चित्र की चौडाई से कम होनी चाहिए। इस नियम की पालना से चित्र एक समूह रूप में दिखाई देते है।
8. अनुरूपता की दृष्टि से चौडी दीवार पर चौडे चित्र तथा लम्बी दीवार पर लम्बे चित्र टांगने चाहिए। यदि दीवार काफी उंची है तब बडे चित्र टांगे जाने चाहिए और यदि दीवार नीची है तो छोटे चित्र लगाने चाहिए।
9. सभी चित्रों का निचला भाग फर्श की सतह से एक समान स्तर पर होना चाहिए।
10. चित्रों को सीढियों की तरह चढते हुए क्रम में नहीं टांगना चाहिए। ऐसा करने से सज्जा भद्दी, जीवनहीन एवं अनाकर्षक दिखती है।
11. एक कमरे में टांगे गये चित्रों में आपस में साम्य होना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान रखें, कई बार अनुरूपता से नीरसता एवं बोरियत होने लगती है।
12. चित्रों को टांगने हेतु जिन कीलों तथा डोरियों का प्रयोग किया जाए वे बाहर से नहीं दिखनी चाहिए। ऐसे चित्रों को टांगने के बजाय कार्निस अथवा आलमारी पर रखना चाहिए।
13. अगर दीवार की चौडा कम है, तब छोटे छोटे चित्र एक दूसरे के उपर नीचे भी लगाये जा सकते है। इससे एकता व अनुरूपता का भाव उत्पन्न होता है।

8.6 विभिन्न कक्षा में चित्र व्यवस्था

1. **बैठक कक्ष -** बैठक कक्ष में सामान्य रूचि के चित्र लगाये जाने चाहिए। चित्र आकर्षक, सुन्दर एवं मनोहारी हो जो हरेक व्यक्ति को आकर्षित कर सकें। इस दृष्टि से प्राकृतिक दृश्यों के चित्र, लोक जीवन

पर आधारित चित्र श्रेष्ठ होते है। जैसे देश-भव्य के चित्र, पहाडों के चित्र तथा उस पर बनी पगडंडियों के चित्र, नदी, झील, तालाब, झरनों, जंगल आदि के चित्र बाग बगीचों के चित्र फूलों से भरी क्यारियों, के चित्र सागर के लहरों के चित्र आदि।

बैठक कक्ष में ऐतिहासिक एवं प्रतीकात्मक भी लगाये जा सकते है।

2. **भोजन कक्ष -** भोजन कक्ष में चटकीलें-भडकीलें रंगों के चित्र लगाना चाहिए। ऐसे चित्र प्रसन्नता देने वाले व आनन्ददायी होते है। साथ ही जीवन में उत्साह एवं उमंग भरते हैं। भूख को बढाते है, जिसके कारण खुलकर भुख लगती है। विभिन्न प्रकार के फल, फूलों सब्जियों से लदी भरी टोकरी का चित्र भोजन कक्ष में टांगना अच्छा रहता है।

3. **शयन कक्ष -** शयन कक्ष पूर्ण आराम, शान्ति एवं विश्रान्ति का कक्ष होता है। अत: इस कक्ष में मन में शान्ति देने वाले, आंखों को सुख पहुंचाने वाले तथा हृदय को आनन्दित करने वाले चित्रों को टांगने चाहिए। शयन कक्ष में व्यक्ति उपयोगकर्ता अपने पसन्द का चित्र भी टांग सकता है। परिवार के सदस्यों के फोटोग्राफ भी शयन कक्ष में लगाये जा सकते हैं। भावना प्रधान चित्रों को भी शयन कक्ष में बेहिचक लगाया जा सकता है। चित्रों को इस प्रकार से टांगना चाहिए ताकि पलंग पर लेटने पर व बैठने पर आंखों के सामने पड़े।

4. **रसोईघर -** रसोईघर में फल फूल, सब्जियां सागों आदि के चटकीलें भडकीलें चित्र टांगे जाने चाहिए।

5. **बालकों का कक्ष -** बालकों के कमरे में उनकी रूचि के चित्र टांगने चाहिए। चटकीले भडकीले रंग के चित्र लगाना श्रेयस्कर होता है। जानवरों एवं पक्षियों के चित्र टांगना चाहिए क्योंकि उन्हें इनसे काफी प्रेम होता है। इसके अतिरिक्त महापुरूषों, वैज्ञानिकों, महात्माओं स्वतंत्रता सेनानियां आदि के भी चित्र टांगे जा सकते है।

इससे इन्हें नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की शिक्षा मिलती है। ऐसे चित्र प्रेरणास्पद हो है। तथा बालकों में उत्साह भरते है। उनमें कुछ कर

गुजरने की प्रबल इच्छा जागृत होती है। भडकीले रंग के कहानी वाले भी लगाये जा सकते है ।

बालकों के कमरे में जो भी चित्र लगाये जाएं व बडे होने चाहिए तथा इन्हें इतनी उंचाई पर टांगे जाने चाहिए ताकि बालक उसे आसानी से देख सकें। बच्चों के उम्र के अनुसार चित्रों में परिवर्तन करते रहना चाहिए। बडे बालकों के कख में देश विदेश में मान चित्र भी लगाये जा सकते है । इससे उन्हें दिशा ज्ञान के साथ ही स्थान के बारे में भी समुचित जानकारी मिलती है ।

6. **मुर्तियां -** घर की साज सज्जा में मूर्तियों का भी अमूल्य योगदान है। किसी घर में मूर्तियों को देखकर उस घर के गृहिणी एवं गृहस्वामी के विचार, भाव कला के प्रति रूचि आदि का पता भली भांति लगाया जा सकता है। मूर्तियां भी मानव भावनाओं के प्रतीक होते है। इनके प्रयोग से सज्जा, आकर्षक, मनोहारी, जीवंत एवं नैसिर्गिक हो जाती है। संगमरमर, हाथीदांत, लकडी, पत्थर धातु चीनी मिट्टी मिट्टी प्लास्टिक ऑफ पेरिस, कांच आदि की मूर्तियां घर की सज्जा में चार चांद लगा देती है। मूर्तियां को अकेले अथवा जोडों के साथ आलमारी के उपर सोफे के पास, शो केश आदि में रखा जा सकता है। किसी सुन्दर मूर्ति को केन्द्र बिन्दु मानकर घर की सज्जा की जा सकती है। मूर्तियों को उचित स्थान पर सुशोभित करने से ही सौन्दर्य एवं आकर्षण में बढोतरी होती है अथवा इनका स्वयं का अस्तित्व ही गौण हो जाता है। इतना ही नहीं कभी कभी ये सज्जा को भी अनाकर्षक, प्राणहीन, भद्दा एवं बेरोनक बना देते है। मूर्तियां से सज्जा निखार आए इसके लिए जरूरी है इनके पीछे की पृष्ठभूमि सादी हो। इन पर उचित प्रकाश पडता हो। छोटी मूर्तियों को समूह के रखना चाहिए। तभी इनका महत्व एवं प्रभाव बढता है। बडी मूर्ति जिनका आकर 50-60 सेमी हो उन्हें अकेले ही कमरे उचित स्थान में रखा जा सकता है। यदि मूर्तियों को पुष्प् विन्यास के साथ रखा जाए तो वह अधिक खूबसूरत व आकर्षित दिखती है। मूर्तियों को रंग कमरे के रंग से मेल खाते हुए होना चाहिए। परन्तु हल्के रंग की सज्जा वाले कमरे में नीरसता को भंग करने के लिए गहरे रंग की मूतियों

का उपयोग किया जा सकता है। मूतियां जिस चीज से बनी हो उसमें उस वस्तु का भाव दृष्टिगोचर होना चाहिए। उदाहरणार्थ - यदि मूतियां धातु से बनी हो तो उसमें पिछली हुई धातु का अभास होना चाहिए। पत्थर की मूर्ति भारी, संघनित एवं पत्थर की तरह दिखनी चाहिए इसी तरह मिट्टी की बनी मूर्तियों में मिट्टी के गुण स्पष्ट रूप से झलकने चाहिए। लकडी से बनी मूर्ति में लकडी के दाने प्रकट होने चाहिए। इनमें लकडी के समान अनोपचारिकता का गुण प्रदर्शित होना चाहिए। मूर्ति के माध्यम से कलाकार अपनी सोच, भावना व विचार को दूसरों तक पहुंचाता है। अच्छी मूर्ति वही मानी जाती है। जो मानव मन को भीतर झकझोर दे मूर्ति के द्वारा कई भाव एवं विचार प्रकट होना चाहिए।

7. **प्राचीन वस्तुएं -** वर्तमान में सज्जा हेतु प्राचीन वस्तुओं का भी उपयोग किया जाता है। किसी काल विशेष की वस्तु अथवा विशिष्ट प्राचीन शैली की कृति आकर्षण उत्पन्न करने में विशिष्ट योगदान करती है। उदाहराणार्थ मुगलों के समय के हथियार, बर्तन, ब्रिटिशकालीन बर्तन, फर्नीचर, गहनें आदि। इन्हें सज्जा के दृष्टिकोण से दीवार पर, फर्नीचर के पास शोकेश, दरवाजे के उपर आदि उपयुक्त स्थानों में सजा कर रखे जा सकते है।

8. **धातु की कलात्मक वस्तुएं -** कमरे में सौन्दर्यवर्धन हेतु विभिन्न धातुओं की कलात्मक वस्तुओं का भी उपयोग किया जाता है। जैसे फूलदान, सुराही, कलमदान, खिलोने, ऐश ट्रे आदि। लोहा, पीतल, कांसा, तांबा, चांदी आदि धातुओं को विभिन्न प्रक्रिया से सुन्दर सुन्दर कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। धातुओं पर नक्काशी, एन्ग्रेविंग तथा पोलिंश द्वारा विशिष्टता लाई जाती है। छोटी छोटी कलात्मक वस्तुओं को समूह में रखकर इनमें एकता एवं साम्य का भाव उत्पन्न किया जाता है। संगमरमर, पत्थर, लकडी, प्लास्टिक, ग्लास फाइबर आदि की बनी सजावटी वस्तुएं भी कमरे में लगायी जाती है। जिससे कक्ष के सौन्दर्य एवं आकर्षण में अतिशय वृद्धि हो जाती है।

9. **सजावटी वस्तुएं -** विभिन्न पदार्थों के बने सजावटी वस्तुओं का उपयोग भी घर की सज्जा में चार चांद लगा देता है। सीप, मोती, व शंख की बनी विभिन्न प्रकार की सजावटी सामग्री यथा हंस, मोर, चिडिया का चोडा, कबूतर, गुडिया, गुडिया का घर, ताजमहल, खिलोने, मछलियां आदि सज्जा के सुन्दरता में प्राण फूक कर उन्हें संजीव बना देता है। ऐसा लगता मानो यह वस्तुएं अभी नाच उठेगी। सीप के बने तौरण द्वार किस का मन नहीं मोहते। किसे अपनी और नहीं खिचते। किसे आनन्दित नहीं करते। घर में अनेक पदार्थ यूहीं व्यर्थ पडे रहते है इन्हें उपयोग में लाकर सजावटी सामग्री बनायी जा सकती है। यदि सजावटी सामनों की उंचाई 10 सेमी से कम है तब इन्हें समूह में रखना चाहिए। वैसे आजकल संगमरमर, कांच, लकडी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, फाइबर ग्लास आदि के बने सजावटी समानों की लोकप्रियता दिनों दिन बढ रही है।

8.7 अभ्यास प्रश्न

1. उपसाधनों की व्यवस्था में कला के तत्वों का महत्व बताइए
2. उपसाधनों के प्रकार बताइए
3. चित्रों के प्रकार के बारे में विस्तृत जानकारी दीजिये
4. हाशिये के नियम से आप क्या समझाते है
5. विभिन्न कक्षा में चित्र व्यवस्था किस प्रकार से की जाती है

8.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा	बी.के. बख्शी साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा	डा. वृंदा सिंह पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 9

समय व शक्ति की बचत

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 रेफ्रीजरेटर

9.3 प्रेशर कुकर

9.4 विधुत ओवन

9.5 मिक्सर व ग्राइंडर

9.6 खाना पकाने की रेंज

9.7 विद्युत हीटर

9.8 वाशिंग मशीन

9.9 गैस चूल्हा

9.10 विद्युत केतली

9.11 वैक्यूम क्लीनर

9.12 टोस्टर

9.12 तडित

9.13 प्रश्न

9.14 संदर्भ ग्रन्थ

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र समय व शक्ति की बचत उपकरण की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

9.1 प्रस्तावना

ओद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के कारण मानव जीवन की भागदौड़ में वृद्धि हुई हैं। आज की पढ़ी - लिखी गृहणी घर के कार्य के अतिरिक्त बाहर भी कार्य करने लगी हैं, जिसके कारण उसे घरेलू कार्यों हेतु ऐसी सहायता की आवश्यकता महसूस होने लगी जिससे कार्य सरलता व सुगमता से संपन्न हो सके। विज्ञानं की प्रगति के परिणाम स्वरूप कई प्रकार के यंत्रों का अविष्कार हुआ है। यह उपकरण निम्न प्रकार से उपयोगी है -

1. समय व शक्ति की बचत होती है।
2. कार्य की गुणवता में वृद्धि करते है।
3. गृहणी की कार्यक्षमता बढती है।
4. कार्य का सरलीकरण होता है।

9.2 रेफ्रीजरेटर

यह एक अलमारी उपकरण है जो खाद्य पदार्थों के संग्रहण व उन्हें सुरक्षित रखने हेतु प्रयुक्त होता है। ये विभिन्न आकार तथा रंगों में उपलब्ध होते हैं। इसमें वायुमंडलीय ताप से कम ताप पर वस्तुओं को रखकर खराब होने से बचाया जाता हैं। ताप के नियंत्रण हेतु इसमें एक ताप - नियत्रंक लगा रहता हैं।

रेफ्रिजरेटर दो प्रकार के होते है - संपीडक प्रशीतक तथा अवशोषण प्रशीतक। प्रथम प्रकार के प्रशीतक में मोटर संपीड़न का उपयोग किया जाता है तथा द्वितीय प्रकार में कमरे के ताप प्रशीतक पदार्थ के तनु घोल का उपयोग होता है।

सिद्धांत- न्यून दाब पर द्रव का वाष्पण

द्रव को काम दाब पर रखने पर उसमे वाष्पण तीव्रता से होता है। वाष्पणहेतु गुप्त ऊष्मा की आवश्यकता होती है जो आस पास से प्राप्त होती है तथा इससे ठण्डक उत्पन्न होती है।

प्रशीतन व प्रशीतक द्रव की दशा - परिवर्तन से होता है। प्रशीतक तरल ऐसा होना चाहिए जो साधारण ताप व दाब पर गैस अवस्था में रहे किन्तु दाब वृद्धि या काम दाब पर संगलित होकर द्रव रूप में परिवर्तन हो जाए। मुख्यतया: इसमें अमोनिया, सल्फर-डाई ऑक्साइड, कार्बन डाई - ऑक्साइड, मिथाइल क्लोराइड आदि का उपयोग किया जाता है। आजकल फ्रिओन अर्थात **डाईक्लोरो** - डाई - फ्लोरो मीथेन का प्रचलन अधिक है।

भाग :

1. **कैबिनेट :** यह इस्पात की चादर अथवा फैबर का बना होता है। बाह्य व आंतरिक परत के बीच खोखला स्थान होता है जो ताप रोधन का कार्य करता है ।

2. **दरवाजा :** दरवाजा रफ्रिजरेटर को खोलने व बन्द करने के काम आता है इसके बाहरी किनारे पर चारो और रबड़ लगी रहती हैं जो कि आतंरिक वातावरण को बाह्य वातावरण के सम्पर्क से रोकती रफ्रिजरेटर खोलने हेतु उस पर हैण्डल लगा रहता हैं। इसमें ताला लगाने के व्यवस्था भी होती हैं।

3. **फ्रीजर :** कैबिनेट के सबसे ऊपरी भाग में डिब्बेनुमा स्थान होता है जिसका अलग अलग दरवाजा होता हैं । यह रफ्रिजरेटर का सबसे ठण्डा भाग है तथा इसका उपयोग बर्फ व आइसक्रीम ज़माने हेतु होता है।

4. **चिल ट्रे :** फ्रीजर के नीचे एक ट्रे लगी रहती है जिसमे रखकर भोज्य पर्दाथ को चिल किया जा सकता हैं।

5. **फल - सब्जी बॉक्स :** यह एक आयताकार बॉक्स है तथा ऊपर काचं का खुलने वाला ढक्कन होता है । यहाँ ताप अन्य स्थानों कि अपेक्षा अधिक होता है तथा इसका उपयोग फल - सब्जी संग्रहण हेतु होता है ।

6. **दराज ट्रे :** प्रत्येक रेफ्रिजरेटर में उसके आकार अनुसार 3-4 दराज ट्रे लगी रहती हैं । ये बारीक़ छड़ों से बनी होती हैं तथा बीच के स्थान से वायु संचरण में सुगमता रहती है । इन्हें आवश्यकता अनुसार ऊपर नीचे सरकाया जा सकता है तथा सामान रखने के काम आती हैं 7. **मक्खन बॉक्स :** दरवाजे के अन्दरूनी भाग पर एक छोटा बॉक्स होता है जो मक्खन रखने के काम आता हैं ।

8. **अण्डा रखने का स्थान :**माखन बाक्स के नीचे या ऊपर कि और प्लास्टिक के सांचे लगे रहते हैं जिन पर अंडे टिकाए जा सकते हैं ।

9. **बोतल रखने का स्थान :**दरवाजे के ही निचले भाग पर पानी कि बोतल रखने हेतु स्थान होता है ।

10. **बल्ब :** कैबिनेट में फ्रीजर के नीचे एक बल्ब रहता हैं जो दरवाजा खोलते ही जल उठता हैं ।

11. **ताप नियामक :** रेफ्रिजरेटर में ताप नियंत्रक होता हैं जिससे आवश्यकतानुसार तापमान कम या अधिक किया जा सकता है ।

12. **बिजली मोटर :** यह कैबिनेट के पीछे या नीचे कि और होती हैं ।

कार्य प्रणाली : रेफ्रिजरेटर का तापमान थर्मोस्टेट द्वारा स्थिर रखा जाता हैं । द्रव प्रशीतक एक छोटी टंकी में उच्च दाब पर रखा जाता हैं । अन्दर ताप बढने पर मोटर चालू होती हैं । तहत द्रव प्रसरण कुंडलियो ममे प्रवाहित होता हैं । प्रशीतक कम दाब पर होता हैं, अतः वह वायु और भोजन में उपस्थित ऊष्मा को अवशोषित कर वाष्प में बदल जाता हैं । यह वाष्प तेजी से प्रशीतन होती हैं तथा प्रशीतन होता हैं । ताप कम होने पर मोटर बन्द हो जाती हैं तथा बढने पर पुनः शुरू हो जाती हैं ।

जब वायु प्रसरण कुंडलियों पर होकर प्रवाहित होती हैं तो वे ठण्डी हो जाती हैं और आद्रता कुंडलियों पर बर्फ के रुप में एकत्र हो जाती हैं । बर्फ ऊष्मा कि कुचालक होती हैं, अतः जितनी ज्यादा बर्फ एकत्र होगी, उतनी

ही कुंडलियों कि कार्य क्षमता कम हो जाती हैं। इस स्थिति के नियंत्रण हेतु रेफ्रिजरेटर को समय - समय पर डीफ्रोस्ट किया जाता हैं । आजकल स्वचालित वहिमिकरण यंत्र रेफ्रिजरेटर भी बाजार में उपलब्द हैं।

सावधानियां :

यह एक अल्मारिनुमा उपकरण हैं जो खाद्य पदार्थों के संग्रहण व उन्हें सुरक्षित हेतु प्रयुक्त होता हैं। ये विभिन्न आकार तथा रंगों में उपलब्द होते हैं । इसमें वायुमंडलीय ताप से कम ताप पर वस्तुओं को रखकर खराब होने से बचाया जाता हैं । ताप के नियंत्रक हेतु इसमें एक ताप नियंत्रक लगा रहता हैं।

- ❖ रेफ्रिजरेटर कमरे में ऐसे स्थान पर रखे जहाँ वायु का उचित संचरण होता हैं।
- ❖ दीवार से सटाकर नही रखे।
- ❖ समतल सतह पर रखे।
- ❖ बार अन्दर वायु गरम कि बहार इससे क्योकिं नहीं खोले बार - । हैं देती बढ़ा को तापमान और हैं होती प्रविष्ट
- ❖ जो भोज्य पदार्थ अन्दर रखा जा रहा हैं वह सामान्य या कमरे के तापमान से गरम नहीं हो।
- ❖ खाद्य पदार्थ-एक व ताकि रखे कर ढ़क ,पदार्थ पेय विशेषकर ,दूसरे कि गंध अवशोषित ना करें।
- ❖ रेफ्रिजरेटर में कुछ भी गिर जाने पर उसे तुरन्त साफ करें।
- ❖ 15 दिन या माह में एक बार साबुन के गोल से साफ करें।
- ❖ विधुत धारा में अवरोध या बार होने विचलन बार - पर रेफ्रिजरेटर बन्द करें।

9.3 प्रेशर कुकर

प्रेशर कुकर एक समय , श्रम व इधन बचाने वाला उपकरण हैं जिसका उपयोग भोजन पकाने हेतु होता हैं। यह पोषक तत्वों को भी नष्ट होने से बचाता हैं। यह कोई सुचालक धातु , जैसे एल्युमिनियम अथवा स्टील का बना होता हैं।

कार्य प्रणाली :

भोजन भाप के दबाव से बनता हैं । जैसे जैसे ताप बदाय जाता हैं , दाब भी बढ़ जाता हैं ।साथ ही भोजन पकाने के ताप में भी वृद्धि हो जाती हैं । एक स्थिति में अन्दर का दबाव वायु मण्डलीय दबाव कि अपेक्षा अधिक हो जाता हैं । उबलते पानी का तापमान 100 डिग्री सेल्शियस होता हैं जबकि प्रेसर कुकर का तापमान 121 डिग्री सेल्शियस पहुँच जाता हैं , इसलिय प्रेसर कुकर में खाना जल्दी पकता है ।

भाग :

1. **भगोना :** यह प्रेशर कुकर का मुख्य भाग हैं तथा से भोजन पकता हैं। इसे बोडी भी कहते है।

2. **ढ़क्कन :** भगोने को बन्द करने हेतु एक ढक्कन होता हैं जिस पर बैकलाइट हैंण्डल लगा रहता हैं । इसके मध्य में ऊपर कि और एक उठी नली , ढक्कन के चारो और रबर रिंग तथा किनारे पर एक सेफ्टी वाल्व लगा होता हैं ।

3. **निकास नली :** यह धक्क्न्ब के मध्य में होती हैं तथ्जा अतिरिक्त वाष्प क०ओ बिना दाब कम किये बहार निकालने का कार्य करती हैं ।

4. **भार :** यह निकास नली के ऊपर लगा रहता हैं तथा दबाव को नियंत्रित करता हैं । विभिन्न भर का दबाव (5,10,15,पोंड) भिन्न होता हैं ।

5. **सुरक्षा वाल्व :** यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है । कुकर में भाप अधिक मात्रा में एकत्र हो जाने कि स्थिति में यह उसे बहार जाने का रास्ता देता हैं तथा इससे कुकर फटने जैसी दुर्घटनाओ से बचत होती हैं ।

6. **रबर रिंग :** यह कुकर के ढक्कन के चारो और या अन्दर कि और लगी रहती हैं तथा कुकर से भाप निकलने से रोकती हैं ।

7. **गोल जाली :** यह एक छिद्र युक्त गोल प्लेट हैं जिसका उपयोग कंटेनर रखने हेतु होता हैं ।

8. **हैंण्डल :** यह बैकलाइट का बना होता हैं तथा गरम नही होता ।

9. **सेपरेटर्स :** ये एल्युमिनियम या स्टील के बने छोटे डिब्बे होते है । इनका प्रयोग एक ही समय में एक से अधिक चीज बनाने के लिय किया जाता हैं।

सावधानियां :

- ❖ कुकर में ठोस । भरें नहीं अधिक से भाग 3/2
- ❖ । ले नहीं पदार्थ तरल अधिक से भाग 2/1
- ❖ भाप को निकलने से बचने के लिये ढक्कन पर वजन लगाए।
- ❖ जब सिटी कि आवाज आने लगे तो समझिए कि तापमान आवश्यक दाब तक पहुँच गया हैं और अब आंच धीमी कर दे।
- ❖ खाद्य सामग्री नियत समय तक ही पकाएं।
- ❖ एक से अधिक भोज्य पदार्थ पकाने के लिए सेपरेटर का प्रयोग करें।
- ❖ कुकर को अपने आप ठंडा होने दे। भाप निकलने से वह आसानी से खुल जायेगा।
- ❖ खोलने कि जल्दी हो तो उसे कुछ देर नल के नीच रख दें।
- ❖ प्रयोग के पश्चात कुकर को अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ रबर रिंग विशेष का सफाई का वाल्व सेफ्टी व ट्यूब वेंट , वजन , । रखे ध्यान

9.4 विधुत ओवन

ओवन में विधुत धारा के द्वारा ऊष्मा उत्पन्न करके भोज्य पदार्थो को बेक करने भुनने आदि का कार्य सम्पन किया जाता हैं ।

सिद्धांत:

ओवन विधुत धारा के उष्मीय प्रभाव के आधार पर कार्य करता है । जब तार के द्वारा विधुत धारा प्रवाहित कि जाती हैं ।

भाग :

1. **ढांचा :** एल्युमिनियम व क्रोमियम चढ़े हुए लोहे कि बनी बाहरी सरंचना होती हैं । ओवन के सामने कि दीवार पर गोल पारदर्शी

ढक्कन होता हैं । इसके द्वारा भोजन को देखा जाता हैं कि भोजन पका हैं या नहीं ।

2. **तार व प्लग :** बॉडी के साथ तार जुड़ा रहता हैं । तार के आगे एक प्लग होता हैं जिसे सॉकेट में लगाने से विधुत धारा बॉडी तक पहुचती हैं ।

3. **हैण्डल :** ओवन के निचले व ऊपर दोनों हिस्सों में कुचालक पदार्थ का बना हैण्डल लगा होता हैं । हैण्डल के द्वारा ओवन को उठाना आसान रहता हैं ।

4. **हीटिंग एलिमेन्ट :** यह नाइक्रोम का बना होता हैं जिसे कुण्डली के समान बनाकर लगाया जाता हैं । यह एलिमेन्ट ओवन के बीच व किनारों पर लगा रहता हैं ।

5. **हीटिंग एलिमेन्ट :** भोज्य पदार्थ पकाने हेतु एल्युमिनियम या स्टेनलेस स्टील के कण्टेनर प्रयोग में लिये जाते हैं । आयताकार ओवन में एक या दो शेल्फ होती हैं । इसमें एक साथ एक से अधिक अधिक भोज्य पदार्थों को पकाया जाता हैं ।

सावधानियां :

- ❖ कार्य समाप्ति पर ओवन को पोंछ कर रखे ।
- ❖ कन्टेनर में से भोज्य पदार्थ निकलने के पश्चात साफ करके रखे ।
- ❖ भोज्य पदार्थ को चाकू से खरोंच कर न निकाले ।
- ❖ खाद्य सामग्री नियत समय तक ही पकाएं ।

9.5 मिक्सर व ग्राइंडर

मिक्सी का उपयोग रसोईघर में सूखे मसाले, चटनी, चावल, दाल पीसने तथा पेय पदार्थ, जैसे लस्सी, मिल्क शैक आदि बनाने में प्रयोग किया जाता हैं ।

सिद्धांत :

यह विधुत संचालित उपकरण हैं । इसकी मोटर कि पॉवर 1/30 अश्वशक्ति कि होती हैं तथा ये विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तित करती हैं ।

भाग :

1. **मोटर :** यह मिक्सर का मुख्य अंग हैं। यह डायरेक्ट व ऑल्टरनेटिंग विद्युत पर चलाई जाती हैं।

2. **ब्लेड्स :** ब्लेड्स सतिल कि बनि होति हैं। यह विभिन्न क्रियाओं को पूरा करने के काम में ली जाती है, जैसे पसिना, जूस बनाना आदि।

3. **गति नियंत्रक स्विच -** यह मोटर की गति को नियंत्रित करता है। इसके द्वारा मोटर को धीमा, तीव्र व सर्वाधिक तीव किया जा सकता है।

4. **मोटर हाउसिंग** - विद्युत मोटर को मीटर हाउसिंग में सुरक्षित रखा जाता है। यह मोटर का बाहरी आवरण होता है।

5. **तार तथा प्लग -** मिक्सर की मोटर के साथ एक तार जुड़ा रहता है। यह विद्युत करन्ट को मोटर तक पहुंचाता है। प्लग की सर्किट में लगाकर स्विच ऑन करने से मोटर में विद्युत प्रवाह होता है।

6. **जार व कन्टेनर -** मिक्सर के साथ स्टेनलेस स्टील, प्लास्टिक तथा अनब्रेकेबल जार आते हैं। जिसमें आवश्यकतानुसार पिसाई के ढक्कन होते हैं।

सावधानियां -

- ❖ कार्य समाप्त होने पर मिक्सर को साफ करके रखें।
- ❖ जार में भोज्य पदार्थ फंसा हो तो जार में पानी डालकर चलाएं।
- ❖ मिक्सर के जार में 3/4 में ज्याद नहीं भरें।
- ❖ मोटर हाउसिंग को पानी में डुबाना नहीं चाहिए।
- ❖ मिक्सर को धूल कणों से बचाने के लिए ढक्कर रखना चाहिए।
- ❖ गीलें हाथों से मिक्सर के स्विच को नहीं छूना चाहिए।
- ❖ मिक्सर चलते समय बीच में चम्मच नहीं डालना चाहिए।

9.6 खाना पकाने की रेंज

खाना पकाने की रेंज का उपयोग भोज्य पदार्थ को पकाने, भूनने व बेक करने आदि में किया जाता है। यह दो प्रकार की होती है विद्युत चालित व गैस चालित।

भाग

1) **ढांचा -** सम्पूर्ण ढांचा इस्पात का बना होता है। बाह्य रत पोर्सलीन एनामेल अथवा स्टेनलैस स्टील की बनी होती है।
2) **बर्नर -** रेंज में भोज्य पदार्थ पकाने, भूनने व सकेने के लिए अलग अलग बर्नर लगे होते है।
3) **भट्टी -** भट्टी में भोज्य पदार्थ को रखने के लिए अलग अलग शैल्फ बनी होती है। भट्टी के बाहर पारदर्शी दरवाजा होता है। जिसके द्वारा भोज्य पदार्थ के पकने का निरीक्षण किया जाता है।
4) **गैस पाइप -** रेंज एक नली से जुड़ी होती है। जिसमें से होकर गैस सिलेण्डर तक पहुंचती है।

सावधानियां

- ❖ कार्य समाप्त होने पर रेंज को साफ करके रखें।
- ❖ ताप नियंत्रण व शीशे को अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ गैस की नली को साफ करके रखें।

9.7 विद्युत हीटर

विद्युत हीटर में एक पोर्सलीन की डिस्क में तापन तत्व लगा होता है। सामान्यतया तापन तत्व निकल, क्रोमियम, लोहे व मैंग्नीज के भिन्न भिन्न अनुपातों को लेकर बनाया जाता है। विद्युत हीटर गृहिणी के लिए सरल व सुविधाजनक होता है।

भाग

1) **ढांचा -** ढांचा विभिन्न आकारों का बना होता है। यह टिन प्लेट से निर्मित होता है।

2) **चीनी मिट्टी की प्लेट -** यह विद्युत की कुचालक होती हैं जिसके उपरी भाग में िस्प्रंगदार तार लगाने हेतु पुतली घुमावदार नालीनुमा दरार बनी होती है।
3) **धातु का तार -** धातु का एक स्प्रिंगदार तार होता है। इस तार के दोनों सिरों को अलग अलग दो पेचों से कस दिया जाता है।
4) **मेती -** धातु के तार के सिरों को प्लग पिन, जो कि हीटर के ढांचे में ही लगा होता है, दो अलग अलग तारों द्वारा विद्युत कुचालक बैकेलाइट के मोतियों के माध्यम से जोड़ दिया जाता है।
5) **जालीदार प्लेट -** जालीदार प्लेट सुरक्षा की दृष्टि से हीटर के ऊपर लगी रहती है।

सवधानियां

- ❖ हीटर को विद्युत कुचालक पर रखें।
- ❖ भोज्य पदार्थ जालीदार प्लेट पर गिर जाए तो ठण्डा होने के पश्चात उसे साफ करें।
- ❖ कार्य समाप्त होने पर स्विच बन्द कर दें व प्लग को तुरन्त निकाल दें।

9.8 वाशिंग मशीन

वाशिंग मशीन का मुख्य कार्य साबुन व अपमार्जक से मिले जल को बलपूर्वक कपड़े में से निकालना है। मशीन में सभी प्रकार के वस्त्र धोये व निचोड़ें जाते हैं। मशीन से वस्त्र की किस्म को ध्यान में रखकर ताप को नियंत्रित किया जाता है।

1- सूती व लिनन के लिए 190^0Fका ताप 3 मिनिट के लिए।
2- चादर, तौलिए, पर्दों आदि के लिए 300 ^{0}F ताप 4 मिनिट के लिए।
3- मानवकृत , रेशमी व गर्म वस्त्र के लिए 90^0F ताप 2 मिनिट के लिए।

मशीन में बेलनाकार व चौंकोर ड्रम होता है। इसमें वस्त्र को धोया जाता है। ड्रम के ऊपर प्लास्टिक या पारदर्शी ढक्कन लगा होता है तथा ढक्कन के

पास रेगुलेटर लगा होता है। इसके द्वारा मशीन की स्पीड को कम व तेज किया जाता है। मशीन के पीछे गंदा पानी निकालने के लिए पाइप व्यवस्था होती है। मशीन एक समय में 8 पौंड भार तक कपड़े एक साथ धो सकती है। मशीन का ड्रम या टब तेज धूर्णन गति से धूमता है। प्रत्येक मशीन के नीचे एक शक्तिशाली विद्युत मोटर व गीयर बॉक्स लगा होता है। गीयर बॉक्स के कारण मोटर की घूमने की गति को हम नियंत्रित कर सकते हैं।

मशीन पूर्णतया स्वचालित व अर्द्धचालित होता है।

प्रयोग करे की विधि -

1- मशीन को जल स्त्रोत के नजदीक रखना चाहिए।
2- मशीन में पहले हल्के रंग के वस्त्रों को धोना चाहिए।
3- धोने वाले वस्त्रों को गुण के अनुसार, जैसे सूती, सफेद, रंगीन, रेयॉन, नायलॉन तथा ऊनी आदि को अलग अलग करना चाहिए।
4- अपमार्जक की उचित मात्रा डालनी चाहिए।

सावधनियां

- ❖ कार्य समाप्ति पर मशीन को धोकर व सुखा कर रखें।
- ❖ रबड़ की नली गीली नहीं रहनी चाहिए।
- ❖ मशीन के साथ आई पुस्तिका के निर्देशों को ध्यानपूव्रक पढ़े।
- ❖ नल से जोड़ने वाली नली को उठाकर उपर रखना चाहिए।
- ❖ वस्त्रों के धुलते समय बीच बीच में हाथ न डालें।

9.9 गैस चूल्हा

यह भोजन पकाने का सरल, सुलभ, कम खर्चीला व सुविधायुक्त साधन है, इसमें तरल पट्रोलियम गैस (एल.पी.जी.) एक गैस सिलेण्डर में भरी रहती है। यह सिलेण्डर पाइप द्वारा गैस चुल्हे से जुड़ा होता है। गैस चुल्हें का नींव घुमाने पर गैस निकलती है जिसे माचिस या लाईटर की सहायता से जलाया जा सकता है। बाजार में गैस चुल्हें विभिन्न क्षमता 1-5 बर्नर के उपलब्ध है।

लाभ

1- यह एक सुविधाजनक साधन है।
2- नॉब की सहायता से ताप को आसानी से घटाया या बढ़ाया जा सकता है।
3- ईधन की अपेक्षा यह कम खर्चीला है।
4- यह साफ सुथरी विधि है।
5- इसे रखे हेतु कम स्थान की आवश्यकता होती है।
6- समय व श्रम की बचत होती है।

सावधानियां

- ❖ चूल्हा जलाने से पूर्व सारी सामग्री एकत्र कर लें।
- ❖ नॉब को खोलते ही तुरन्त माचिस या लाईटर से गैस जलाएं
- ❖ सिलेण्डर के पास अन्य कोई ज्वलनशील पदार्थ अथवा जलती वस्तु, जैसे लालटेन, मोमगती आदि नहीं रखें।
- ❖ चूल्हे से बर्तन हटाने से पूर्व गैस कम या बंद कर दें।
- ❖ प्रयोग के पश्चात् नॉब अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ सोने से पूर्व सिलेण्डर का मुख्य रेगुलेटर भी बंद करें।
- ❖ वर्नर के छिद्र हमेशा साफ रखें।
- ❖ सिलेण्डर व चुल्हें के बीच की पाईप आई.एस.आई. मार्का ही प्रयोग करें।
- ❖ समय समय पर पाईप चैंक करें। खराब होने पर तुरन्त बदल दें।
- ❖ सिलेण्डर लीक होने का भी ध्यान रखें।
- ❖ बच्चों को चूल्हें व सिलेण्डर से दूर रखें।

9.10 विद्युत केतली

विद्युत केतली का उपयोग चाय, कॉफी आदि बनाने के लिए किया जाता है। इसकी बनावट चाय की केतली के समान होती है।

सिद्धान्त

विद्युत ऊर्जा का परिवर्तन उष्मीय ऊर्जा में होता है।

भाग

1- **ढांचा -** यह पीतल या स्टील की बनी होती है। इसके ऊपर क्रोमियम की परत चढ़ी रहती है। ऊपर की तरह ढक्कन व किनारे पर हैण्डिल लगा रहता है। केतली के किनारे पर टोंटीनुमा रचना होती है। जिससे सामग्री बाहर निकाली जाती है। हैण्डिल के नीचे की तरफ विद्युत से जोड़ने के लिए प्लग लगा रहता है।

2- **हैण्डल -** केतली का हैण्डल बेकेलाइट (विद्युत कुचालक) का बना होता है। यह केतली को आसानी से पकड़ने में काम आता है।

3- **ढक्कन -** यह केतली के ऊपर लगा रहता है। इससे केतली के अन्दर की सामग्री को ठंडी नहीं होती है।

4- **ताप उत्पादक तार -** तार उत्पादक तार केतली के नीचे लगा होता है। इसके ऊपर इन्सुलेशन किया होता है, जिससे यह पानी के सम्पर्क में न आए। केतली के नीचे बेकेलाइट की बनी चार टांगे होती हैं जिससे ताप उत्पादक तार का सम्पर्क जमीन से न हो।

5- **पिन एवं विद्युत तार -** हैण्डल के नीचे विद्युतीय तार लगा होता है। केतली को प्रयोग में लेते समय विद्युत तार को पिन से जोड़ा जाता है व तार के दूसरे सिरे को विद्युत सर्किट में लगाया जाता है। स्विच दबाने से विद्युत प्रवाह होने लगती है।

सावधानियां

- ❖ निर्धारित मात्रा में ही पानी भरें।
- ❖ कार्य समाप्ति पर विद्युत तार को पिन से निकाल दें।
- ❖ केतली ठंडी होने पर सफाई करें।
- ❖ कार्य पूर्ण होने पर केतली को साबुन के पानी से धोकर सुखा कर रखें।

9.11 वैक्यूम क्लीनर

दरी, कालीन और सोफे आदि की सफाई करने के लिए वैक्यूम क्लीनर का उपयोग किया जाता है। इससे कार्य करने में समय व शक्ति की बचत होती है।

सिद्धान्त

वायु मंडलीय दबाव हवा को कम दबाव वाले स्थान की और खींचती है, जिससे निर्वात उत्पन्न हो जाता है। तत्पश्चात धूल, मिट्टी की गन्दगी आदि मशीन के अन्दर खिंच जाती है।

वैक्यूम क्लीनर दो प्रकार के होते हैं -

1- स्वचालित वैक्यूम क्लनीनर
2- विद्युत चालित वैक्यूम क्लीनर

भाग

1- **ढांचा** - क्रोमियम की बीन होती है। उसके चारों और उच्च गुणवत्ता की रबर परत चढी रहती है। इसमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए पहिए लगे रहते है।
2- **थैली** - धूल व गन्दगी सूक्ष्म छिद्रों की थैली में एकत्रित होती है।
3- **पंखा** - मोटर के ठीक पीछे की और पंखा लगा होता है। यह निर्वात उत्पन्न करने का कार्य करता है।
4- **हत्था** - हत्था रबर या प्लास्टिक का बना होता है।
5- **तार एवं प्लग** - विद्युत धारा से जोड़ने के लिए तार व प्लग लगे होते है।
6- **स्विच** - वैक्यूम क्लीनर के नीचे की और स्विच लगा होता है जिसे पैर द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
7- वैक्यूम क्लीनर के केई अन्य भाग होते है, जैसे चूषण सिरा, निर्वातक सिररा, नली, कूंची व पिचकारी आदि।

सावधानियां

- ❖ कार्य समाप्ति पर सभी भागों केा साफ करके रखें।
- ❖ आवश्यकता के अनुसार वैक्यूम क्लीनर के भागों का प्रयोग करें।
- ❖ समय समय पर मशीन व तेल का प्रयोग करें।

❖ सफाई करने के पश्चात पहले वैक्यूम क्लीनर का स्विच बन्द करें, फिर मुख्य प्लग से स्विच बन्द करें।

9.12 टोस्टर

यह एक विद्युत चालित उपकरण है जिसका प्रयोग ब्रेड अथवा डबल रोटी सेकने के लिए होता है। ये विभिन्न क्षमता के होते है जिनमें 1-4 पीस एक साथ सेक सकते है। टोस्टर में तापन तत्व लगा रहता है जो विभिन्न विधि से उष्मा प्रदान करता है। स्वचालित ताप स्थायी की सहायता से से नियंत्रित किया जा सकता है। तापन तत्व के चारों और धातु का ढांचा होता है ताकि ब्रेड के पीस सीधे तापन तत्व के सम्पर्क में नहीं आयें।

टोस्टर दो प्रकार के होते है -

1- साधारण टोस्टर जिसमें ब्रेड सेकने पर टुकड़ों को बाहर निकालना पड़ता है।
2- स्वचालित टोस्टर जिसमें सेकने पर टोस्ट अपने आप बाहर आ जाते हैं। इस प्रकार टोस्टर में टोस्ट के लने का भय नहीं रहता।

सावधानियां

❖ प्रयोग के बा यदि ब्रेड टुकड़े टोस्टर से चिपके रह गये हैं तो उन्हें तुरंत साफ कर दें।

❖ टोस्ट निकालने हेतु किसी नुकीली वस्तु का प्रयोग नहीं करें क्योंकि इससे तापन तत्व क्षतिग्रस्त हो सकता है।

❖ विद्युत उपकरण के प्रयोग में रखी जाने वाली सावधानियां इसमें भी रखें।

❖ टोस्टर को प्रयोग के बाद सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोंछ कर रखें।

9.13 ताड़ित

रोजमर्रा कार्यों में किसी वस्तु का मिश्रण तैयार करने अथवा उसे बीट करने हेतु बीटर का उपयोग होता है। दही, लस्सी बिलोने अथवा मक्खन निकालने मे यह सहायक है। अण्डे को फेटने मे भी यह उपयोगी है।

ताडित दो प्रकार के होते है

1 **फेंटने वाले ताड़ित -** ये लम्बे पतले तारों के बने होते हैं जो नीचे अण्डाकार रूप लिये रहती हैं। ऊपर पकड़ने के लिए हैण्डल होता है। इसका मुख्य उपयोग किसी वस्तु में वायु संचरण, विशेषकर अण्डे में, कराने के लिए किया जाता है। फेंटी जाने वाली सामग्री को पात्र में रखकर पीड़ित को जल्दी जल्दी हाथ द्वारा हिलाया जाता है जिससे खाद्य सामग्री में वायु प्रविष्टि हो जाती है।

2 **घूमने वाला ताड़ित -** यह भी पतली तारों का बना होता है। ये दो प्रकार के होते हैं -

अ) हस्तचालित ताड़ित - इसमें ताड़ित को गति देने के लिए हैण्डल के मध्य एक दांतों वाला पहिया लगा रहता है जो ब्लेड्स को घुमाता व गति प्रदान करता है।

ब) विद्युत चालित ताड़ित - इसमें पेडेस्टल स्टैण्ड में विद्युत मोटर लगी होती है। विद्युत धारा से सम्पर्क होने पर ब्लेड तेज गति से घूमती हैं जिससे फेंटी जाने वाली वस्तु में वायु संचरण होता है। गति नियंत्रक स्विच द्वारा गति धीमी या तेज की जा सकती है।

सावधानियां -

- ❖ ध्यान दें कि ताड़ित के ब्लेड स्टेनलेस स्टील के बने हों।
- ❖ प्रयोग के बाद अच्छी तरह धोकर सूखे कपड़े से पोंछ कर रखें।
- ❖ विद्युत उपकरण के प्रयोग में रखी जाने वाली सावधानियां इसमें भी रखें।
- ❖ ताड़ित को प्रयोग के बाद सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोंछ कर रखें।

9.14 अभ्यास प्रश्न

1. समय व शक्ति की बचत उपकरण की विस्त्रत जानकारी दीजिये

9.15 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा बी.के. बख्शी

साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा डा. वृंदा सिंह
पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
एवं आन्तिरक सौजन्य डा. रीना खनुजा
4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi
"Managment for Morden Families Sterling"
5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family

इकाई 10

फालतू सामान का उपयोग

10.0 उद्देश्य
10. 1 प्रस्तावना
10.2 फालतू सामान के उपयोग से बनी विभिन्न वस्तुए
10.3 अभ्यास प्रश्न
10.4 संदर्भ ग्रन्थ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- छात्र इसके माध्यम से फालतू समान का उपयोग करना सीखेंगे
- फालतू समान से बेहतरीन सजावट करना सीख पाएगें

10.1 प्रस्तावना

काफी लोग दीपावली पर घर का पुराना और बेकार सामान फेंक देते हैं। पुराने सामान में काफी चीजें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम नए तरीके से पुन: उपयोग कर सकते हैं। यहां कुछ ऐसे क्रिएटिव तरीके बताए जा रहे हैं, जिनसे घर की बेकार और पुरानी चीजें पुन: हमारे काम आ सकती हैं। इन क्रिएटिव तरीकों से घर की सुंदरता भी बढ़ती है और हमारी खुद की रचनात्मकता भी बढती है।

वास्तु के अनुसार घर में रखी पुरानी चीजें वास्तु दोष उत्पन्न करती हैं और इस कारण घर का वातावरण भी नकारात्मक भी हो सकता है। इस नकारात्मक ऊर्जा से बचने के लिए पुरानी चीजों को या तो फेंक देना चाहिए या फिर उन्हें नए तरीकों से सजाकर पुन: उपयोग किया जा सकता है ।

10.2 फालतू सामान के उपयोग से बनी विभिन्न वस्तुए

1.पुराने कलैंडर का एक और नया रूप

पुराने कलैंडर को फूल उगाने के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है। विशेष रूप से तब जब उनका रंग आस पास की किसी दीवार या दरवाजे से मिलता जुलता हो। अगर गरम देश में रहना हो तो इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि पौधा पूरी तरह से धूप में न हो। कलैंडर सामान्य मिट्टी के गमलों की अपेक्षा जल्दी गर्म हो जाते हैं और फूलों की जड़ों को नुक्सान पहुँचा सकते हैं । कई तरह के फूल एक साथ इसमें लगाए जाएँ तो यह फूलों के गुलदस्ते की तरह सुंदर लगता है।

कलैंडर या बड़ी छन्नी जिसमें हम सब्जियाँ धोते हैं, लगभग हर साल नई खरीद ली जाती है। कभी मैचिंग रंगों के चलते, कभी सुंदर डिजाइन या आकार के चलते, जबकि पुरानी भी एकाध जगह से पिचक जाने या रंग निकल जाने से ज्यादा खराब नहीं हई होती है। अधिकतर कलैंडर बनावट और डिजाइनों के कारण बहुत आकर्षक होते हैं और इनको फेंकने का मन नहीं करता। अगर आपको भी पुराना कलैंडर प्यारा है और उसे फेंकने का मन नहीं, तो रसोई में जगह न घेरने दे। उसको एक नया रूप और नया

घर दें। इस बार किसी घरेलू गोष्ठी में उसे बर्फ रखने का पात्र बना दें। जब यह केलैंडर मेज पर हो तो अपनी खाने की मेज का सेट भी मिलते-जुलते रंग का निकालें। पुराने पात्र का यह नया रूप शीतल पेयों का स्वाद तो बढ़ाएगा ही, मेज की शोभा भी बढ़ाएगा।

पुराने डिब्बों का नया गुड्डा

हम सबके घर में कुछ पुराने डिब्बे जरूर होते हैं। इस गुड्डे के लिये खास आकारों को ध्यान में रखते हुए डिब्बे इकट्ठे करने होंगे। विभिन्न आकारों के डिब्बों को इस प्रकार जोड़ना होगा कि वे सही तरह से गुड्डे का आकार बना सकें। गुड्डे के हाथ, कान और नाक बनाने के लिये डब्बे के ढक्कनों का प्रयोग किया गया है। उसके बटन और आँखे पुरानी बोतलों के ढक्कन से बनाई गई है। यह डिब्बा इतना चिकना-चुपड़ा तो नहीं कि इसे घर के भीतर में रखा जाए। लेकिन इसे घर के बाहर या बगीचे या कार्यशाला में जहाँ मन करे और जहाँ यह अच्छा लगे इसे बनाया जा सकता है। अगर जंक लगे हुए पुराने डिब्बे पसंद न आएँ तो डिब्बों को सुंदर रंगों से रंगा भी जा सकता है।

3. पुरानी दराज का नया उपयोग

घर की पुरानी दराज जो पुरखों की यादगार हो, इतनी मजबूत जिसका धूप हवा और पानी कुछ बिगाड़ न सकें, साथ ही इतनी टूटी-फूटी भी नहीं के कचरे में फेंक दी जाय, घर के सामने या पीछे के द्वार की शोभा

बढ़ाने का उपयुक्त साधन बन सकती है। अगर रंग खराब हो गया हो तो उसे फिर से रंगा जा सकता है। उसे बेकार पड़े फूलदानों और कलाकृतियों से सजाया जा सकता है और उसकी दराजों में फूलों के छोटे गमले रखे जा सकते हैं। उसके आसपास घर की बेकार पुरानी पड़ी टोकरियाँ और चौकियाँ भी अपना घर बना सकती हैं। ऊपर कुछ खूँटियाँ लगाकर छाते और टोपी आदि टाँगने की जगह बनाई जा सकती है। यह अगर पीछे के दरवाजे पर है तो खूँटियों पर बगीचे के सामान जैसे बेलचा या खुरपी को घर मिल सकता है। सिर्फ दराज ही क्यों कुछ और फरनीचर भी इस प्रकार सजावट के काम आ सकते हैं जरूरत है बस कलात्मक सोच की ।

पेस्टल रंगों की बहार

पुरानी बोतलों का सदुपयोग करना हम सब जानते हैं, और उनको रंग कर सुंदर बनाया जा सकता है, यह भी। लेकिन रंगों के कुछ नये प्रयोग कुल प्रभाव में कितना बदलाव ला सकते हैं उस पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है। पेस्टल रंगों की यह बहार गर्मी के मौसम में तरावट का काम करेगी। धारियों का सौदर्य आँखों को रुचता है। बीच में बार-बार सफेद रंग का दोहराव रंगों का आकर्षण बढ़ा देगा। कुछ पुरानी बोतले इकट्ठा करें। सुंदर आकार और सुंदर सतह वाली बोतलों को रंगने के लिये चुनें। पुराने रंग निकालें और एक शीशी सफेद रंग की खरीद लें, बस शुरू करे रंगों के आकर्षण का जलवा! आपकी कला का यह रूप कमरे के किसी भी उदास कोने को खुशनुमा बना देगा।

खाली दीवार का सौंदर्यकिसी एक लंबी खाली दीवार को सुंदर बनाना हो तो दरवाजे या खिड़की उसमें जान फूँक सकते हैं, फिर चाहे दरवाजा पुराना ही क्यों न हो। दरवाजे पर इच्छानुसार नया रंग लगाएँ, कुछ पुराने एक से डिब्बों को साफ कर के उन पर को नया रंग करें और फूल-पौधों से सजाकर यह सुंदर लटकन बना लें। नीचे एक बड़ा पौधा रखें और देखें कि अपने हाथों से सजाए गए इस कोने में कितना रूप बरसता है।

जरा-सा रंग, जरा-सा समय, जरा-सा धैर्य और जरा सी रुचि किसी भी मामूली कोने को बिना बड़े खर्च के सजा सकते हैं।

बगीचे के औजारों का सुंदर घर

खुरपी, कुदाल, तसले, बीजों के पैकेट, कीड़ों की दवा ये सब हर बगीचे में होते हैं। लेकिन इनको जहाँ भी रखो बगीचा गंदा दिखाई देता है। इन सबको सही जगह मिल जाए और बगीचा भी गंदा न दिखाई दे उसके लिये थोड़े से परिश्रम और थोड़ी सी कलात्मक रुचि की जरूरत है। साथ के चित्र में देखें- बगीचे के औजारों के साथ कुछ पत्थर और कुछ फूलों के साथ एक पुरानी तख्ते को दीवार में जड़ा गया है। तख्ते का सदुपयोग तो हुआ ही है, औजारों को घर मिल गया है और बगीचे का एक सूना कोना सज गया है। मैले हो गए कुछ पुराने मिट्टी के खिलौने भी यहाँ सजाए जा सकते हैं।

कायाकल्प पुरानी सैंडिल का

सैंडिलों में जो चीज सबसे पहले खराब होती है वह है उनकी हील। कभी धूल मिट्टी से तो कभी कंकड़ पत्थर से टकरा कर उनका चमड़ा या कपड़ा क्षतिग्रस्त हो ही जाता है। फिर किसी अच्छे आयोजन पर पहनने के लिये वे बेकार-सी हो जाती हैं। अगर आपके पास भी ऐसी कोई सैंडिल है तो उसकी हील को चित्र का सहारा लेते हुए अपनी कल्पना से सजा लें। बस एक चिमटी, कुछ क्रिस्टल के नग और एक अच्छे ग्ल्यू की आवश्यकता पड़ेगी। बाजार में तरह तरह के सजावटी नग मिलते हैं। उन्हें अपनी आवश्यकता इच्छा और रुचि के अनुसार हील पर लगाते हुए, क्षतिग्रस्त

हिस्सा छुपा दें और चमचमाती हुई नई हील के रौब से दुनिया जगमग कर दें

ढक्कनों के लिये विशेष स्थान

रसोईघर में सामान रखने की कितनी भी अच्छी व्यवस्था क्यों न हो कुछ सुविधाओं की कमी बनी रहती है। अब इन ढक्कनों को ही देखें- अगर इन्हें अलमारी के खानों में रखना हो तो पूरा एक खाना घिर जाए, निकालते रखते समय सही ढक्कन खोजने में हर बार ढेर से समय और ऊर्जा का व्यय! अगर इन्हें बर्तनों पर ढँककर रखा जाए तो जगह की कमी। अगर नई अलमारी रसोई में लाने की जगह नहीं तो यह उपाय अपनाएँ। बाजार मे तौलियाँ टाँगने की तरह तरह की लोहे अल्युमिनियम या अन्य धातुओं की रॉडें मिलती हैं। उन्हें अलमारी के दरवाजें में चित्रानुसार लगाएँ, ढक्कनों के लिये विशेष स्थान बनाएँ और पुरानी अलमारी की उपयोगिता बढ़ाएँ।

पुराना चाय का प्याला सिलाई की सुविधा के साथ

भला शृंगार की मेज पर पुराने चाय के प्याले का क्या काम? लेकिन अगर चाय का

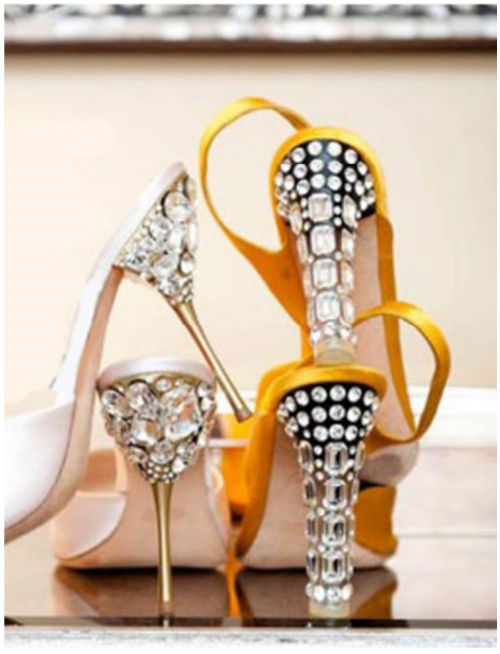

प्याला चित्र जैसा सुंदर हो और काम की चीज भी, तो फिर कैसे न शृंगार-मेज की शोभा बन जाए! अक्सर चाय के सेट का बचा हुआ एक सुंदर प्याला अपनी सुंदरता के कारण फेंका नहीं जाता। अगर प्याले के नमूने से मैंचिंग कढाई कर के प्याले के आकार का तकिया बनाया जा सके तो सूइयों, आलपिनों और सेफ्टीपिनों के लिये एक सुंदर स्थान बन जाएगा। प्याले के नीचे की तश्तरी का उपयोग रील रखने के लिये किया जा सकता है। बात सिर्फ एक बेकार चीज को उपयोगी बनाने की है। अगर आप भी ऐसा कर सकें तो अपनी कारीगरी की इस शान को शृंगार मेज पर सजा दें। सहेलियों पर रौब जमाएगी, वक्त पर काम आएगी और मेज की शान तो बढ़ाएगी ही।

हरी पत्तियाँ सुंदर कोना

धनिया पुदीना तुलसी और मेथी घर में रखना किसे अच्छा नहीं लगता? ये सभी भारतीय घरों की शोभा हैं। चाहे रोज का भोजन हो या त्यौहारों का, सुख सौभाग्य सुंगंध स्वास्थ्य और स्वाद बढ़ाने वाली इन नन्ही पत्तियों की जब तब जरूरत पड़ती ही रहती हैं। लेकिन आज के तंग घरों में इतनी पत्तियों की क्यारियाँ किस कोने में बनाई जाएँ और कैसे? लीजिये इसका भी मिल गया एक उपाय! किसी भी कोने में चित्र के अनुसार थोड़ी सी कलात्मकता का प्रयोग करते हुए पतियों को बो दें। घर में पुराने पड़े टब और डिब्बे सब काम आ जाएँगे। बड़े पात्र नीचे रखें और लंबे पात्र पीछे। कोना सजावट से जीवंत हो उठेगा है वक्त जरूरत पर रसोई के काम आएगा वह अलग!!

फिर-से नए जूते के फीते

जूते के फीतों के सिरे अक्सर फैल जाते हैं जिसके कारण उन्हें पिरोना मुश्किल हो जाता है, उन्हें फेंकना पड़ता है और नए फीते खरीदने पड़ते हैं। नए फीते खरीदने हों और जूते रंग बिरंगे हों तो मैचिंग रंग ढूँढना एक समस्या हो सकती है। इस स्थित में श्रेयस्कर उपाय यह है कि उनकी मरम्मत कर ली जाए। मरम्मत करनी आसान है। थोड़ा सा ग्ल्यू उँगलियों में लेकर सफाई से सिरे के धागों को इकट्ठा कर के हल्का बट लें। वे आपस में चिपक जाएँगे। ग्ल्यू के सूखने तक प्रतीक्षा करें फिर उसके ऊपर एक पारदर्शी टेप कसकर बाँध दें। बस हो गए फिर से नए जूते के फीते। अब इन्हें फेंकने और नये ढूँढने की जरूरत नहीं।

केक ट्रे प्रसाधन में

अक्सर घर में एक से अधिक केक ट्रे हो जाती हैं। कभी कोई उपहार में दे जाता है, तो कभी नई ट्रे खरीद लेने पर पुरानी वाली मन से उतर जाती है। ऐसी कोई ट्रे बर्तनों की अलमारी में बहुत दिनों से रखी हो तो उसे ड्रेसिंग टेबल या प्रसाधन कक्ष में इच्छानुसार सजाया जा सकता है। अगर उसका रंग ऐसा हो कि बाथरूम या ड्रेसिंग रूम में अलग थलग मालूम हो तो उसके ऊपर मिलते जुलते रंग का एक तौलिया या नैपकिन बिछा दें। मैचिंग साबुनदानी या इसी प्रकार के कुछ प्रसाधन के सामान सजा दें। सुविधा और सौन्दर्य दोनो का आनंद लें, घर में बेकार पड़ी चीज उपयोगी बनकर अपना स्थान ग्रहण करे तो फिर इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है।

टिशू पेपर के खाली रोल का कमाल

टिशू पेपर हमें साफ-सुधरा रखने में मदद करता है लेकिन जब पेपर खत्म हो जाता है तब हम दफ्ती वाले रोल को कचरे में फेंक देते हैं। साथ की फोटो में दीवार पर टँगी सुंदर कलाकृति इसी बेकार रोल से बनाई गई है। रोल को चपटा कर के इच्छानुसार चार या छह टुकड़ों में काटें, मनचाहा रंग करें और मनचाही गोल या चौकोर आकृति में ग्ल्यू से चिपका लें। फिर देखें कि यह बेकार रोल घर की सुंदरता को कैसे बढ़ाता है। इसे कमरे की

साज सज्जा के अनुसार रंग दिया जा सकता है। या फिर काले रंग से रंग कर लोहे जैसा प्रदर्शित किया जा सकता है। इन आकारों को किसी पेड़ की पत्तियों को रूप में भी सजाया जा सकता है, चाहिये तो सिर्फ थोड़ा सा समय और कल्पना की उड़ान

पुराने बर्तनों का रूपाकार

बर्तन सदा से सजावट और सौदर्य का का प्रतीक रहे हैं, लेकिन हम संग्रह उन्हीं बर्तनों का करते हैं जो देखने में तो सुंदर होते मगर किसी काम के नहीं होते। आइये अब हम उन बर्तनों के संग्रह की बात सोचें जो हमारी सेवा करते करते पुराने हो गए हैं और रसोई में काम आने लायक नहीं रहे। आलू प्याज और लहसुन रखने वाला यह छींका फेंकने से पहले सालों तक किसी कोने का हरियल सौंदर्य बना रह सकता है। मेथी सलाद बेसिल छोटी पालक हरा धनिया या पुदीने को इसमें जूट का अस्तर लगाकर बहुत सरलता से उगाया जा सकता है। इसके साथ ही टाँगे गए है कुछ पुराने कलैंडर मगर इनकी जगह किसी भी आकार के पैन या कढ़ाई लटकाए जा सकते हैं। अगर देखने में मैले लगें तो इनको लटकाने से पहले किसी सुंदर रंग से रँग लें आ गया न इस खाली अँधेरे कोने में जीवन का सैलाब?

जब मेज बनी बिस्तर

सुंदर पायों वाली आकर्षक मेज बाजार से ढूँढकर घर में सजाना अपने आप में एक मेहनत भरा काम है, जो सुख और संतोष दोनों देता है। लेकिन समय के साथ हर चीज पुरानी हो जाती है। नये डिजाइन और परिवार के लोगों की नई पसंद के सामने

पुरानी मेज फेंकने को दिल न करे तो क्या करें? देखें इस सुंदर बिस्तर को यह एक पुरानी मेज पर रंग रोगन लगाकर बनाया गया है। मेज के पाये मसहरी लगाने के काम आने वाले हैं और मेज को जमीन से ऊँचा करने के लिये किनारों पर कुछ लकड़ी लगाई गई है। बीच की जगह में एक आरामदेह गद्दा डाला गया है। यह पलंग किसी छोटे बच्चे के लिये बहुत उपयुक्त है जिसमें उसे न तो ऊपर चढ़ने में परेशानी होगी और न ही नीचे गिरने का भय। बाकी सब सुविधाएँ तो यहाँ हैं ही।

किचेन टॉवल होल्डर में सहेजें आभूषण

एक बरसों पुराने किचेन टॉवल होल्डर को, जिसकी लोहे में ढली कलात्मक सुंदरता आज भी मन मोह लेती है, कोई कूड़े में कैसे फेंक सकता है? उसके लौह आवरण पर चढ़ी मोरचे की परत के कारण उसे रसोई में रखना भले ही ठीक न हो पर उस पर नया रंग रोगन कर के प्रसाधन के स्थान की शोभा बढ़ाई जा सकती है। यह पुराना किचेन टावल होल्डर माला और कंगन संभालकर रखने में होशियार है। जब कभी समय मिले घर की किसी ऐसी ही बेकार वस्तु को सुंदर रूप देने का प्रयत्न करें और देखें कि घर किस प्रकार सज उठता है।

डब्बे जिनमें सुंदर सजे सामान

आजकल आप कुछ भी खरीदें पैकिंग के डिब्बे इतने सुंदर आते हैं कि तुरंत उन्हें फेंकने का मन नहीं होता। घर में इतनी जगह नहीं कि कही रख सको तो फिर वे बिना मतलब कहाँ रखे जाएँ?उसी उलझन को सुलझाने के लिये प्रस्तुत है यह नायाब रैक

जिसमें चाहें पेंसिल रखें, रंग रखें या ऊन के गोले, यह हर हाल में सुंदर दिखेगा और चीजों को संभालकर रखेगा। इसे पढ़ने की मेज, सिलाई की मेज, प्रसाधन के बेसिन या रसोई में भी रखा जा सकता है। चित्र में दिखाए गए रैक को तीन सुंदर डिब्बों के बीच छेद में एक गोल ताँबे के पाइप में पिरोकर बनाया गया है। नीचे के स्टैंड के लिये सबसे बड़े डिब्बे के ढक्कन का प्रयोग किया गया है। इसको भारी बनाने के लिये इसके अंदर, समान ऊँचाई वाले प्लाइवुड के एक टुकड़े को गोल काटकर बीच में रखा गया है। पाइक के निचे एक वाशर और नट से इसे कसा गया है। ऊपर के डिब्बों को पाइप में महीन छेदक कर के फँसाए गए एक पेंच और नट के ऊपर रोका गया है। इसे जब चाहें खोलकर पैक कर लें और जहाँ चाहें जोड़कर खड़ा कर लें।

उदास कोने का कायाकल्प

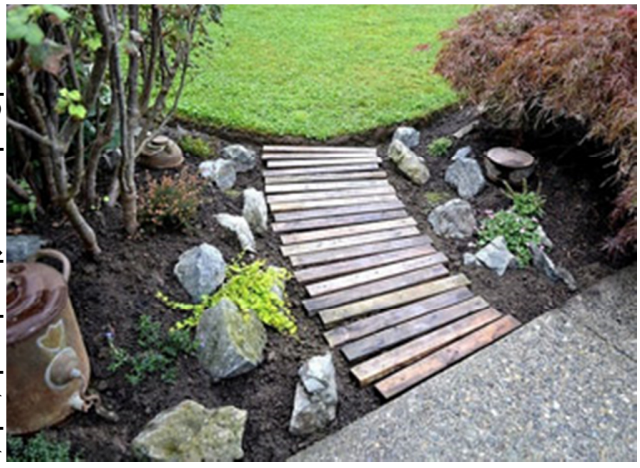

अक्सर बगीचे और बरामदे के बीच कोई कोना ऐसा बच जाता है जो उदास लगता है। जिस पर किसी का ध्यान नहीं गया, जिसे किसी ने सँवारा नहीं। ऐसे उदास कोने को घर में इधर उधर पड़ी बेकार चीजों से सजाया जा सकता है। थोड़े से पत्थर, पुरानी कुर्सी या स्टूल के फट्टे, एक पुराना मिट्टी का बर्तन और कोने में एक छोटी सी लाइट। लाइट सोलर भी हो सकती है और बैटरी वाली भी। बस घर में रहने वालों की कलात्मकता और व्यक्तिगत रुचि इसमें जान भर देगी। कोई जरूरी नहीं जैसा लिखा गया है वैसा ही किया जाय, जो चीजें अपने पास हों और अच्छी लगें उनका प्रयोग हो तो फिर यह उदास कोना मुसकुरा देगा।

टायर में निखरा प्राकृतिक सौंदर्य

हमारे घरों में अक्सर पुराने टायर बेकार पड़े रहते हैं। उनको मनचाहे रंग से रंग कर पौधे लटकाने का सुंदर पात्र बनाया जा सकता है। जब पौधा फूलों से भर जाएगा तो अपने आप पास की जगह को अपने रूप से और सुंदर बना देगा। टायर को दीवार पर किसी ऐंगिल ड्रिल से दो छेद कर के एक तार बाँध देना चाहिये। पेड़ की शाखा पर इसे जंजीर से बाँधकर लटकाया जा सकता है। टायर के निचले हिस्से में ड्रिल से कुछ छेद बना देने चाहिये ताकि पानी रुककर पौधे की जड़ों को नुक्सान न पहुँचाए। ऐंगिल बाजार से अपनी पसंद की डिजाइन का खरीद सकते हैं। टायर में मिट्टी भर के पौधा नहीं लगाना चाहिये। एक गमले में पौधा लगाकर टायर में रखना चाहिये। पौधा लगाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि वह टायर के रंग में खो न जाए। यानि टायर और फूलों के रंग मिलते जुलते न हों विपरीत हों। बस घर या बगीचे का कोई भी कोना सजा लें इस सुंदर विचार से।

पुस्तक चिह्नों का अलंकृत संसार

जिन्हें पुस्तकों से प्रेम है वे पुस्तक चिह्नों के महत्व को समझते हैं। इन पुस्तक चिह्नों को देखकर किसका मन न मचलेगा। विशेष रूप से महिलाओं को ये खूब भाएँगे। कुछ बची हुई लेसें, कुछ कपड़ों पर टाँकने वाले रिबन, कुछ ऐसे झुमके जिनका जोड़ा खो गया, कुछ ऐसे पेंडेंट जिनके झुमके खो खो गए, या फिर कुछ पुराने ब्रोच, इन पुस्तक चिह्नों को बनाने में काम आएँगे। इस प्रकार के सजावटी लटकन वाले ये आकर्षक पुस्तक चिह्न न केवल किताब का सही पन्ना खोलने में मदद करेंगे बल्कि जिस मेज पर ये किताबें रखी होंगी उसकी शोभा में भी चार चाँद लगाएँगी। अपनी

पुस्तक प्रेमी सहेली को देने के लिये इससे अच्छा शायद ही कोई उपहार हो। तो आप भी बनाएँ और इन अनोखे पुस्तक चिह्नों का लाभ उठाएँ।

पुराने लैंपों का पुनर्जन्म

एक समय था जब लोहे या पीतल के लैंप चलन में थे। हमारे दादा दादी के जमाने के ऐसे कुछ लैंप लगभग हर घर में होते हैं। लोहे के लैंप कुछ जंक लगे कुछ भदरंग हुए और पीतल के लैंप कुछ काले कुछ रौनक उड़े हुए बंद पड़े गैराज या दुछत्ती में जरूर मिल जाएँगे। अगर आपको ऐसा कोई लैंप मिल जाता है तो समझ लें कि लैंप के पुनर्जन्म और आपके कमरे के काया कल्प का समय आ गया। इस पुराने लैंप को अच्छी तरह साफ करें, अपने कमरे के रंग या पर्दों के रंग से मिलते जुलते रंग में रंग डालें। इससे इनको बार बार साफ करने के झंझट से मुक्ति मिल जाएगी। फिर इनपर मैचिंग रंगों का शेड लगा दें और किसी सूने पड़े कोने में एक मेज के ऊपर सजा दें, हो गया न कमरे का कायाकल्प!

वायर स्पूल से बना बुक शेल्फ

घर में वायरिंग हो तो बड़े बड़े स्पूल खाली हो जाते हैं। इन्हें कचरे में फेंकने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता। थोड़ी सी सूझबूझ और कलात्मकता के साथ हम इन्हें सुंदर बुककेस के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। इस स्पूल को पहले सफेद रंग से रंगा गया है, फिर उसमें नीचे पहिये लगाए गए हैं और बाद में बराबर दूरी पर गोल आकार की पाँच छड़ियों का प्रयोग किया

गया है, ताकि किताबें ज्यादा हो जाने पर गिरें नहीं। छड़ियों के लिये थान लपेटे जाने वाले डंडों या कलात्मक छड़ियों का प्रयोग भी किया जा सकता है। ऊपर आप चाहें तो लैंप रखें या ग्लोब या कुछ और जिसकी भी जरूरत किताबें पढ़ते समय पड़े उसे यहाँ स्थान मिल सकता है।

पुराने दरवाजों से बगीचे का केबिन

घर में बेकार पड़े पुराने दरवाजों से बगीचे में सुस्ताने के लिये एक छायादार स्थान का निर्माण किया जा सकता है। इसे तीन तरफ से बंद कर के ऊपर से ढँक देना चाहिये। सुरुचिपूर्ण सजावट इसे आकर्षक बना देगी। इसके आसपास कुछ पेड़ पौधे लगा दिया जाएँ तो क्या कहने। एक सुंदर सी लटकती हुई टोकरी स्वागत करती हुई मालूम होगी। तेज धूप में यह सुस्ताने के काम आएगा और शाम को चाय पाने के लिये भी सुरक्षित स्थान का काम देगा। अगर किसी कारण से इसमें बैठना न भी चाहें तो यह औजारों को रखने के काम आ सकता है।

पुराने खिड़की के दरवाजे का नया

उपयोग अगर घर में पुरानी खिड़की का कोई दरवाजा बेकार पड़ा है और बगीचे में कोई झुका हुआ पेड़ है तो खिड़की का दरवाजा एक बहुत ही सजावटी दृश्य पैदा कर सकता है। चित्र के अनुसार इसे पेड़ की किसी झुकी हुई शाख से लटकाएँ और उसके कब्जे वाले हिस्से को मोड़कर किसी मजबूत चेन से जमाकर कुछ गमले सजा दें।

इच्छानुसार इस पर कोई रंग लगाया जा सकता है और उसका ध्यान रखते हुए गमलों का चुनाव करना है। बगीचे में झूलती यह सुंदर लटकन सभी का मन मोह लेगी।

सेट से बिछड़े हुए बर्तनों से शृंगार मेज का शृंगार

एक दूधदानी जो समय के साथ अपनी चायदानी और शकरदानी से जुदा हो गई, एक रायता परोसने का बर्तन जिसका डिनरसेट खराब होकर कब का दान में चला गया, एक रंगीन गिलास जिसके अन्य साथी उसे अकेला छोड़कर चल बसे, एक सुंदर प्याला जो अपने खानदान में अकेला बच गया, एक नमकीन परोसने वाली डिश जो तीन में से एक ही बची रह गई, इन्हें किसी कबर्ड में भरी अँधेरे की उदासी में बंद कर देना ठीक नहीं है। एक रंगीन ट्रे लाएँ औ उन्हें शृंगार की मेज पर सजा दें। वे आपके मेकअप के ब्रश, नेल फाइल, रुई की फुरेरियाँ, त्वचा साफ करने वाले फुंदने, और मेकअप लगाने वाले स्पंज सभी का ठीक से ध्यान रखेंगे। कर के देखें यह सुंदर ही नहीं सुविधाजनक भी है।

पुरानी बोतल से बना सुंदर पात्र

प्लास्टिक की सुंदर पुरानी बोतलों के अनेक सजावटी उपयोग हो सकते हैं। इस पात्र को बनाने के लिये हमें चाहिये एक पुरानी बड़ी प्लास्टिक की बोतल (जैसी फेब्रिक-साफ्टनर की होती है), एक मार्कर, एक चाकू और कुछ रंग पात्र को रँगने के लिये। सब चीजें एकत्र करने के बाद चित्र 2 के अनुसार निशान लगाएँ और निशान पर काट लें। चित्र 5 के अनुसार सामने से बोतल को सीधा काटना है। अब चित्र 5 के अनुसार बोतल के दो हिस्से हो जाएँगे। नीचे वाले हिस्से

को चित्र 6 के अनुसार रँगना है और सजा देना है। लीजिये तैयार है सुंदर पात्र- बगीचे में रखें तो इसमें पौधे लगाए जा सकते हैं, रसोईघर की दीवार में लगाएँ तो इसमें चम्मच रखे जा सकते हैं। अगर पढ़ने लिखने की मेज के सामने की दीवार पर लगाएँ तो इसमें कलम पेंसिल रखे जा सकते हैं। है न उपयोगी सुझाव ?

. पुरानी बेड साइड टेबल से बना बेटी का रसोईघर

जब कभी पुरानी डबलबेड टूट जाती है तो अक्सर मैचिंग बेडसाइड टेबल जैसे के तैसे नये ही बने रहते हैं बच्चों को लिये इससे खेलने का एक सुंदर रसोईघर बनाया जा सकता है ऊपर की सतह को काटकर दो हॉट प्लेट और एक सिंक का स्थान बनाया गया है हॉट प्लेट की सतह के लिये लकड़ी को दो गोलों को काला कर के चिपकाया गया है सिंक के लिये छेद कर के स्टील का एक छोटा तसला लगा दिया गया है पानी के नल के लिये कोट टाँगने वाली खूँटी का प्रयोग किया गया है और उसके दोनो तरफ नल को खोलने बंद करने के लिये दरवाजे की गोल छोटी स्टील की मूठ को लगाया गया है अलमारी के एक और ढेर सी खूँटियाँ लगाई गई हैं जिसमें झाड़न और करछुल आदि लटकाए जा सकते हैं दूसरी और मसालों वाला एक शेल्फ लगायाग गया है कुछ पुराने बर्तन या फिर किसी स्टोर से खरीदे गए बच्चों के खेलने के बर्तनों के साथ तैयार है नन्हीं का सुंदर रसोईघर नीचे की बंद शेल्फ का प्रयोग ओवन की तरह किया जा सकता है।

टिश्यू पेपर के रोल के नये प्रयोग

कॉर्डलेस का युग आ जाने के बाद भी घर में तारों से छुटकारा नहीं मालूम होता कैमरे के तार, कंप्यूटर के तार, गेम के तार, बगीचे के औजारों के तार और कुछ नहीं तो तारों को जोड़ने वाले तार ताकि हर जगह बिजली को पहुँचाया जा सके और बाद में तार को हटाया भी जा सके इतने सारे तारों को रखने के लिये पूरी एक दराज की जरूरत होती है अगर एक दराज में इन सबको रखा तो फिर सब उलझकर इतना परेशान करते हैं जिसकी सीमा नहीं। इससे बचने के लिये टिश्यू पेपर के रोल का प्रयोग करें। चित्र में जिस तरह दिखाया गया है उस तरह तार को मोड़कर उस पर रोल चढ़ा दें चाहें तो रोल पर लिख भी दें कि यह तार किस काम या जगह के लिये है फिर देखें तार किस तरह व्यवस्थित रहते हैं। आपको देखकर अन्य लोग भी यह यह उपाय अपनाने की प्रेरणा लेंगे।

चुंबक के नये प्रयोग

तरह तरह के चिपकाने वाले सुंदर वाक्य, चित्र आदि के पीछे चुंबक लगा होता है जिससे उन्हें हम फ्रिज पर चिपका देते हैं अक्सर इस चुंबक में से वाक्य या चित्र निकलकर गिर पड़ता है या टूट जाता है ऐसा होते ही चुंबक अपना उपयोग खो बैठता है फिर उसे कूड़े में फेंक देने के सिवा अन्य कोई उपयोग नहीं रह जाता इस बार घर में पड़ा कोई बेकार चुंबक फेंकें नहीं उसे

अपनी प्रसाधन अलमारी या दराज में चिपकाएँ, वह आपकी भौंह साफ करने वाली चिमटी को सहेज कर रखेगा सुंदर लगेगा सो अलग आपकी जो भी सखी इसे देखेगी आपकी नकल करना नहीं भूलेगी तो फिर देर किस बात की अच्छे काम तुरंत शुरू कर देने चाहिये।

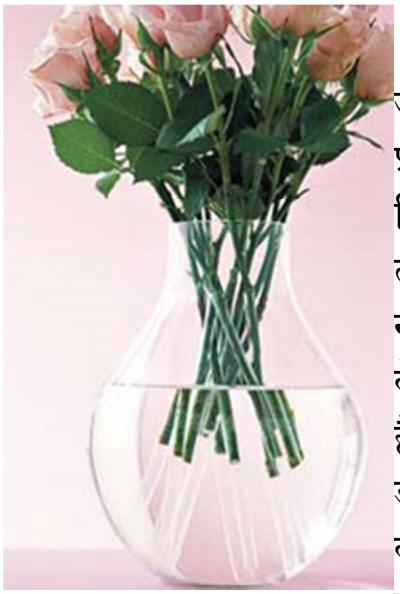

पुराने स्ट्रा का नया उपयोग

जब भी हम स्ट्रा का पैकेट लाते हैं कुछ स्ट्रा प्रयोग में आते हैं और बाकी किसी कबर्ड में रख दिये जाते हैं एक बार जब पैकेट खुल जाता है तब रखे हुए स्ट्रा स्वच्छता की दृष्टि से उपयोगी नहीं रह जाते अक्सर इन्हें फेंक दिया जाता है लेकिन ये फूलों की सजावट में अत्यंत उपयोगी हैं जब कभी फूलदान बड़ा हो और फूलों की डंडियाँ आपके पुष्प विन्यास के लिये पर्याप्त लंबी न मालूम हों तब उन्हें स्ट्रा में फँसाकर लंबा बनाया जा सकता है अगर किसी विशेष विन्यास के लिये कुछ डंडियों को लंबा और कुछ को छोटा रखना पड़ रहा है तो स्ट्रा की लंबाई को कैंची से काटकर मनोनुकूल बनाया जा सकता है यदि पहले कभी इस युक्ति का प्रयोग नहीं किया तो कर के देखें और पसंद आने पर नीचे टिप्पणी करना न भूलें।

पुराने बर्तन नई सजावट

घर में पुराने बर्तनों की कमी कभी नहीं होती केतलियाँ, भगौने और कढ़ाई जैसे धातु के बर्तन हों या शकोरे, कुल्हड़ हाँडियों जैसे मिट्टी के बर्तन जगह जगह से आकर घर में जमा होते रहते हैं

अक्सर हम इन्हें फेंकना नहीं चाहते लेकिन इन्हें रखने के लिये जगह की कमी होने लगती है इस समय आवश्यकता होती है इन्हें विवेक से सहेजने की इनको मनचाहे रंगों से रँग कर बगीचे के किसी कोने का कायाकल्प किया जा सकता है धातु के बर्तन सूरज की रोशनी में काफी गर्म हो जाते हैं इस बात का ध्यान रखते हुए उनमें केवल वही पौधे लगाए जाने चाहिये जो ज्यादा ताप सहन कर सकते हों।

चश्मे के केस के नये उपयोग

आजकल चश्मे के केस बहुत सुंदर आते हैं, मजबूत तो वे होते ही हैं जो लोग रोज चश्मा पहनते हैं उनके चश्मे के खराब होने तक शायद ही कभी उसे केस में रखने की नौबत आती है और केस बेचारा अपनी किस्मत को रोता दराजों में इधर उधर डोलता रहता है घर में जगह इतनी कम कि बेकार सामान रखा न जाय और केस इतना सुंदर कि उसे फेंका न जाय तो फिर क्या किया जाय? आवश्यकता है बस यह सोच निकालने की कि अपनी दिनचर्या का क्या जरूरी सामान इसमें रखा जा सकता है नेल फाइल, नेलकटर, छोटी कैंची, नेल बफर और एक छोटी नेलपालिश जिसका प्रयोग सबसे ज्यादा हो इसमें रखे जा सकते हैं जब जरूरत हो आपका सबसे जरूरी सामान सबसे कम समय में झट से हाजिर हो जाएगा कर के देखें।

फुलझरियों की सुरक्षित फुहार

दीपावली हो और फुलझरियाँ न जलें यह तो हो नहीं सकता, बच्चों की प्रिय फुलझरी यों तो एक सुरक्षित आतिशबाजी है लेकिन छोटे बच्चों के लिये खतरे की बात कभी भी हो सकती है इससे बचने के लिये कुछ फुलझरियों को एक समूह या कतार में प्ले डो में चित्रानुसार गाड़ दें फिर उन्हें जला दें जब ढेर सी फुलझड़ियाँ एक साथ जलेंगी तो इस रौनक का आनंद दुगना हो जाएगा इससे एक तो फुलझरी से दूरी रखी जा सकेगी जिससे धुएँ और जलने के डर से बचाव होगा, दूसरे जली हुई फुलझरियाँ इधर उधर फेंक दिये जाने से सूखे पत्तों में आग लग जाने या किसी के पैर के नीचे पड़कर पैर जल जाने की घटनाओं से बचा जा सकेगा फुलझरियों के जल जाने पर उन्हें सुरक्षित स्थान पर फेंके और फिर से प्ले डो में नई फुलझरियाँ जला दें।

बोतलों से बनी कंदीलें

दीपावली आने को है और जल्दी ही पुरानी बोतलें नरकचौदस के दिन या तो फेंक दी जाएँगी या फिर कबाड़ी को बेच दी जाएँगी अभी से तैयारी करें तो जैम अचार या चटनी की पुरानी बोतलों से ये सुंदर कंदीलें बनाई जा सकती हैं ये कंदीलें हैलोवीन के लिये हैं इसलिये इन पर डरावने चेहरे बने हैं लेकिन

दीपावली के लिये हमें कुछ शुभ चिह्न बनाने होंगे जैसे लक्ष्मी, गणेश, ॐ, या फिर स्वास्तिक बोतलों को रंगने के लिये पतले रंगीन कागज पर शुभचिह्न बनाकर बोतल के अंदर रख दें कागज टेढ़ा-मेढ़ा न हो जाए इसके लिये उसे सेलोटेप दो तीन स्थानों पर ठीक से चिपका दें बाद में बोतलों को एक शेल्फ पर रखकर बड़े बल्ब वाली माला इस प्रकार लगाएँ कि हर बोतल में एक एक बल्ब आ जाए देखें फिर दीपावली पर यह कलाकृति क्या आनंद बिखेरती है।

सोडा ड्रिंक की बोतल के ठप्पे

इस आकर्षक कलाकृति को बनाने के लिये दो लीटर के सोडा ड्रिंक की बोतल के तले को ठप्पे की तरह प्रयोग किया गया है मनपसंद आकार के पोस्टर शीट को लाकर पहले उस पर काले या गहरे फूले रंग से तने की आकृति बनाई गयी है और उसके सूख जाने पर फूलों को गुलाबी रंग के ठप्पों से बनाया गया है बहुत ही कम समय में तैयार इस कलाकृति को सुंदर से फ्रेम में जड़कर किसी भी दीवार की शोभा बनाया जा सकता है फूलों के रंग इच्छानुसार बदले भी जा सकते हैं

टायर से बना सुंदर स्टूल

साथ में रखा गया सुंदर स्टूल पुराने टायर से बनाया गया है जब भी कार के टायर बदले जाते हैं पुराने टायर को फेंककर पर्यावरण बिगाड़ने के अतिरिक्त हमारे पास कोई साधन नहीं होता लेकिन पुराने

टायर का यह रूप किसे नहीं लुभाएगा इस स्टूल को बनाने के लिये प्लाई बोर्ड के दो टुकड़ों को टायर के दोनो तरफ पेंच लगाकर कसा गया है इसके ऊपर मूँज की रस्सी को ग्ल्यू से चिपकाया गया है रस्सी को एक और बीच से बिलकुल छोटो गोले के रूप में लगाना शुरू करें और टायर पलट कर दूसरी और लगाते हुए बिलकुल छोटे गोले में समाप्त कर दें मूँज को चमक देने और उसे मुलायम बनाने के लिये ऊपर से वार्निश लगाई गई है।